[NO DATA]

by sai

1. चिर महान

(प्रस्तुत कविता में ईश्वर से लोक कल्याण और मानवता की सेवा करने की शक्ति प्राप्त करने के लिए प्रार्थना की गयी है।

जगजीवन में जो चिर महान

सौन्दर्यपूर्ण औ सत्य-प्राण

मैं उसका प्रेमी बनूँ नाथ

जो हो मानव के हित समान

जिससे जीवन में मिले शक्ति,

छूटे भय, संशय,अन्धभक्ति,

मैं वह प्रकाश बन सकूँ नाथ

मिल जायें जिसमें अखिल व्यक्ति,

पाकर प्रभु तुमसे अमर दान

करने मानव का परित्रण

ला सकूँ विश्व में एक बार

फिर से नवजीवन का विहान

- सुमित्रनन्दन पन्त

प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रनन्दन पन्त का जन्म सन् 1900 ई0 में अल्मोड़ा के निकट कौसानी ग्राम में हुआ था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा ग्राम की ही पाठशाला में हुई। असहयोग आन्दोलन के समय इन्होंने कालेज छोड़ दिया। इनकी साहित्यिक सेवा के लिए भारत सरकार ने इन्हें ‘पद्म-भूषण’ सम्मान से विभूशित किया। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं- ‘वीणा’, ‘ग्रन्थि’, ‘पल्लव’, ‘गुंजन’, ‘चिदम्बरा’ आदि। पन्त जी का निधन 28 दिसम्बर सन् 1977 ई0 को हुआ।

शब्दार्थ-

जगजीवन=संसार के लोगों के जीवन में। सत्यप्राण=जिसका हृदय सत्य से भरा हो। मानव के हित समान=जो समान रूप से मनुष्य की भलाई करने वाला हो। अन्धभक्ति=बिना सोचे

समझे किसी के प्रति निश्ठा का भाव रखना। अखिल=सम्पूर्ण, सारा। परित्रण=पूर्ण रक्ष। विहान=प्रात:काल, भोर।

प्रश्न-अभ्यास

कविता से

1.इस कविता में 'सत्यप्राण' शब्द अच्छे गुण का सूचक है और 'भय' शब्द दुर्गुण

अर्थात् अच्छे गुण का सूचक नहीं है। इसी प्रकार कविता को पढ़कर इसमें आये अच्छे गुण

वाले शब्दों और दुर्गुण वाले शब्दों की सूची बनाइए, जैसे -

अच्छे गुण वाले शब्द: सत्यप्राण, ...

दुर्गुण वाले शब्द: भय, ...

2.कवि विश्व में नवजीवन का विहान क्यों लाना चाहता है ?

3.इस कविता का शीर्शक 'चिर महान' है। आपको इस कविता का कोई और शीर्शक देना हो तो क्या शीर्शक देना चाहेंगे? उपयुक्त शीर्शक लिखिए।

4.(क)निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए-

1.जगजीवन में जो चिर महान

सौन्दर्यपूर्ण औ सत्य-प्राण।

2. जिससे जीवन में मिले शक्ति

छूटे भय, संशय, अन्धभक्ति।

(ख) नीचे ‘क’ वर्ग में दी गयी पंक्तियों से सम्बन्धित कुछ पंक्तियाँ ‘ख’ वर्ग में दी गयी हैं। किन्तु वे क्रम से नहीं हैं, उन्हें ‘क’ वर्ग की सम्बन्धित पंक्तियों के नीचे लिखिए-

‘क’‘ख’

1. मैं उसका प्रेमी बनूँ नाथ मिल जायें जिसमें अखिल व्यक्ति

2. मैं वह प्रकाश बन सकूँ नाथफिर से नवजीवन का विहान

3. ला सकूँ विश्व में एक बार जो हो मानव के हित समान

विचार और कल्पना

अगर आपको प्रभु से मानव के कल्याण का वरदान मिल जाये तो आप संसार में मानव कल्याण के लिए क्या-क्या करेंगे ?

कुछ करने को

1.इस कविता को कक्ष मंे लय के साथ सामूहिक गान कीजिए।

2.जलते हुए दीपक का चित्र बनाइए।

भाषा की बात

1.चिर शब्द का अर्थ है ‘सदैव’, यह महान के पूर्व विशेशण के रूप में जुड़ा है। इसी प्रकार ‘चिर’ विशेशण लगाकर तीन नये शब्द बनाइए, जैसे- चिर नवीन, ...।

2. इस कविता की पंक्तियों के अन्त में कहीं समान तुक वाले शब्द हैं, कहीं बिना तुक वाले शब्द हंै, फिर भी कविता की सुन्दरता बनी हुई है। ऐसे शब्दों को चुनकर लिखिए-

समान ध्वनिअसमान ध्वनि

शक्ति-भक्तिबार-विहान

इसे भी जानें

सन् 1968 ई0 में पंत जी को उनकी कृति ‘चिदम्बरा’ के लिए देश का सर्वोच्च साहित्य पुरस्कार ‘भारतीय ज्ञानपीठ’ प्रदान किया गया।

यह पुरस्कार भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा देश की मान्यता प्राप्त किसी भी भारतीय भाषा में प्रतिश्ठित साहित्यकार द्वारा किये गये उत्कृश्ट योगदान हेतु दिया जाता है। इस पुरस्कार की स्थापना सन् 1965 ई0 में हुई। पुरस्कार की राशि पाँच लाख रुपये है।

2. छोटा जादूगर

(प्रस्तुत कहानी 'छोटा जादूगर' में बालक की मातृभक्ति, उसकी व्यवहार कुशलता तथा कठिनाइयों से जूझने की क्षमता का सुन्दर चित्रण किया गया है।)

कार्निवाल के मैदान में बिजली जगमगा रही थी। हँसी और विनोद का कलनाद गूँज रहा था। मैं खड़ा था उस छोटे फुहारे के पास, जहाँ एक लड़का चुपचाप शरबत पीने वालों को देख रहा था। उसके गले में फटे कुरते के ऊपर से एक मोटी-सी सूत की रस्सी पड़ी थी और जेब में कुछ ताश के पत्ते थे। उसके मँुह पर गम्भीर विशाद के साथ धैर्य की रेखा थी। मैं उसकी ओर न जाने क्यों आकर्शित हुआ। उसके अभाव में भी सम्पूर्णता थी। मैंने पूछा, 'क्यों जी, तुमने इसमें क्या देखा?'

'मैंने सब देखा है! यहाँ चूड़ी फेंकते हैं। खिलौने पर निशाना लगाते हैं। तीर से नम्बर छेदते हैं। मुझे तो खिलौनों पर निशाना अच्छा मालूम हुआ। जादूगर तो बिल्कुल निकम्मा है। उससे अच्छा तो ताश का खेल मैं ही दिखा सकता हूँ।' उसने बड़े विश्वास से कहा। उसकी वाणी में कहीं बनावट न थी।

मैंने पूछा, 'और उस पर्दे में क्या है? वहाँ तुम गये थे?'

'नहीं, वहाँ मैं न जा सका। टिकट लगता है।'

मैंने कहा, 'तो चलो, मैं वहाँ पर तुमको लिवा चलूँ।'

मैंने मन ही मन कहा, 'भाई आज के तुम्हीं मित्र रहे।'

उसने कहा, 'वहाँ जाकर क्या कीजिएगा। चलिए, निशाना लगाया जाय।'

मैंने उससे सहमत होकर कहा, 'तो फिर चलो, पहले शरबत पी लिया जाय।' उसने स्वीकार-सूचक सिर हिला दिया।

मनुष्यों की भीड़ से जाड़े की सन्ध्या भी वहाँ गरम हो रही थी। हम दोनों शरबत पी कर निशाना लगाने चले। राह में ही उससे पूछा, 'तुम्हारे और कौन हैं?'

'माँ और बाबू जी।'

'उन्होंने तुमको वहाँ जाने के लिए मना नहीं किया?'

'बाबूजी जेल में हंै।'

'क्यों?'

'देश के लिए', वह गर्व से बोला।

'और तुम्हारी माँ?'

'वह बीमार है।'

‘और तुम तमाशा देख रहे हो?’

उसके मुख पर तिरस्कार की हँसी फूट पड़ी। उसने कहा, ‘तमाशा देखने नहीं निकला हूँ। कुछ पैसे ले जाऊँगा, तो माँ को पथ्य दूँगा। मुझे शरबत न पिलाकर, आपने मेरा खेल देखकर मुझे कुछ दे दिया होता, तो मुझे अधिक प्रसन्नता होती।’

मैं आश्चर्य से उस तेरह-चैदह वर्ष के लड़के को देखने लगा।

‘हाँ, मैं सच कहता हूँ बाबूजी! माँ जी बीमार हैं, इसीलिए मैं नहीं गया।’

‘कहाँ?’

‘जेल में। जब लोग खेल-तमाशा देखते ही हैं, तो मैं क्यों न दिखाकर माँ की सेवा करूँ और अपना पेट भी भरूँ।’

मैंने दीर्घ निःश्वास लिया। चारों ओर बिजली के लट्टू नाच रहे थे। मैं व्यग्र हो उठा। मैंने उससे कहा, ‘अच्छा चलो, निशाना लगाया जाय।’

हम दोनों उस जगह पर पहुँचे, जहाँ खिलौनों को गेंद से गिराया जाता था। मंैने बारह टिकट खरीद कर उस लड़के को दिये।

वह निकला पक्का निशानेबाज। उसकी कोई गेंद खाली नहीं गयी। देखने वाले दंग रह गये। उसने बारह खिलौनों को बटोर लिया, लेकिन उठाता कैसे। कुछ मेरे रूमाल में, कुछ जेब में रख लिये गये।

लड़के ने कहा, ‘बाबूजी, आपको तमाशा दिखाऊँगा। बाहर आइए, मैं चलता हूँ।’ वह नौ-दो-ग्यारह हो गया। मैंने मन-ही-मन कहा, ‘इतनी जल्दी आँख बदल गयी।’

मैं घूमकर पान की दुकान पर आ गया। पान खाकर वहीं बड़ी देर तक इधर-उधर टहलता, देखता रहा। झूले के पास लोगों का ऊपर-नीचे आना देखने लगा। अकस्मात् किसी ने ऊपर हिंडोले से पुकारा- 'बाबूजी।'

मैंने पूछा- 'कौन?'

''मैं हूँ छोटा जादूगर।"

कलकत्ता(कोलकाता) के सुरम्य वनस्पति उद्यान में लाल कमलिनी से भरी हुई एक छोटी-सी झील के किनारे घने वृक्षों की छाया में अपनी मंडली के साथ बैठा हुआ मैं जलपान कर रहा था। बातें हो रही थीं। इतने में वही छोटा जादूगर दिखायी पड़ा। हाथ में चारखाने की खादी का झोला, साफ जाँघिया और आधी बाँहों का कुरता, सिर पर मैला रूमाल सूत की रस्सी से बँधा था। मस्तानी चाल से झूमता हुआ कहने लगा-- 'बाबूजी, नमस्ते। आज कहिए तो खेल दिखाऊँ।'

'नहीं जी, अभी हम लोग जलपान कर रहे हैं।'

'नहीं जी,' मैं क्रोध में कुछ और कहने जा रहा था, तभी श्रीमती ने कहा, 'दिखलाओ जी, तुम तो अच्छे आये। भला कुछ मन तो बहले।' मैं चुप हो गया। श्रीमती की वाणी में वह माँ

की-सी मिठास थी, जिसके सामने किसी भी लड़के को रोका नहीं जा सकता। उसने खेल आरम्भ किया।

उस दिन कार्निवाल के सब खिलौने उसके ख्ोल में अपना अभिनय करने लगे। भालू मनाने लगा। बिल्ली रूठने लगी, बन्दर घुड़कने लगा। गुडिया का ब्याह हुआ। गुड्डा वर काना निकला। लड़के की वाचालता से ही अभिनय हो रहा था। हँसते-हँसते लोट-पोट हो गये।

मैं सोच रहा था, बालक को आवष्यकता ने कितना शीघ्र चतुर बना दिया, यही तो संसार है।

ताश के सब पत्ते लाल हो गये, फिर सब काले हो गये। गले की सूत की डोरी टुकड़े-टुकड़े होकर मुड़ गयी। लट्टू अपने आप नाच रहे थे। मैंने कहा, ‘अब हो चुका। अपना खेल बटोर लो, हम लोग भी अब जायेंगे।’

श्रीमती जी ने धीरे से उसे एक रुपया दे दिया। वह उछल पड़ा। मंैने कहा, ‘लड़के।’

‘छोटा जादूगर कहिए, यह मेरा नाम है। इसी से मेरी जीविका है।’

मैं कुछ बोलना चाहता था कि श्रीमती ने कहा, ‘अच्छा तुम इस रुपए से क्या करोगे?’

‘पहले भरपेट पकौड़ी खाऊँगा। फिर एक सूती कम्बल लूँगा।’ मेरा क्रोध अब लौट आया। मैं अपने पर बहुत क्रुद्ध होकर सोचने लगा, ‘और, कितना स्वार्थी है तू।’ उसके एक रुपया पाने पर मैं ईश्र्या करने लगा था न।

वह नमस्कार करके चला गया। हम लोग लता-कुंज देखने के लिए चल दिये।

उस छोटे से बनावटी जंगल में सन्ध्या साँय-साँय करने लगी थी। अस्ताचलगामी सूर्य की अन्तिम किरण वृक्षों की पत्तियों से विदाई ले रही थी। शान्त वातावरण था। हम लोग धीरे-धीरे मोटर से हावड़ा की ओर जा रहे थे।

रह-रहकर छोटा जादूगर स्मरण हो आता था। सचमुच वह एक झोपड़ी के पास कम्बल कन्धे पर डाले खड़ा था। मैंने मोटर रोककर उससे पूछा, 'तुम यहाँ कहाँ?'

'मेरी माँ यहीं है न। अब उसे अस्पताल वालों ने निकाल दिया है।' मैं उतर गया। उस झोपड़ी में देखा, तो एक स्त्री चीथड़ों से लदी हुई काँप रही थी।

छोटे जादूगर ने कम्बल ऊपर से डालकर उसके शरीर से चिपटते हुए कहा, 'माँ!' मेरी आँखों से आँसू निकल पड़े।

बड़े दिन की छुट्टी बीत चली थी। मुझे अपने कार्यालय में समय से पहुँचना था। कलकत्ते (कोलकाता) से मन ऊब गया था फिर भी चलते-चलते एक बार उद्यान को देखने की इच्छा हुई। साथ ही साथ जादूगर भी दिखायी पड़ जाता, तो और भी ....। मैं उस दिन अकेले ही चल पड़ा। जल्दी लौट आना था।

दस बज चुका था। मैंने देखा कि निर्मल धूप में सड़क के किनारे एक कपड़े पर छोटे जादूगर का रंगमंच सजा था। मैं मोटर रोक कर उतर पड़ा। वहाँ बिल्ली रूठ रही थी। भालू मनाने चला था, ब्याह की तैयारी थी, पर वह सब होते हुए भी जादूगर की वाणी में वह प्रसन्नता नहीं थी। जब वह औरों को हँसाने की चेश्टा कर रहा था, तब जैसे वह स्वयं काँप जाता था। मानों उसके रोएँ रो रहे थे। मैं आश्चर्य से देख रहा था। खेल हो जाने पर पैसे बटोर कर उसने भीड़ में मुझे देखा। वह जैसे क्षण भर के लिए स्फूर्तिमान हो गया। मैंने उसकी पीठ थपथपाते हुए पूछा, 'आज तुम्हारा खेल जमा क्यों नहीं?'

'माँ ने कहा है कि आज तुरन्त चले आना। मेरी घड़ी समीप है।' अविचल भाव से उसने कहा।

”तब भी तुम खेल दिखलाने चले आये?“ मैंने कुछ क्रोध से कहा। मनुष्य के सुख-दुख की माप अपना ही साधन होता है। उसी के अनुपात से वह तुलना करता है।

उसके मुँह पर वही परिचित तिरस्कार की रेखा फूट पड़ी। उसने कहा, ”क्यों न आता।“

और कुछ अधिक कहने में जैसे वह अपमान का अनुभव कर रहा था।

क्षण भर में मुझे अपनी भूल मालूम हो गयी। उसके झोले को गाड़ी में फेंक कर उसे भी बैठाते हुए मैंने कहा, ‘जल्दी करो।’ मोटर वाला मेरे बताये पथ पर चल पड़ा।

कुछ ही मिनटों में मैं झोपड़े के पास पहुँचा। जादूगर दौड़ कर झोपड़े में ‘माँ-माँ’ पुकारते घुसा। मैं पीछे था, किन्तु स्त्री के मुँह से ‘बे....... निकल कर रह गया, उसके दुर्बल हाथ उठकर गिर गये। जादूगर उससे लिपटा रो रहा था। मैं स्तब्ध था। उस उज्ज्वल धूप में समग्र संसार जैसे जादू-सा चारों ओर नृत्य करने लगा।

- जयशंकर प्रसाद

जयशंकर प्रसाद का जन्म सन् 1889 ई0 में वाराणसी में हुआ था। प्रसाद जी बहुमुखी प्रतिभा रखते थे। वे एक महान कवि, सफल नाटककार, उपन्यासकार और कुशल कहानीकार थे। ‘इन्द्रजाल’,

‘आँधी’ आदि उनके कहानी संग्रह हंै। ‘स्कन्दगुप्त’, ‘चन्द्रगुप्त’, ‘धु्रवस्वामिनी’ आदि उनके प्रमुख नाटक हैं। उनका महाकाव्य ‘कामायनी’ आधुनिक युग की सर्वश्रेश्ठ रचना है। उनका निधन नवम्बर सन् 1937 ई0 में हुआ था।

शब्दार्थ-

कार्निवाल=पश्चिमी देशों में मनाया जाने वाला एक प्रकार का मेला। कलनाद=मीठी आवाज। विशाद=दु:ख, उदासी। अभाव=कमी। तिरस्कार=अनादर, उपेक्ष। पथ्य=रोगी को दिया जाने वाला आहार। नि:श्वास=लम्बी साँस (दु:ख सूचक)। नौ दो ग्यारह होना=भाग जाना। सुरम्य=मनोहारी। जीविका=जीवन यापन का साधन, रोजी। अस्ताचलगामी=डूबता हुआ (सूर्य)। स्फूर्तिमान=उत्साहित, चुस्त। घड़ी समीप होना=(मृत्यु का) समय निकट होना। अविचल=अचल, अडिग। स्तब्ध=भौचक्का, गतिहीन।

प्रश्न-अभ्यास

कहानी से

1.कहानी का दूसरा चित्र देखकर बताइए कि निम्नलिखित में से छोटे जादूगर के पास

कितने खिलौने थे-

(क) दो (ख) तीन (ग) चार (घ) छह

2. खेल दिखाते समय छोटे जादूगर का कौन-सा खिलौना क्या अभिनय कर रहा था? समूह (ख) से छाँटकर समूह (क) से मिलाकर लिखिए-

‘क’ समूह‘ख’ समूह

भालूघुड़कना

बन्दर ब्याह होना

गुड्डामनाना

बिल्लीरूठना

गुडियाकाना होना

3.छोटे जादूगर को किन परिस्थितियों ने इतना चतुर बना दिया था?

(क)माँ की बीमारी और गरीबी ने।(ख)जादू के प्रति आकर्शण ने।

(ग)काम करने की इच्छा ने।(घ)बेकारी ने।

4. जादूगर की माँ और पिता किन परिस्थितियों में थे ?

5. निम्नलिखित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए-

(क)उसके भाव में सम्पूर्णता थी।

(ख)बालक को आवष्यकता ने कितना चतुर बना दिया?

(ग)मनुष्य के सुख-दुःख का माप अपना ही साधन होता है। उसी के अनुपात में वह तुलना करता है।

6.‘उसके मुँह पर गम्भीर विशाद के साथ धैर्य की रेखा थी।’ लेखक द्वारा लड़के (छोटा जादूगर) के विषय में यहाँ एक टिप्पणी है। लेखक ने लड़के के विषय में अन्य जो टिप्पणियाँ की हैं, उन्हें छाँटकर लिखिए।

7.लेखक द्वारा की गयी छोटे जादूगर की वेश-भूशा का वर्णन कीजिए।

विचार और कल्पना

कल्पना कीजिए कि आप किसी सुरम्य उद्यान में बैठे हुए हैं। वहाँ सुन्दर फूल खिले हैं,चिड़ियाँ चहचहा रही हैं, छोटी झील कमलिनी से भरी हुई है। इस मनोहारी दृष्य का अपने शब्दों में वर्णन कीजिए।

कुछ करने को

1. जादू दिखाना एक विशेश कला होती है। जादूगर अपने हाथ की सफाई से इस कला का

प्रदर्शन करता है। यदि कभी आपने जादूगर का खेल देखा होगा तो ध्यान कीजिए, अपना

जादू दिखाते समय वह आपका ध्यान दूसरी ओर लगाये रहता है। पता लगाइए जादू और

विज्ञान में क्या सम्बन्ध है।

2.'छोटा जादूगर' एक गरीब परिवार के ऐसे बच्चे की कहानी है जो अति कर्तव्य परायण है।

आपके घर/मुहल्ले/गाँव के आस-पास ऐसे बच्चे रहते होंगे। उनसे बातचीत करके उनके बारे

में एक कहानी लिखिए।

भाषा की बात

1.निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

नौ दो ग्यारह होना, आँख बदल जाना, घड़ी समीप होना, साँय-साँय करना।

2.निम्नलिखित शब्दों के समानार्थक शब्द बताइए-

विशाद, निनाद, उद्यान, जेल, निर्मल, किरण।

3.निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित पदों के कारक बताइए-

(क)कार्निवाल के मैदान में बिजली जगमगा रही थी। (ख)तीर से अन्दर छेदते हैं।

(ग)उस पर्दे में क्या है?(घ)उसने खेल आरम्भ किया।

4.निम्नलिखित वाक्यों में विधानवाचक, निशेधवाचक, प्रश्नवाचक, आदेशबोधक, इच्छावाचक वाक्यों को अलग-अलग छाँटिए-

(क)और तुम तमाशा देख रहे हो?(ख)नहीं, वहाँ मैं नहीं जा सका।

(ग)जल्दी चलो।(घ)बन्दर घुड़कने लगा।

(ङ)चलिए निशाना लगाया जाय।

5.उसके अभाव में भी सम्पूर्णता थी। वाक्य में रेखांकित शब्द एक दूसरे से विपरीत अर्थ रखते

हैं। नीचे लिखे वाक्यों को उदाहरण के अनुसार पूरा कीजिए।

(क)वह अपमान में.......... का अनुभव कर रहा था।

(ख)मैं उसके आगे धनी होकर भी .... बन गया था।

(ग)उसकी कठोरता में भी .... झलक रही थी।

(घ)सुनीता राधा से कनिश्ठ है लेकिन लता से .... है।

इसे भी जानें

जयशंकर प्रसाद ऐसे साहित्यकार थे, जिन्होंने कविता के साथ-साथ गद्य की लगभग सभी विधाओं में रचनाएँ कीं।

3. आप भले तो जग भला

(इस पाठ में लेखक ने कहा है कि हमें केवल अपने से ही संतुष्ट नहीं होना चाहिए। हमें दूसरों के विचारों का भी सम्मान करना चाहिए। यदि हम दूसरों के साथ अच्छा व्यवहार करेंगे तो वे भी हमारे साथ अच्छा व्यवहार करेंगे।)

एक विशाल काँच के महल में न जाने किधर से एक भटका हुआ कुत्ता घुस गया। हजारों काँचों के टुकड़ों में अपनी शक्ल देखकर वह चैंका। उसने जिधर नजर डाली, उधर ही हजारों कुत्ते दिखायी दिये। वह समझा कि ये सब उस पर टूट पड़ेंगे और उसे मार डालेंगे। अपनी शान दिखाने के लिए वह भौंकने लगा, उसे सभी कुत्ते भौंकते हुए दिखायी पड़े। उसकी आवाज की ही प्रतिध्वनि उसके कानों में जोर-जोर से आती। उसका दिल धड़कने लगा। वह और जोर से भौंका। सब कुत्ते भी अधिक जोर से भौंकते दिखायी दिये। आखिर वह उन कुत्तों पर झपटा, वे भी उस पर झपटे। बेचारा जोर-जोर से उछला, कूदा, भौंका और चिल्लाया। अन्त में गश खाकर गिर पड़ा।

कुछ देर बाद उसी महल में एक दूसरा कुत्ता आया। उसको भी हजारों कुत्ते दिखायी दिये। वह डरा नहीं, प्यार से उसने अपनी दुम हिलायी। सभी कुत्तों की दुम हिलती दिखायी दी। वह खूब खुश हुआ और कुत्तों की ओर अपनी पूँछ हिलाता बढ़ा। सभी कुत्ते उसकी ओर दुम हिलाते बढ़े। वह प्रसन्नता से उछला-कूदा, अपनी ही छाया से खेला, खुश हुआ और फिर पूँछ हिलाता बाहर चला गया।

जब मैं अपने एक मित्र को हमेशा परेशान, नाराज और चिड़चिड़ाते देखता हूँ तब इसी किस्से का स्मरण हो जाता है। मैं उनकी मिसाल भौंकने वाले कुत्ते से नहीं देना चाहता। यह

तो बड़ी अशिश्टता होगी। पर इस कहानी से वे चाहें तो कुछ सबक जरूर सीख सकते हैं।

दुनिया काँच के महल जैसी है। अपने स्वभाव की छाया ही उस पर पड़ती है। ‘आप भले तो जग भला’,‘आप बुरे तो जग बुरा’। अगर आप प्रसन्नचित्त रहते हैं, दूसरों के दोशों को न देखकर उनके गुणों की ही ओर ध्यान देते हैं तो दुनिया भी आपसे नम्रता और प्रेम का बर्ताव करेगी। अगर आप हमेशा लोगों के ऐबों की ओर देखते हैं, उन्हें अपना शत्रु समझते हैं और उनकी ओर भौंका करते हैं तो फिर वे क्यों न आपकी ओर गुस्से से दौड़ेंगे? अंगे्रजी में एक कहावत है कि अगर आप हँसेंगे तो दुनिया भी आपका साथ देगी, पर अगर आपको गुस्सा होना और रोना ही है तो दुनिया से दूर किसी जंगल में चले जाना ही हितकर होगा।

अमेरिका के मशहूर नेता अब्राहम लिंकन से किसी ने एक बार पूछा, ”आपकी सफलता का सबसे बड़ा रहस्य क्या है?“

उन्होंने जरा देर सोचकर उत्तर दिया, ”मैं दूसरों की अनावष्यक नुक्ताचीनी कर उनका दिल नहीं दुखाता।“

मेरे मित्र की यही खास गलती है। वे दूसरों का द्रष्टिकोण समझने की कोशिश नहीं करते। दूसरों के विचारों की, कामों की, भावनाओं की आलोचना करना ही अपना परम धर्म समझते हैं। उनका शायद यह ख्याल है कि ईश्वर ने उन्हें लोगों को सुधारने के लिए ही भेजा है। पर वे यह भूल जाते हैं कि शहद की एक बूँद ज्यादा मक्खियों को आकर्शित करती है, बजाय एक सेर जहर के।

दुनिया में पूर्ण कौन है? हरेक में कुछ न कुछ त्रुटियाँ रहती हैं। प्रत्येक व्यक्ति से गलतियाँ होती हैं। फिर एक-दूसरे को सुधारने की कोशिश करना अनुचित ही समझना चाहिए। जैसा ईसा ने कहा था, ”लोग दूसरों की आँखों का तिनका तो देखते हैं पर अपनी आँख के

शहतीर को नहीं देखते।“ दूसरों को सीख देना तो बहुत आसान काम है, अपने ही आदर्शों पर स्वयं अमल करना कठिन है। अगर हम अपने को ही सुधारने का प्रयत्न करें और दूसरों के अवगुणों पर टीका-टिप्पणी करना बन्द कर दें तो हमारे मित्र जैसा हमारा हाल कभी नहीं होगा।

इसी सिलसिले में एक बात और। आप तो दूसरों की नुक्ताचीनी नहीं करेंगे, ऐसी उम्मीद है, पर दूसरे ही अगर आपकी नुक्ताचीनी करना न छोड़ें तो? मेरे मित्र अपनी बुराई या आलोचना सुनकर आगबबूला हो जाते हैं, भले ही वह दुनिया की दिनभर बुराई करते रहें। पर आपके लिए तो ऐसे मौके पर दादू की पंक्तियाँ गुनगुना लेना बड़ा कारगर होगा:

निन्दक बाबा वीर हमारा, बिनहीं कौड़ी बहै बिचारा।

आपन डूबे और को तारे, ऐसा प्रीतम पार उतारे।।

अगर सचमुच कुछ त्रुटियाँ हैं, जिनकी ओर ‘निन्दक’ हमारा ध्यान खींचता है तो उन अवगुणों को दूर करना हम सभी का कर्तव्य हो जाता है। जिसने उनकी ओर ध्यान दिलाया उसका उपकार ही मानना चाहिए। एक दिन एक सज्जन से कुछ गलती हो गयी। हमारे मित्र तुरन्त बिगड़कर बोले, ”देखिए महाशय यह आपकी सरासर गलती है, आइन्दा ऐसा करेंगे तो ठीक नहीं होगा।“ बेचारे महाशय जी बड़े दु:खी हुए। उनका अपमान हो गया। मन में क्रोध जाग्रत हुआ और वे बिना कुछ उत्तर दिये ही उठकर चले गये। दूसरे दिन मैंने उन महाशय जी से एकान्त में कहा, ”देखिए, गलती तो सभी से होती है। ऐसी गलती मैं भी कर चुका हूँ। दुखी होने का कोई कारण नहीं। आप तो बड़े समझदार हैं। कोशिश करें तो यह क्या, बड़ी से बड़ी गलतियाँ सुधारी जा सकती हैं। ठीक है न?“

उनकी आँखों में आँसू छलछला आये। बड़े प्रेम से बोले, ”जी हाँ, मैं अपनी गलती मानता हूँ। आगे भला मैं वही गलती क्यों करने लगा! पर कोई मुहब्बत से पेश आये तब न! आदमी प्रेम का भूखा रहता है।“

जब सरदार पृथ्वीसिंह ने हिंसा का मार्ग त्यागकर अपने को बापू के सामने अर्पण कर दिया तब बापू को बहुत खुशी और सन्तोश हुआ। पर बापू जहाँ प्रेम और सहानुभूति की मूर्ति थे, वहाँ बड़े परीक्षक भी थे। कुछ दिनों बाद उन्होंने पृथ्वीसिंह से कहा, ”सरदार साहब, अगर आप सेवाग्राम में आकर मेरे आश्रम में रह सकें तभी मैं समझूँगा कि आपने अहिंसा का पाठ सचमुच सीख लिया है।“

पृथ्वीसिंह जरा चैंककर बोले, ”आपका क्या मतलब बापूजी?“

”भाई, मेरा आश्रम तो एक प्रयोगशाला जैसा ही है। जिन लोगों की कहीं नहीं बनती, अक्सर वे मेरे पास आ जाते हैं। उन सबको एक-साथ रखने में मैं सीमेंट का काम करता हूँ और वह सीमेंट मेरी अहिंसा ही है।“

”मैं समझ गया, बापूजी!“ पृथ्वीसिंह ने मुस्कराकर कहा। आगे की कहानी यहाँ कहने की जरूरत नहीं, पर इसमें बापू के प्रेममय व्यवहार की एक झलक मिल जाती है। उन्होंने अपने प्रेम और सहानुभूति से कितने ही व्यक्तियों को अपनी ओर खींचा था। बापू कड़ी-से-कड़ी आलोचना कर सकते थे और करते भी थे, पर हँसकर, मीठी चुटकियाँ लेकर, अपना प्रेम दरसाकर।

अमेरिका के मशहूर लेखक इमर्सन की एक घटना याद आती है। उन्हें गायें पालने का शौक था। इसलिए गायें और नन्हें बछड़े उनके मकान के पास एक कुटी में रहते थे। एक बार जोर की बारिश आने वाली थी। सभी गायें तो झोपड़ी के अन्दर चली गयीं, पर एक बछड़ा बाहर

ही रह गया। इमर्सन और उनका लड़का दोनों मिलकर उस बछड़े को पकड़ कर खींचने लगे कि वह कुटी में चला आये पर ज्यों-ज्यों उन्होंने जोर से खींचना षुरू किया त्यों-त्यों वह बछड़ा भी सारी ताकत लगाकर पीछे हटने लगा। बेचारे इमर्सन बड़े परेशान हुए। इतने में उनकी बूढ़ी नौकरानी उधर से निकली। जैसे ही उसने यह तमाशा देखा, वह दौड़ी आयी अपना अँगूठा बछड़े के मुँह में प्यार से डालकर उसे झोपड़ी की तरफ ले जाने लगी। बछड़ा चुपचाप कुटी के अन्दर चला गया।

वह अनपढ़ नौकरानी किताबें और कविताएँ लिखना नहीं जानती थी, पर व्यवहार-कुशल अवष्य थी और जब जानवर भी प्रेम की भाषा समझते हैं तो फिर मनुष्य क्योंकर न समझेंगे?

कल हमारे मित्र का रसोइया बिना खबर दिये ही चला गया। बेचारा करता भी क्या! सुबह से शाम तक उसको महाशय की डाँट खानी पड़ती थी। ”तूने आज दाल बिलकुल बिगाड़ दी। उसमें नमक बहुत डाल दिया।“ ”अरे बेवकूफ तूने साग में नमक ही नहीं डाला।“ ”यह जली रोटी कौन खायेगा रे!“ आदि की झड़ी लगी रहती थी। जब कोई चीज जरा भी बिगड़ जाती तब तो उसे दिल खोलकर डँाटा जाता। पर अच्छा भोजन बनने पर कभी तारीफ के दो शब्द न बोले जाते। ”वाह! तारीफ कर देने से उसका दिमाग चढ़ जायेगा।“ मेरे मित्र कह देते। ठीक है! तो वह भी आदमी है। उसके भी दिल है। बेचारा कुछ रुपये का नौकर, यन्त्र नहीं बन सकता। तंग आकर भाग जाने के सिवा और क्या चारा था?

कहने का मतलब यह कि उनकी किसी से नहीं बनती-न मित्रों से, न आॅफिस के कर्मचारियों से और न घर के नौकरों से।

उस पर भी मजा यह है कि वे अपनी जिन्दगी और विचारों से पूरी तरह सन्तुश्ट हैं। वे मानते हैं कि उनका जीवन, आचार और विचार आदर्श है। दूसरे लोग जो उनका सम्मान नहीं करते, मूर्ख हैं।

ग्रीस के महान सन्त सुकरात ने एक बात बड़े पते की कही थी, ”जो मनुष्य मूर्ख है और जानता है कि वह मूर्ख है, वह ज्ञानी है; पर जो मूर्ख है और नहीं जानता कि वह मूर्ख है, वह सबसे बड़ा मूर्ख है।“

अच्छा हो, सुकरात के इस विचार को मेरे मित्र अपने कमरे में लिखकर टाँग लें। पर उनसे यह कहने का साहस कौन करे?

-श्रीमन्नारायण

शब्दार्थ-

प्रतिध्वनि = किसी वस्तु से टकराकर वापस आयी ध्वनि। गश खाना = मूचर्िछत होना। मिसाल = नमूना, नजीर, दृश्टान्त। सबक = शिक्षा, पाठ। बर्ताव = व्यवहार। ऐब=दोश, खोट, बुराई। नुक्ताचीनी = दोश निकालने का काम, छिद्रान्वेशण। खास = विशेष। शहतीर = पाटन के नीचे लगने वाली कड़ी। अमल = व्यवहार। दादू = भक्तिकालीन प्रसिद्ध कवि।

प्रश्न-अभ्यास

निबन्ध से

1.”आपकी सफलता का सबसे बड़ा रहस्य क्या है?“ इस प्रश्न का अब्राहम लिंकन ने क्या जवाब दिया?

2.गाँधी जी ने अपने आश्रम को प्रयोगशाला क्यों कहा है?

3.पाठ के शीर्शक ‘आप भले तो जग भला’ का क्या आशय है?

4.नीचे दी गयी पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए-

(क)दुनिया काँच के महल जैसी है, अपने स्वभाव की छाया ही उस पर पड़ती है।

(ख) अगर आप हँसेंगे तो दुनिया भी आपका साथ देगी।

(ग) शहद की एक बूँद ज्यादा मक्खियों को आकर्शित करती है, बजाय एक सेर जहर के।

(घ) लोग दूसरों की आँखों का तिनका तो देखते हैं पर अपनी आँख के शहतीर को नहीं देखते।

5.नीचे के प्रश्नों में उत्तर के रूप में चार विकल्प दिये गये हैं, विकल्प पर (ü) का चिह्न लगाइए-

(क)लोग आपसे प्रेम और नम्रता का बर्ताव करेंगे, जब आप-

1.हमेशा लोगों के ऐबों की ओर देखेंगे।

2.लोगों को अपना शत्रु समझेंगे।

3.लोगों की ओर गुस्से से दौड़ेंगे।

4.लोगों के दोश न देखकर उनके गुणों की ओर ध्यान देंगे।

(ख)बापू के किस गुण के कारण लोग उनकी ओर आकृश्ट होते थे-

1.आलोचना2.अनुशासन

3.कठोरता4.प्रेम और सहानुभूति

विचार और कल्पना

हम महापुरुषांे की वाणी और अपने से श्रेश्ठ जनों से प्रेरणा ग्रहण करते हैं, वे लोग जैसा कहते हैं वैसा ही करते हैं। ऐसे लोग हमें शीघ्र प्रभावित कर लेते हैं। आपके परिवार तथा विद्यालय के जिस व्यक्ति ने आपको विशेश रूप से प्रभावित किया हो, उसके गुणों, व्यवहार के विषय में संक्षेप में अपने विचार लिखिए।

कुछ करने को

1.पाठ में अनेक महापुरुषों जैसे- अब्राहम लिंकन, महात्मा गाँधी, ईसामसीह, सुकरात आदि द्वारा कही गयी बातों का उपयोग दृश्टान्तों के रूप में किया गया है। अन्य महापुरुषों ने भी विभिन्न विषयों पर इस तरह की बातें कहीं हैं। उनका संकलन कीजिए और उन्हें कागज पर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखकर कक्ष की दीवारों पर चिपकाइए।

2.इस पाठ का शीर्शक ”आप भले तो जग भला“ है। यह एक लोकोक्ति है। इस तरह की अनेक लोकोक्तियाँ प्रचलित हैं। किन्हीं पाँच लोकोक्तियों का संकलन कीजिए और उनका भाव अपने शब्दों में लिखिए।

भाषा की बात

1.नीचे दिये गये मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करते हुए अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

टूट पड़ना, दुम हिलाना, दिल दुखाना, नुक्ताचीनी करना, आगबबूला होना, चुटकी लेना, दिमाग चढ़ना।

2.(क)आप तो बड़े समझदार हैं।   -साधारण वाक्य

(ख) शायद कुछ लोगों का ख्याल है कि ईश्वर ने उन्हें लोगों को सुधारने के लिए भेजा है। -मिश्र वाक्य

(ग) वह प्रसन्नता से उछला कूदा, अपनी ही छाया से खेला, खुश हुआ और फिर पूँछ हिलाता बाहर चला गया।-संयुक्त वाक्य

ऊपर तीन तरह के वाक्य दिये गये हैं- साधारण, मिश्र और संयुक्त। पाठ में आये हुए इन तीनों प्रकार के कम से कम दो-दो वाक्यों को छाँटकर लिखिए।

3.'यह तो बड़ी अशिश्टता होगी।' इस वाक्य में 'अशिश्टता' शब्द भाववाचक संज्ञा है। भाववाचक संज्ञा शब्दों के अन्त में ता, पन, पा, हट, वट, त्व, आस प्रत्यय जुड़े रहते हैं। पाठ में आये हुए अन्य भाववाचक संज्ञा शब्दों को छाँटकर लिखिए।

इसे भी जानें

''भाषा शब्द संस्कृत की 'भाश्' धातु से बना है जिसका अर्थ है-बोलना और कहना।''

4. नीति के दोहे और भक्ति के पद

(नीचे दिये गये कबीर और रहीम के दोहांे में आचार-विचार सम्बन्धी जीवन-मूल्यों का वर्णन है।)

(क) कबीरदास

दुर्बल को न सताइए, जाकी मोटी हाय।

मुई खाल की स्वाँस सो, सार भसम ह्वै-जाय।। 1

मधुर बचन है औषधि, कटुक बचन है तीर।

स्रवन द्वार ह्वै संचरे, सालै सकल शरीर।। 2

बृच्छ कबहुँ नहिं फल भखै, नदी न संचै नीर।

परमारथ के कारने, साधुन धरा शरीर।। 3

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय।

जो दिल खोजा आपनो, मुझ-सा बुरा न कोय।। 4

कबीरदास जी का जन्म काशी में सन् 1398 ई0 के लगभग हुआ था। भक्तिकाल के निर्गुण धारा के सन्त कवियों में उनका विशिष्ट स्थान है। रामानन्द कबीर के गुरु माने जाते हैं। उन्होंने भक्ति विषयक रचनाओं के साथ ही समाज–सुधार की कविताएँ भी लिखीं। इनकी रचनाओं का संग्रह 'बीजक' है। इसके तीन भाग हैं: **'साखी'**, **'सबद'**, **'रमैनी'**। कबीरदास की मृत्यु सन् 1518 ई0 के लगभग मगहर में हुई।

(ख) रहीम

वे रहीम नर धन्य हैं, पर उपकारी अंग।

बाटनवारे को लगे, ज्यों मेहँदी को रंग।। 5

दीन सबन को लखत है, दीनहिं लखै न कोय।

जो रहीम दीनहिं लखै, दीन-बन्धु सम होय।। 6

रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।

पानी गये न ऊबरै, मोती मानुस चून।। 7

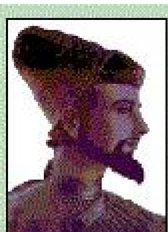

रहीम का जन्म सन् 1556 ई0 के लगभग हुआ था। इनका पूरा नाम अब्दुर्रहीम खानखाना था। अकबर के दरबार के नवरत्नों में इन्हें स्थान प्राप्त था। ये अरबी, फारसी तथा संस्कृत भाषा के विद्वान थे। इनकी प्रमुख पुस्तकें हैं– **'रहीम सतसई'**, **'रास पंचाध्यायी'**, आदि। इनकी मृत्यु सन् 1626 ई0 में हुई।

भक्ति पदावली (प्रस्तुत पदों में मीरा ने श्रीकृष्ण के प्रति अपनी अनन्य भक्ति तथा उनके दर्शन की उत्कट लालसा प्रकट की है।) (ग) मीराबाई (1) दरस बिन दूखन लागे नैन। जबके तुम बिछुरे प्रभु मोरे, कबहुँ न पायो चैन। सबद सुनत मेरी छतिया काँपे, मीठे-मीठे बैन। कल

न परत हरि मग जोवत भई छमासी रैन। मीरा के प्रभु कब रे मिलोगे, दुख मेटन सुख दैन। (2) पायो जी म्हैं तो राम रतन धन पायो। वस्तु अमोलक दी मेरे सतगुरु, किरपा कर अपनायो। जनम-जनम की पूँजी पाई, जग में सभी खोवायो। खरचै नहिं कोई चोर न लेवै, दिन-दिन बढ़त सवायो। सत की नाव खेवटिया सतगुरु, भव-सागर तर आयो। मीरा के प्रभु गिरधर नागर, हरख-हरख जस गायो। -मीरा

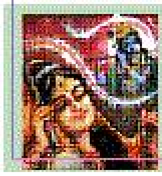

मीरा का जन्म सन् 1498 ई0 के लगभग राजस्थान के चोकड़ी ग्राम और विवाह उदयपुर के महाराणा कुमार भोज राज जी के साथ हुआ था। ये आरंभ से कृष्ण भक्ति में लीन रहा करती थीं। विवाह के उपरान्त बहुत कम समय में ही पति की मृत्यु हो गयी। मीरा ईश्वर की उपासना पति (स्वामी) भाव से करती थीं। मीरा द्वारा लिखित पुस्तकें हैं:– **'नरसी जी रो माहेरो'**, **'राग–गोविन्द'**, आदि। मीरा का निधन सन् 1556 ई0 के आस–पास माना जाता है।

शब्दार्थ -

औषधि = दवा। कटुक = कड़वा। सालै =बेधता है। भखै = खाता है। संचै = संग्रह करना। परमारथ = दूसरे की भलाई। सबद = शब्द, वचन। बैन = वाणी। कल = चैन, शांति। मग जोवत = रास्ता देखते-देखते अर्थात् इन्तजार करते-करते। खेवटिया = नाविक। गिरधर नागर = श्रीकृष्ण (गोवर्द्धन पर्वत को अपनी ऊँगली पर धारण करने के कारणकृष्ण को गिरिधर कहा जाता है) नागर = चतुर। हरख-हरख = प्रसन्न हो-होकर। जस = यश।

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1.नीचे कुछ वाक्य लिखे गये हैं। इनसे सम्बंधित दोहों को उसी क्रम में लिखिए -

(क)मधुर वाणी औशधि का काम करती है तथा कठोर वाणी तीर की तरह मन को बेध देती है।

(ख) साधु दूसरों के हित के लिए ही शरीर धारण करता है।

(ग) जो दीन जनों का हित देखता है, वह दीन-बन्धु के समान हो जाता है।

(घ)परोपकार करने वाले लोग प्रशंसनीय होते हैं।

(ङ)दूसरे लोगों में बुराई देखना ठीक नहीं।

2.निम्नांकित पंक्तियों के अर्थ स्पष्ट कीजिए -

(क)स्रवन द्वार ह्वै संचरे, सालै सकल शरीर।

(ख)पानी गये न ऊबरै, मोती मानुस चून।

(ग)बाटनवारे को लगे, ज्यों मेहँदी को रंग।

(घ)जो दिल खोजा आपनो, मुझ-सा बुरा न कोय।

(ङ)दीन सबन को लखत है, दीनहिं लखै न कोय।

3.मीरा के नेत्र किस कारण दु:ख का अनुभव कर रहे थे?

4.मीराबाई ने अमोलक वस्तु ‘राम रतन धन’ की कौन-कौन-सी विशेशताएँ बतायी हैं ?

5.निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए-

(क) कल न परत हरि मग जोवत भई छमासी रैन।

(ख) वस्तु अमोलक दी मेरे सतगुरु, किरपा कर अपनायो।

(ग) सत की नाव खेवटिया सतगुरु, भव-सागर तर आयो।

कुछ करने को

1.मीरा के अन्य पदों का संकलन कीजिए।

2.बाल अखबार में हर बार एक नीति परक वाक्य लिखिए और उसको अपने जीवन में भी उतारिए।

भाषा की बात

1.'स्रवन द्वार ह्वै संचरे, सालै सकल शरीर'- पंक्ति में 'स' वर्ण की आवृत्ति कई बार होने से कविता की सुन्दरता बढ़ गयी है। जहाँ एक वर्ण की आवृत्ति बार-बार होती है, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है। अनुप्रास अलंकार के कुछ अन्य उदाहरण पुस्तक से ढूँढ़कर लिखिए।

2.रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।

पानी गये न ऊबरै, मोती मानुस चून।।

उपर्युक्त दोहे में 'पानी' शब्द के तीन अर्थ हंै-

मोती के अर्थ में- कान्ति

मनुष्य के अर्थ में-स्वाभिमान

चूने के अर्थ में-जल

एक ही शब्द के कई अर्थ होने से यहाँ श्लेश अलंकार है। श्लेश अलंकार का एक और उदाहरण दीजिए।

3.पाठ में आये निम्नलिखित तद्भव शब्दों का तत्सम रूप लिखिए-

भसम,औषधि,सत, बृच्छ, मानुस, सबद, किरपा, हरख।

4.कुछ ऐसे शब्द होते हैं जिनके अलग-अलग अर्थ होते हैं, जैसे- ‘कल’ का अर्थ है चैन तथा बीता या आने वाला कल। निम्नलिखित शब्दों के दो-दो अर्थ लिखिए-

पट, दर,कर,जड़,गोली,सारंग।

इसे भी जानें

हिन्दी के नौ रत्न- कबीर, तुलसी, सूर, देव, भूशण, मतिराम, बिहारी, चन्दवरदाई और भारतेन्दु हरिश्चन्द्र माने जाते हैं।

5. मेरी माँ

(प्रस्तुत पाठ में अमर शहीद राम प्रसाद 'बिस्मिल' ने अपनी माँ के प्रति श्रद्धा-भक्ति व्यक्त की है।)

ग्यारह वर्ष की उम्र में माता जी विवाह कर शाहजहाँपुर आयी थीं। उस समय आप नितान्त अशिक्षित एक ग्रामीण कन्या के सदृश थीं। शाहजहाँपुर आने के थोड़े दिनों बाद ही दादी जी ने अपनी छोटी बहिन को बुला लिया। उन्हीं ने गृह-कार्य में माता जी को शिक्षा दी। थोड़े ही दिनों में माता जी ने सब गृह-कार्य को समझ लिया और भोजनादि का ठीक-ठीक प्रबन्ध करने लगीं। मेरे जन्म के पाँच या सात वर्ष बाद आपने हिन्दी पढ़ना आरम्भ किया। पढ़ने का शौक आपको खुद ही पैदा हुआ था। मोहल्ले की संग-सहेली जो घर पर आ जाती थीं, उन्हीं में जो कोई शिक्षित थीं, माता जी उनसे अक्षर-बोध करतीं। इसी प्रकार घर का सब काम कर चुकने के बाद जो कुछ समय मिल जाता उसमें पढ़ना-लिखना करतीं। परिश्रम के फल से थोड़े दिनों में ही वे देवनागरी पुस्तकों का अवलोकन करने लगीं। मेरी बहिनों को छोटी आयु में माता जी ही उन्हें शिक्षा दिया करती थीं। जबसे मैंने आर्यसमाज में प्रवेश किया, तब से माता जी से खूब वार्तालाप होता। उस समय की अपेक्ष अब आपके विचार भी कुछ उदार हो गये हैं यदि मुझे ऐसी माता न मिलतीं, तो मैं भी अति साधारण मनुष्य की भाँति संसार चक्र में फँसकर जीवन निर्वाह करता। शिक्षादि के अतिरिक्त क्रान्तिकारी जीवन में भी आपने मेरी वह सहायता की है, जो मेजिनी को उनकी माता ने की थी। यथा-समय मैं उन सारी बातों का उल्लेख करूँगा। माता जी का सबसे बड़ा आदेश मेरे लिए यही था कि किसी की प्राणहानि न हो। उनका कहना था कि अपने शत्रु को भी कभी प्राणदंड न देना। आपके इस आदेश की पूर्ति करने के लिए मुझे मजबूरन दो-एक बार अपनी प्रतिज्ञा

भंग भी करनी पड़ी थ। जन्मदात्रीजननी, इस जीवन में तो तुम्हारा ऋण-परिशोध करने के प्रयत्न करने का भी अवसर न मिला; इस जन्म में तो क्या यदि अनेक जन्मों में भी सारे जीवन प्रयत्न करूँ तो तुमसे उऋण नहीं हो सकता। जिस प्रेम तथा दृढ़ता के साथ तुमने इस तुच्छ जीवन का सुधार किया है, वह अवर्णनीय है। मुझे जीवन की प्रत्येक घटना का स्मरण है कि तुमने किस प्रकार अपनी दैवी वाणी का उपदेश करके मेरा सुधार किया है। तुम्हारी दया से ही मैं देश-सेवा में संलग्न हो सका। धार्मिक जीवन में भी तुम्हारे ही प्रोत्साहन ने सहायता दी। जो कुछ शिक्षा मैंने ग्रहण की उसका भी श्रेय तुम्हीं को है। जिस मनोहर रूप से तुम मुझे उपदेश करती थीं उसका स्मरण कर तुम्हारी स्वर्गीय मूर्ति का ध्यान आ जाता और मस्तक नत हो जाता है। तुम्हें यदि मुझे ताड़ना भी देनी हुई तो तुमने प्रेम-भरे शब्दों में यही कहा कि तुम्हें जो अच्छा लगे वह करो, किन्तु ऐसा करना ठीक नहीं इसका परिणाम अच्छा न होगा। जीवनदात्री! आत्मिक, धार्मिक तथा सामाजिक उन्नति में तुम्हीं मेरी सदैव सहायक रहीं। जन्म-जन्मान्तर परमात्मा ऐसी ही माता दें। यही इच्छा है। महान से महान संकट में भी तुमने मुझे अधीर न होने दिया। सदैव अपनी प्रेम भरी वाणी को सुनाते हुए मुझे सान्त्वना देती रहीं। तुम्हारी दया की छाया में मैंने अपने जीवन भर में कोई कष्ट न अनुभव किया। इस संसार में मेरी किसी भी भोग-विलास तथा ऐश्वर्य की इच्छा नहीं। केवल एक तृष्णा है। वह यह कि एक बार श्रद्धापूर्वक तुम्हारे चरणों की सेवा करके अपने जीवन को सफल बना लेता। किन्तु यह इच्छा पूर्ण होती नहीं दिखायी देती, और तुम्हें मेरी मृत्यु का दुखद संवाद सुनाया जायेगा। माँ मुझे विश्वास है, तुम यह समझकर धैर्य धारण करोगी कि तुम्हारापुत्र माताओं की माता- भारतमाता की सेवा में अपने जीवन को बलिवेदी की भेंट कर गया और उसने तुम्हारे कुल को कलंकित न किया; अपनी प्रतिज्ञा में दृढ़ रहा। जब स्वाधीन भारत का इतिहास लिखा जायेगा, तो उसके किसी पृश्ठ पर

उज्ज्वल अक्षरों में तुम्हारा भी नाम लिखा जायेगा। गुरु गोविन्द सिंह जी की धर्मपत्नी ने जब अपनेपुत्रों की मृत्यु का संवाद सुना था तो बहुत हर्शित हुईं और गुरु के नाम पर धर्म-रक्षर्थ अपनेपुत्रों के बलिदान पर मिठाई बाँटी थीं। जन्मदात्री! वर दो कि अन्तिम समय भी मेरा हृदय किसी प्रकार विचलित न हो और तुम्हारे चरण-कमलों को प्रणाम कर मैं परमात्मा का स्मरण करता हुआ शरीर त्याग करूँ।

- रामप्रसाद 'बिस्मिल'

भारत के अमर क्रान्तिकारियों में श्री रामप्रसाद 'बिस्मिल' का नाम विशेश रूप से उल्लेखनीय है। इनका जन्म 4 जून सन् 1897 ई0 को मैनपुरी में हुआ था। ब्रिटिश सरकार का विरोध करने पर 19 दिसम्बर सन् 1927 ई0 को इन्हें गोरखपुर जिला जेल में फाँसी दी गयी। क्रान्तिकारी होने के साथ-साथ वे साहित्यिक रुचि के धनी, सफल रचनाकार थे। इन्होंने आत्मकथा, जीवनी, उपन्यास, समीक्ष, लेख, अनुवाद, कविता आदि अनेक विधाओं में अपनी लेखनी चलायी। इनकी प्रमुख रचनाएँ- 'निज जीवन की छटा' (आत्मकथा), 'मन की लहर' (कविता संकलन), 'बोलशेविकों की करतूत' (उपन्यास), 'केथोराइन' (जीवनी) आदि हैं।

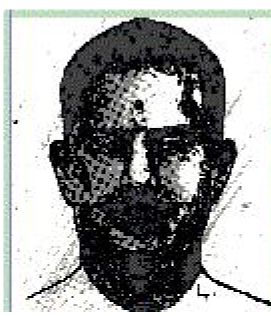

भारत के अमर क्रान्तिकारियों में श्री रामप्रसाद 'बिस्मिल' का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इनका जन्म 4 जून सन् 1897 ई0 को मैनपुरी में हुआ था। ब्रिटिश सरकार का विरोध करने पर 19 दिसम्बर सन् 1927 ई0 को इन्हें गोरखपुर जिला जेल में फाँसी दी गयी। क्रान्तिकारी होने के साथ–साथ वे साहित्यिक रुचि के धनी, सफल रचनाकार थे। इन्होंने आत्मकथा, जीवनी, उपन्यास, समीक्षा, लेख, अनुवाद, कविता आदि अनेक विधाओं में अपनी लेखनी चलायी। इनकी प्रमुख रचनाएँ– **'निज जीवन की छटा'** (आत्मकथा), **'मन की लहर'** (कविता संकलन), **'बोलशेविकों की करतूत'** (उपन्यास), **'केथोराइन'** (जीवनी) आदि हैं।

शब्दार्थ-

नितान्त=एकदम, बिल्कुल। सदृश=समान। प्रबन्ध=व्यवस्था। अक्षर-बोध=वर्ण-ज्ञान। अवलोकन=देखना, निरीक्षण करना। वार्तालापत्रबात-चीत। मेजिनी = सन् 1805 ई0 में इटली में जन्मे महान देशभक्त व क्रान्तिकारी थे। निर्वाह=पूरा किया जाना, गुजारा। प्राणदण्ड = मृत्युदण्ड, फाँसी। जन्मदा=ी=जन्म देने वाली। परिशोध=ऋण आदि का भुगतान, चुकता। उऋण=ऋण से मुक्त। अवर्णनीय=जो वर्णन करने योग्य न हो। संलग्न=चिपका हुआ, लगा हुआ। श्रेय = यश। ताड़ना=सुधार के उद्देष्य से मारना। परिणाम=फल। सान्त्वना=ढाढ़स बँधाना, तसल्ली। तृष्णा=अप्राप्त वस्तु को पाने की तीव्र इच्छा, लोभ। बलिवेदी की भेंट=न्योछावर होना। विचलित = अस्थिर, चंचल।

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1.नीचे दिये गये प्रश्नों में उत्तर के रूप में तीन विकल्प दिये गये हैं। विकल्प पर (   ) का निशान लगाइए-

अ. बिस्मिल की माँ का विवाह-

(क) ग्यारह वर्ष की अवस्था में हुआ था।

(ख) अठारह वर्ष की अवस्था में हुआ था।

(ग) बीस वर्ष की अवस्था में हुआ था।

ब. विवाह के समय बिस्मिल की माँ-

(क) गृहकार्य में दक्ष थीं।

(ख) अशिक्षित ग्रामीण कन्या थीं।

(ग) शिक्षित एवं रूपवती स्=ी थीं।

स. बिस्मिल के क्रान्तिकारी जीवन में उनकी माँ ने उनकी वैसी ही सहायता की, जैसे-

(क) भगत सिंह की उनकी माँ ने की थी।

(ख) चन्द्रशेखर आजाद की उनकी माँ ने की थी।

(ग) मेजिनी की उनकी माँ ने की थी।

द. बिस्मिल ने माता को धैर्य धारण करने के लिए कहा, क्योंकि उनकापुत्र-

(क) कायर का जीवन नहीं जीना चाहता था।

(ख)छिपकर नहीं रहना चाहता था।

(ग)भारतमाता की सेवा में प्राणों की बलि चढ़ाना चाहता था।

2.बिस्मिल की माँ ने पढ़ना-लिखना कैसे सीखा?

3.रामप्रसाद ‘बिस्मिल’ ने कहा था-‘‘इस संसार में मेरी किसी भी भोग-विलास तथा ऐश्वर्य की इच्छा नहीं। केवल एक तृष्णा है ....।’’ वह तृष्णा क्या थी ? लिखिए।

विचार और कल्पना

अगर घर की माताएँ पढ़ी-लिखीं हो तो वह घर को कैसे स्वर्ग बना सकतीं हैं, अपने

शब्दों में लिखिए।

कुछ करने को

1.स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के चित्रों को पत्र-पत्रिकाओं से एकत्र कर एक एलबम बनाइए।

उन्हें अपनी कॉपी पर लिखिए।

2.शहीद रामप्रसाद ‘बिस्मिल’ के जीवन के विषय में और जानकारियाँ एकत्र कीजिए तथा अपनी पुस्तिका में लिखिए।

भाषा की बात

1.‘प्रबन्ध’ में ‘प्र’, ‘परिश्रम’ में ‘परि’, ‘अवलोकन’ में ‘अव’, ‘निर्वाह’ में ‘निर्’ उपसर्ग लगे हैं। इन्हीं उपसर्गों की सहायता से तीन-तीन नये शब्द बनाइए।

2.‘अवर्णनीय’ में ‘ईय’ और ‘धार्मिक’ में ‘इक’ प्रत्यय हैं। इन प्रत्ययों की सहायता से चार-चार नये शब्द बनाइए।

3.निम्नलिखित शब्दों का सन्धि-विच्छेद कीजिए-

परमात्मा, प्रत्येक, भोजनादि, सदैव, शिक्षादि।

4.संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से वाक्य के अन्य शब्दों के साथ उनका सम्बन्ध सूचित हो, उसे ‘कारक’ कहते हैं। कारकों के बोध के लिए संज्ञा या सर्वनाम के आगे जो चिह्न लगाये जाते हैं, उन्हें व्याकरण में ‘विभक्तियाँ’ कहते हैं। इन्हें ‘परसर्ग’ भी कहते हैं। हिन्दी कारकों की विभक्तियों के चिह्न इस प्रकार हैं- ने, को, से (के द्वारा), के लिए, से (अलग होने के अर्थ

में) का, के, की, रा, रे, री, में (पर)। अब आप कोश्ठक में दिये गये कारक चिह्नों की सहायता से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(के, ने, को, की, में, से, के लिए।)

(क) शाहजहाँपुर आने .... थोड़े दिनों के बाद दादी जी ....अपनी छोटी बहन .... बुला लिया।

(ख) तुम्हारी दया .... छाया .... मैंने अपने जीवनभर......... कोई कष्ट न अनुभव किया।

(ग) तुम्हारी दया .... ही मैं देश-सेवा में संलग्न हो सका।

(घ) आप .... आदेश ..... पूर्ति करने ..... मुझे अपनी प्रतिज्ञा भंग करनी पड़ी।

5.कर्ता, कर्म, क्रिया- यह हिन्दी वाक्य रचना का सामान्य पद क्रम है, जैसे: राम ने पुस्तक पढ़ी। कभी-कभी यह सामान्य पदक्रम बदल दिया जाता है जो नहीं है। जैसे-

(क)पुस्तक राम ने पढ़ी।

(ख)पढ़ी राम ने पुस्तक।

(ग) राम ने पढ़ी पुस्तक को।

नीचे दिये गये वाक्यों को पदक्रम में लिखिए-

(क) बुला लिया अपनी छोटी बहिन को दादी ने।

(ख) अवलोकन करने लगी देवनागरी पुस्तकें वे।

(ग) भंग करनी पड़ी थी मुझे अपनी प्रतिज्ञा।

(घ) ध्यान आ जाता तुम्हारी स्वर्गीय मूर्ति का मुझे।

6.ग्यारह वर्ष की उम्र में, मेरे जन्म के पाँच या सात वर्ष बाद, मेरी बहनों की छोटी आयु में, केवल एक तृष्णा है आदि शब्दों के प्रयोग पर ध्यान दो तो पता चलेगा कि इसमें ग्यारह, पाँच छोटी आयु, केवल एक शब्द से संख्या या परिमाण का बोध या आभास होता है, क्योंकि ये संख्या वाचक विशेशण हैं। इसमें ग्यारह, पाँच, साल तथा एक से निश्चित संख्या का बोध होता है। इसलिए इनको निश्चित संख्या वाचक विशेशण कहते हैं। छोटी आयु से अनिश्चित संख्या का बोध होने से इसे अनिश्चित संख्या वाचक विशेशण कहते हैं।

अब आप नीचे लिखे वाक्यों को पढ़िए और उनके विशेशण के भेदों को लिखिए।

(क) सभी सदस्य खा रहे हैं।

(ख) कुछ लोग टहल रहे हैं।

(ग) मुझे दो दर्जन केले दे दो।

(घ) मैंने चार रुपये का आम खरीदा।

इसे भी जानें

’’सर फरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है,

देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है।“

-रामप्रसाद ‘बिस्मिल’

6. क्यों-क्यों लड़की

(प्रस्तुत पाठ में एक आदिवासी लड़की के विचारों में जिज्ञासा, जीवन संघर्श तथा कार्य करने की लगन को रोचक संवाद शैली में प्रस्तुत किया गया है।)

'पर क्यों?' छोटी-सी लड़की थी वह, करीब दस साल की। एक बड़े से साँप का पीछा कर रही थी। मैं उसके पीछे भागी, उसकी चोटियाँ पकड़ घसीट कर लायी, उस पर चिल्लायी, 'ना, मोइना, ना!' 'क्यों?' उसने पूछा। 'वो कोई धामन-वामन नहीं है, नाग है, नाग!' 'तो नाग को क्यों न पकडूँ?' 'क्यों?' अरे 'काट लेगा' 'नहीं, इस बार नहीं।' 'पर क्यों?' मैं उसे आफिस तक घसीट कर लायी। वहाँ उसकी माँ खीरी एक टोकरी बुन रही थी। 'चलो थोड़ा आराम कर लो' मैंने कहा। 'क्यों?' 'क्यों नहीं? थकी नहीं हो क्या?' मोइना ने सिर हिलाया। 'बाबू की बकरियाँ कौन घर लायेगा? और लकड़ी लाना, पानी लाना, चिड़िया पकड़ने का फन्दा लगाना, ये सब कौन करेगा?' खीरी ने कहा, 'बाबू ने जो चावल भेजा है, उसके लिए

उसे धन्यवाद देना न भूलना।' 'क्यों? क्यों दूँ धन्यवाद उसे? उसकी गोशाला धोती हूँ, हजारों काम करती हूँ उसके लिए। कभी धन्यवाद देता है, मुझे? मैं क्यों उसे धन्यवाद दूँ?' मोइना अपने काम पर भाग गयी। खीरी सिर हिलाती रह गयी। 'ऐसा बच्चा नहीं देखा कभी। बस कहती रहती है 'क्यों? क्यों?' - गाँव के पोस्टमास्टर ने तो उसे 'क्यों-क्यों लड़की' का नाम दे रखा है।' 'मुझे तो अच्छी लगती है मोइना।' 'इतनी जिद्दी है कि एक बात पकड़ ले तो उससे हटती नहीं।' मोइना आदिवासी लड़की थी, शबर जाति की। शबर लोग गरीब और भूमिहीन थे पर बाकी शबर लोग कभी शिकायत करते सुनायी नहीं देते थे, सिर्फ मोइना ही थी जो सवाल पर सवाल करे जाती।

'क्यों मुझे मीलों चलना पड़ता है; नदी से पानी लाने के लिए? क्यों रहते हैं; हम पत्तों की झोपड़ी में? हम दिन में दो बार चावल क्यों नहीं खा सकते?' मोइना गाँव के बाबुओं की बकरियाँ चराने का काम करती, पर न तो वह अपने आप को दीन-हीन समझती, न ही मालिकों का अहसान मानती। वह अपना काम करती, घर आ जाती, और बुदबुदाती रहती, 'क्यों उनका बचा-खुचा खाऊँ मैं? मैं तो बढ़िया खाना बनाऊँगी। शाम को हरे पत्ते और

चावल और केकड़े और मिर्ची वाला-और सारे घर वालों के साथ बैठ कर खाऊँगी।' वैसे शबर लोग आम तौर पर अपनी लड़कियों को काम पर नहीं भेजते हैं, पर मोइना की माँ एक पैर से लँगड़ाती थी। वह ज्यादा चल फिर नहीं सकती थी। उसके पिता दूर जमशेदपुर काम की तलाश में गये हुए थे और उसका भाई गोरो जलाऊ लकड़ी लाने जंगल जाता था। सो, मोइना को भी काम पर जाना पड़ता था। उस अक्टूबर में मैं समिति के साथ वहाँ पूरा एक माह रुकी। एक सुबह मोइना ने घोशणा की कि वह समिति वाली झोपड़ी में मेरे साथ रहेगी। 'बिल्कुल नहीं,' खीरी ने कहा। 'क्यों नहीं, इतनी बड़ी झोपड़ी है। एक बुढिया को कितनी जगह चाहिए?' 'तुम्हारे काम का क्या होगा?' 'काम के बाद आया करूँगी।' और वह एक जोड़ी कपड़े और एक नेवले का बच्चा लिये आ पहुँची। 'ये बस जरा-सा खाता है और बुरे साँपों को दूर भगा आता है,' उसने कहा। 'अच्छे वाले साँपों को मैं पकड़ कर माँ को दे देती हूँ।' हमारी समिति की शिक्षिका मालती बोनाल ने मुझसे कहा, 'आप तो तंग आ जायेंगी इसकी 'क्यों-क्यों' सुनते हुए।' और वाकई, वह अक्टूबर ऐसा बीता कि पूछो मत! क्यों मुझे बाबू की बकरियाँ चरानी पड़ती हैं? उसके लड़के खुद ही कर सकते हैं। मछलियाँ बोल क्यों नहीं पातीं ? अगर कई सारे तारे सूरज से भी बड़े हैं तो वो इतने छोटे क्यों नजर आते हैं? 'और हर रात को तुम सोने के पहले किताबें क्यों पढ़ती हो ?' 'क्योंकि किताबों में तुम्हारी 'क्यों-क्यों' के जवाब मिलते हैं।' इस एक बार मोइना चुप रही। उसने कमरा ठीक-ठाक किया रंगन के फूलों वाले झाड़ को पानी दिया, नेवले को मछली दी। फिर उसने कहा, 'मैं पढ़ना सीखूँगी और अपने सारे सवालों के जवाब ढूँढ़ निकालूँगी।' जो-जो वह मुझसे सीखती, वह बकरियाँ चराते समय दूसरे बच्चों को बताती। 'कई तारे तो सूरज से भी बड़े हैं। सूरज पास है इसलिए बडा़ दिखता है.. मछलियाँ हमारी तरह बातें नहीं करतीं। मछलियों की अपनी भाषा है, जो सुनायी नहीं देती.. तुम्हें पता है, पृथ्वी गोल है।'

एक साल बाद जब मैं उस गाँव में दुबारा पहुँची तो सबसे पहले सुनायी दी मोइना की आवाज। ‘स्कूल क्यों बन्द है?’ -समिति के स्कूल के अन्दर एक मिमियाती बकरी को अपने साथ घसीटते हुए उसने मालती को ललकारा। क्या मतलब है तुम्हारा ‘क्यों बन्द है?’ ‘मैं भी क्यों न पढ़ूँ।’ ‘तो तुम्हें रोक कौन रहा है?’ ‘पर कोई कक्ष ही नहीं लगी।’ ‘स्कूल पूरा हो चुका।’ ‘क्यों?’ ‘तुम जानती हो मोइना, मैं सुबह नौ से ग्यारह बजे तक कक्ष लगाती हूँ।’ मोइना ने पाँव पटक कर कहा, ‘तुम समय बदल क्यों नहीं सकती? मुझे बाबू की बकरियाँ चरानी होती हैं, सुबह। मैं तो सिर्फ ग्यारह बजे के बाद ही आ सकती हूँ। तुम पढ़ाओगी नहीं तो मैं सीखूँगी कहाँ से? मैं बूढ़ी माँ को बता दूँगी कि बकरी चराने वाले या गाय चराने वाले, हम में से कोई भी नहीं आ सकेगा, अगर स्कूल का समय नहीं बदला तो।’ तभी उसने मुझे देखा और अपनी बकरी ले भाग खड़ी हुई। शाम को मैं मोइना की झोपड़ी पर गयी। चैके की अंगार के पास मजे से बैठी मोइना अपनी छोटी बहिन और बड़े भाई को बता रही थी, ‘एक पेड़ काटो तो दो पेड़ लगाओ। खाने के पहले हाथ धो लो, जानते हो क्यों? पेट दर्द हो जायेगा अगर नहीं धोओगे तो। तुम कुछ नहीं जानते हो क्यों? क्योंकि तुम समिति की कक्ष में नहीं जाते।’ तुम्हें क्या लगता है, गाँव में जब प्राइमरी स्कूल खुला तो उसमें दाखिल होने वाली पहली लड़की कौन थी?- मोइना। मोइना अब अठारह साल की है। वह समिति के स्कूल में पढ़ाती है। अगर तुम उसके स्कूल के पास से गुजरो तो निश्चित ही तुम्हें उसकी बेचैन आवाज सुनायी देगी। ‘आलस मत करो। सवाल करो मुझसे। पूछो, क्यों मच्छरों को खत्म करना चाहिए... क्यों ध्रुवतारा हमेशा उत्तरी आकाश में ही रहता है।’ और दूसरे बच्चे भी अब सीख रहे हैं पूछना- ‘क्यों?’ वैसे मोइना को पता नहीं है कि मैं उसकी कहानी लिख रही हूँ। अगर उसे बताया जाये तो कहेगी, ‘क्यों’? मेरे बारे में? क्यों?’ -महाश्वेता देवी महाश्वेता देवी का जन्म 14 जनवरी सन् 1926 ई0 को ढाका (बांग्लादेश) में हुआ था।

उनकी आरम्भिक शिक्षा ढाका और कोलकाता में हुई। साहित्य के प्रति बचपन से आपका लगाव था। उनके प्रसिद्ध उपन्यास ‘झाँसी की रानी’, ‘अरण्येर अधिकार’ ‘हजार चैरासी की माँ’, ‘चोट्टि मुंडा और उसका तीर’, ‘अग्निगर्भ’, ‘अक्लांत कौरव’, ‘सूरज गहराई’, और ‘मास्टर साब’ आदि है। उनकी रचनाओं की कथावस्तु में आदिवासियों का जीवन संघर्श और उनकी पीड़ा है। महाश्वेता देवी को उनकी साहित्यिक और सामाजिक सेवाओं के लिए अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया, जिनमें साहित्य अकादमी, ज्ञानपीठ, मैग्सेसे आदि प्रमुख हैं। शब्दार्थ धामन=साँप की एक जाति। गोशाला=गाय के रहने का स्थान। अहसान=उपकार। बुदबुदाना=बड़बड़ाना। घोशणा=जोर से बोलकर जताना, ऐलान। ललकारना=विपक्षी को लड़ने की चुनौती देना। प्रश्न-अभ्यास पाठ से निर्देश:- उत्तर पर (झ्) का निशान लगाइए। 1.मोइना का नाम क्यों-क्यों लड़की किसने रखा ? (क)माँ खीरी ने (ख)पोस्टमास्टर ने (ग)शिक्षिाका मालती बोनाल ने (घ)लेखिका महाश्वेता देवी ने 2.नीचे बाक्स में कुछ जीव-जन्तुओं के नाम दिये गये हैं इनमें से जो पाठ में आये हों उनपर ( ) का निशान लगाइए। साँपनेवला बकरीकेकड़ा लोमड़ीमच्छरचिडि़याघोड़ातितली 3. शबर जाति के लोग आमतौर पर अपनी लड़कियों को काम पर नहीं भेजते हैं, पर मोइना को काम पर जाना पड़ता था। क्यों ? 4.मोइना ने समिति वाली झोपड़ी में रहने के लिए अपने साथ नेवला ले जाने का क्या लाभ बताया ? 5.“हर रात तुम सोने के पहले किताब क्यों पढ़ती हो ?” मोइना के इस प्रश्न पर लेखिका ने क्या उत्तर दिया ? 6.वे कौन-कौन सी बातें थीं, जो मोइना बकरियाँ चराते समय दूसरे बच्चों को बताती थी? 7.चैके की अंगार के पास बैठी मोइना ने अपनी छोटी बहिन और बड़े भाई को क्या बताया ? विचार और कल्पना 1.मोइना हर बात में ‘क्यों’ से प्रश्न पूछती है। उसी तरह और भी प्रश्न वाचक शब्द होते हैं जिनका प्रयोग करके हम प्रश्न पूछते हैं। हिन्दी में प्रयुक्त होने वाले प्रमुख प्रश्न वाचक

शब्दों को लिखिए। 2.प्रश्न से हम किसी व्यक्ति या वस्तु के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं। यदि आप किसी ऐसे ग्रह पर पहँुचते हैं जहाँ जनजीवन न हो तो, वहाँ आपके मन में कौन-कौन से प्रश्न आयेंगे। कुछ करने को 1. अपनी कला की कॉपी मंे सुन्दर ढंग से रंगीन अक्षरों में लिखिए- ‘‘एक पेड़ काटो तो दो पेड़ लगाओ’’। 2.अपने घर पर आज ही एक पेड़ लगाइए और उसके बड़े होने तक देखभाल कीजिए। 3.पृथ्वी देखने में चिपटी दिखाई देती है किन्तु वह गोल है। इसके साथ-साथ यह अपने अक्ष पर भी घूमती है। अक्ष पर घूमने के कारण दिन और रात होते हैं। सूर्य के चारों ओर घूमने के कारण ऋतुएँ बदलती हैं। अब तक पृथ्वी ही ऐसा ग्रह है जिस पर जीवन पाया जाता है। पृथ्वी पर जीवन के लिए पेड़-पौधों का होना अतिआवष्यक है। पेड़-पौधों के बिना पृथ्वी पर जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। उपर्युक्त अंश को पढ़िए तथा इसके आधार पर पाँच प्रश्न बनाइए। भाषा की बात 1.निम्नलिखित वाक्यांशांे से एक शब्द बनाइए- (क)लिखने वाला(ख)चिकित्सा करने वाला (ग)नृत्य करने वाला(घ)सेवा करने वाला (ङ)पढ़ने वाला(च)पर्यटन करने वाला 2.व्याकरण की द्रष्टि से निम्नलिखित को अलग-अलग वर्गों- विशेशण, भाववाचक संज्ञा, क्रियाविशेशण में बाँटिए- बचपन, बढ़िया, बड़ा, कायरता, दिनभर, तेज-तेज। 3.(क)मोइना अच्छी लड़की है। (ख)मोइना जिद्दी लड़की है। (ग)मोइना अच्छी किन्तु जिद्दी लड़की है। ऊपर दिये वाक्यों में पहले दो सरल वाक्य हैं। तीसरा वाक्य पहले दो वाक्यों को जोड़कर बना है। यह संयुक्त वाक्य है। दो शब्दों, पदबन्धों या वाक्यों को जोड़ने वाले शब्द ‘योजक’ कहलाते हैं। यहाँ ‘किन्तु’ योजक शब्द है। इन्हें समुच्चयबोधक भी कहते हैं। नीचे दिये योजक शब्दों की सहायता से वाक्य बनाइए- किन्तु, और, तथा, तो, यदि, वरना, या। 4.नीचे लिखे शब्दों में से पुनरुक्त शब्द और अन्य शब्द-युग्म को अलग-अलग लिखिए- दीन-हीन, बचा-खुचा, हरे-हरे, क्यों-क्यों, ठीक-ठाक। 5.निम्नलिखित वाक्यों को

निशेधात्मक तथा प्रश्नवाचक वाक्यों में बदलिए- उदाहरण साधारण वाक्य - मैं बाबू की बकरियाँ चराती हूँ। निशेधात्मक वाक्य -मैं बाबू की बकरियाँ नहीं चराती हूँ। प्रश्नवाचक वाक्य -मैं बाबू की बकरियाँ क्यों चराऊँ? (क)इस बार मोइना चुप रही। (ख)मुझे मीलों चलना पड़ता है। (ग)शाम को मैं मोइना की झोपड़ी पर गयी। (घ)मोइना को पता है कि मैं उसकी कहानी लिख रही हूँ। इसे भी जानें महाश्वेता देवी को ज्ञानपीठ पुरस्कार सन् 1996 ई0 में बंगला साहित्य में उत्कृश्ट योगदान के लिए तथा मैग्सेसे पुरस्कार सन् 1997 ई0 में साहित्य एवं सर्जनात्मक संचार कला के लिए प्राप्त हुआ।

7. माँ कह एक कहानी

(प्रस्तुत कविता में यशोधरा अपनेपुत्र राहुल को एक कहानी के द्वारा बुद्ध के दया और क्षमा जैसे गुणों के बारे मंे बताती है।)

'माँ कह एक कहानी,

राजा था या रानी,

माँ कह एक कहानी।’

‘तू है हठी मानधन मेरे,

सुन उपवन मंे बड़े सबेरे।

तात भ्रमण करते थे तेरे,

जहाँ सुरभि मनमानी।’

‘जहाँ सुरभि मनमानी।

हाँ! माँ यही कहानी।’

‘वर्ण-वर्ण के फूल खिले थे,

झलमल कर हिम बिन्दु मिले थे।

हलके झोंके हिले-मिले थे,

लहराता था पानी।’

‘लहराता था पानी।

हाँ-हाँ यही कहानी।’

‘गाते थे खग कल-कल स्वर से,

सहसा एक हंस ऊपर से।

गिरा बिद्ध होकर खर शर से,

हुई पक्ष की हानी।’

‘हुई पक्ष की हानी।

करुणा भरी कहानी।’

‘चैंक उन्होंने उसे उठाया,

नया जन्म-सा उसने पाया।

इतने में आखेटक आया,

लक्ष्य सिद्धि का मानी।’

‘लक्ष्य सिद्धि का मानी।

कोमल कठिन कहानी।’

माँगा उसने आहत पक्षी,

तेरे तात किन्तु थे रक्षी।

तब उसने जो था खग भक्षी,

हठ करने की ठानी।’

‘हठ करने की ठानी।

अब बढ़ चली कहानी।’

हुआ विवाद सदय-निर्दय में,

उभय आग्रही थे स्व विषय में।

गयी बात तब न्यायालय मंे,

सुनी सभी ने जानी ।’

‘सुनी सभी ने जानी।

व्यापक हुई कहानी।’

‘राहुल तू निर्णय कर इसका,

न्याय पक्ष लेता है किसका।

कह दे निर्भय, जय हो जिसका,

सुन लूँ तेरी बानी ।’

‘माँ मेरी क्या बानी ।

मैं सुन रहा कहानी।’

‘कोई निरपराध को मारे,

तो क्या अन्य उसे न उबारे?

रक्षक पर भक्षक को वारे,

न्याय दया का दानी।’

‘न्याय दया का दानी।

तूने गुनी कहानी ।’

- मैथिलीशरण गुप्त

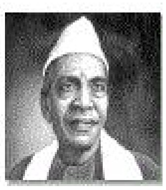

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त का जन्म सन् 1886 ई0 में चिरगाँव, जिला झाँसी में हुआ था। राष्ट्रीयधारा के हिन्दी कवियों में आप को महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। उन्होनें बहुत सी पुस्तकों की रचना की है। इनमें ‘जयद्रथवध’, ‘भारत भारती’, ‘सिद्धराज’, ‘साकेत’, ‘यशोधरा’ और ‘पंचवटी’ को विशेश ख्याति मिली। इनका निधन 12 दिसम्बर सन् 1964 ई0 को हुआ।

शब्दार्थ-

सुरभि=सुगन्ध। तात=पिता। हिमबिन्दु=बर्फ की बूँदे/ओस की बूँदे। खग=पक्षी। खर=तीक्ष्ण, तेज धार वाला। शर=बाण। करुणा=दया। आखेटक=शिकारी। आहत=घायल। भक्षी=भक्षण करने वाला, खाने वाला। सदय=दयालु, दयावान। निर्दय=जिसके अन्दर दया न हो, क्रूर। उभय=दोनों। आग्रही=जिद्दी, हठी। निर्भय=बिना भय के। निरपराध=जिसने अपराध न किया हो। उबारे=उद्धार करना। वारे=न्योछावर करना। व्यापक=विस्तृत।

प्रश्न-अभ्यास

कविता से

1.कहानी सुनाने के बाद माता ने राहुल से क्या प्रश्न किया ?

2.राहुल के उत्तर से उनके स्वभाव के विषय में क्या पता चलता है ?

3.हंस को मारने वाले तथा बचाने वाले के बीच हुए विवाद का निर्णय राहुल ने क्या किया ?

4.निम्नलिखित पद्यांशों का भाव स्पष्ट कीजिए -

(क) 'वर्ण-वर्ण के फूल खिले थे,

झलमल कर हिम बिन्दु मिले थे।

हलके झोंके हिले-मिले थे,

लहराता था पानी।'

(ख) 'कोई निरपराध को मारे,

तो क्या अन्य उसे न उबारे?

रक्षक पर भक्षक को वारे,

न्याय दया का दानी।'

विचार और कल्पना

1.आकाश में उड़ते हुए पक्षी आपको कैसे लगते हैं ? किसी पक्षी को पिंजड़े में बंद कर पालना

क्या उचित है ? अपना विचार लिखिए।

2.पषु-पक्षियों का शिकार करना दण्डनीय अपराध है। आपके विचार में पषु-पक्षियों के शिकार

करने की प्रवृत्ति को रोकने के लिए क्या उपाय करना चाहिए?

3.राहुल की तरह आपने भी बचपन में माँ से कोई कहानी अवष्य सुनी होगी। अपनी माँ से

सुनी हुई किसी कहानी को लिखिए।

कुछ करने को

बानी, कहानी, पानी, नानी, समान तुक वाले शब्द हैं। इनकी सहायता से चार पंक्ति की

एक कविता बनाइए।

भाषा की बात

1.निम्नलिखित के लिए एक शब्द लिखिए-

जैसे-हठ करने वाला-   हठी

रक्ष करने वाला,भक्षण करने वाला, पक्ष लेने वाला,जिसने अपराध किया हो, जिसे डर न हो।

2. समानार्थी शब्द छाँटिए - खग - गगन, पक्षी, नभ। आखेट- धनुश, ओखल, शिकार। कोमल - मुलायम, कमल, कोयल। विवाद - निनाद, समझौता, झगड़ा। सदय - देने वाला, दया के साथ, दीनता के साथ। 3.हिले-मिले, खर-शर और सदय-निर्दय शब्द-युग्मों में एक जैसा तुक है। इसी प्रकार के तीन और समान तुक वाले शब्द-युग्म लिखिए।

इसे भी जानें ‘‘मनुष्य के लिए क्षमा, त्याग और अहिंसा जीवन के उच्चतम आदर्श हैं। नारी इस आदर्श को प्राप्त कर चुकी है।’’ -मंुशी प्रेमचन्द

8. हार की जीत

(प्रस्तुत कहानी ‘हार की जीत’ में एक डाकू के हृदय परिवर्तन की घटना को बड़े ही भावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया गया है।)

माँ को अपने बेटे और किसान को अपने लहलहाते खेत देखकर जो आनन्द आता है, वही आनन्द बाबा भारती को अपना घोड़ा देखकर आता था। भगवद्भजन से जो समय बचता वह घोड़े को अर्पण हो जाता। वह घोड़ा बड़ा सुन्दर था, बड़ा बलवान। इसके जोड़ का घोड़ा सारे इलाके में न था। बाबा भारती उसे ”सुल्तान“ कह कर पुकारते, अपने हाथ से खरहरा करते, खुद दाना खिलाते और देख-देखकर प्रसन्न होते थे। उन्हांेने रुपया, माल, असबाब, जमीन आदि अपना सब-कुछ छोड़ दिया था, यहाँ तक कि उन्हें नगर के जीवन से भी घृणा थी। अब गाँव से बाहर एक छोटे से मन्दिर में रहते और भगवान का भजन करते थे। ”मैं सुल्तान के बिना नहीं रह सकूँगा,“ उन्हें ऐसी भ्रान्ति-सी हो गयी थी। वे उसकी चाल पर लट्टू थे। कहते ऐसा चलता है जैसे मोर घटा को देख कर नाच रहा हो। जब तक सन्ध्या समय सुल्तान पर चढ़ कर आठ-दस मील का चक्कर न लगा लेते, उन्हें चैन न आता।

खड्गसिंह उस इलाके का प्रसिद्ध डाकू था। लोग उसका नाम सुनकर काँपते थे। होते-होते सुल्तान की कीर्ति उसके कानों तक भी पहुँची। उसका हृदय उसे देखने के लिए अधीर हो उठा। वह एक दिन दोपहर के समय बाबा भारती के पास पहुँचा और नमस्कार करके बैठ गया।

बाबा भारती ने पूछा 'खड्गसिंह क्या हाल है?'

खड्गसिंह ने सिर झुका कर उत्तर दिया, 'आपकी दया है।'

'कहो, इधर कैसे आ गये।'

'सुल्तान की चाह खींच लायी।'

'विचित्र जानवर है। देखोगे तो प्रसन्न हो जाओगे।'

'मैंने भी बड़ी प्रशंसा सुनी है।'

'उसकी चाल तुम्हारा मन मोह लेगी।'

'कहते हैं, देखने में भी बड़ा सुन्दर है।'

'क्या कहना जो उसे एक बार देख लेता है, उसके हृदय पर उसकी छवि अंकित हो जाती है।'

'बहुत दिनों से अभिलाशा थी, आज उपस्थित हो सका हूँ।'

बाबा भारती और खड्गसिंह अस्तबल में पहुँचे। बाबा ने घोड़ा दिखाया घमण्ड से, खड्गसिंह ने घोड़ा देखा आश्चर्य से। उसने सहस्रों घोड़े देखे थे परन्तु ऐसा बाँका घोड़ा

उसकी आँखों से कभी न गुजरा था। सोचने लगा, भाग्य की बात है। ऐसा घोड़ा खड्गसिंह के पास होना चाहिए था। इस

साधु को ऐसी चीजों से क्या लाभ। कुछ देर तक आश्चर्य से चुपचाप खड़ा रहा। इसके पश्चात उसके हृदय में हलचल होने लगी। बालकों की सी अधीरता से बोला, ‘परन्तु बाबाजी, इसकी चाल न देखी तो क्या?’

बाबा जी मनुष्य ही थे। अपनी वस्तु की प्रशंसा दूसरे के मुख से सुनने के लिए उनका हृदय अधीर हो गया। घोड़े को खोलकर बाहर गये। घोड़ा वायुवेग से उड़ने लगा। उसकी चाल देखकर खड्गसिंह के हृदय पर साँप लोट गया। वह डाकू था और जो वस्तु उसे पसन्द जा जाय उस पर वह अपना अधिकार समझता था। उसके पास बाहुबल था और आदमी थे। जाते-जाते उसने कहा, ‘बाबाजी मैं यह घोड़ा आपके पास न रहने दूँगा।’

बाबा भारती डर गये। अब उन्हें रात को नींद न आती। सारी रात अस्तबल की रखवाली में कटने लगी। प्रतिक्षण खड्गसिंह का भय लगा रहता परन्तु कई मास बीत गये और वह न आया। यहाँ तक कि बाबा भारती कुछ असावधान हो गये और इस भय को स्वप्न के भय की नाईं मिथ्या समझने लगे।

सन्ध्या का समय था। बाबा भारती सुल्तान की पीठ पर सवार होकर घूमने जा रहे थे। इस समय उनकी आँखों में चमक थी, मुख पर प्रसन्नता। कभी घोड़े के शरीर को देखते कभी उसके रंग को और मन में फूले न समाते थे।

सहसा एक ओर से आवाज आयी, ‘ओ बाबा, इस कंगले की सुनते जाना।’

आवाज में करुणा थी। बाबा ने घोड़े को रोक लिया। देखा, एक अपाहिज वृक्ष की छाया में पड़ा कराह रहा है। बोले, 'क्यों, तुम्हें क्या कष्ट है?'

अपाहिज ने हाथ जोड़कर कहा, 'बाबा, मैं दुखिया हूँ। मुझ पर दया करो। रामावाला यहाँ से तीन मील है, मुझे वहाँ जाना है। घोड़े पर चढ़ा लो, परमात्मा भला करेगा।'

'वहाँ तुम्हारा कौन है?'

'दुर्गादत्त वैद्य का नाम सुना होगा। उनका सौतेला भाई हूँ।'

बाबा भारती ने घोड़े से उतर कर अपाहिज को घोड़े पर सवार किया और स्वयं उसकी लगाम पकड़ कर धीरे-धीरे चलने लगे।

सहसा उन्हें एक झटका-सा लगा और लगाम हाथ से छूट गयी। उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब उन्होंने देखा कि अपाहिज घोड़े की पीठ पर तन कर बैठा है और घोड़े को दौड़ाये लिये जा रहा है। उनके मुख से भय, विस्मय और निराशा से मिली हुई चीख निकल गयी। वह अपाहिज डाकू खड्ग सिंह था।

बाबा भारती कुछ देर तक चुप रहे और इसके पश्चात कुछ निश्चय करके पूरे बल से चिल्लाकर बोले, 'जरा ठहर जाओ।'

खड्ग सिंह ने आवाज सुनकर घोड़ा रोक लिया और उसकी गर्दन पर प्यार से हाथ फेरते हुए कहा, 'बाबाजी, यह घोड़ा अब न दूँगा।'

'परन्तु एक बात सुनते जाओ।'

खड्गसिंह ठहर गया। बाबा भारती ने निकट जाकर उसकी ओर ऐसी आँखों से देखा जैसे बकरा कसाई की ओर देखता है, और कहा, 'यह घोड़ा तुम्हारा हो चुका। मैं तुमसे वापस

करने के लिए न कहूँगा। परन्तु खड्गसिंह, केवल एक प्रार्थना करता हूँ। उसे अस्वीकार न करना, नहीं तो मेरा दिल टूट जायेगा।'

बाबाजी आज्ञा कीजिए। मैं आपका दास हूँ, केवल यह घोड़ा न दूँगा।

'अब घोड़े का नाम न लो। मैं तुमसे इसके विषय में कुछ न कहूँगा। मेरी प्रार्थना केवल यह है कि इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना।'

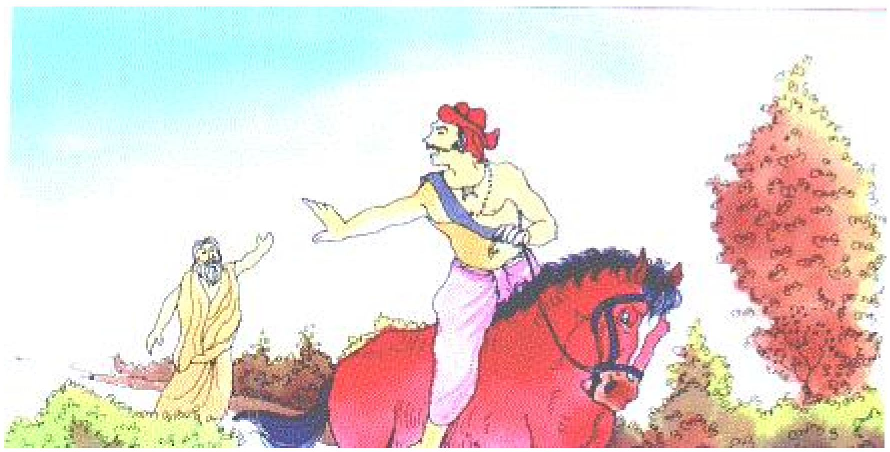

खड्गसिंह का मुँह आश्चर्य से खुला रह गया। उसका विचार था कि उसे घोड़े को लेकर यहाँ से भागना पड़ेगा, परन्तु बाबा भारती ने स्वयं कहा कि 'इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना।' इससे क्या प्रयोजन सिद्ध हो सकता है। खड्गसिंह ने बहुत सोचा, बहुत सिर मारा, परन्तु कुछ समझ न सका। हारकर उसने अपनी आँखें बाबा भारती के मुख पर गड़ा दी और पूछा, 'बाबाजी इसमें आपको क्या डर है?'

सुनकर बाबा भारती ने उत्तर दिया 'लोगों को यदि इस घटना का पता चल गया तो वे किसी गरीब पर विश्वास न करेंगे।' यह कहते-कहते उन्होंने सुल्तान की ओर से इस तरह मुँह मोड़ लिया जैसे उनका उससे कोई सम्बन्ध ही नहीं रहा हो।

बाबा भारती चले गये, परन्तु उनके शब्द खड्गसिंह के कानों में उसी प्रकार गूँज रहे थे। सोचता था, कैसे ऊँचे विचार हैं, कैसा पवित्र भाव है। उन्हें इस घोड़े से प्यार था, इसे देखकर उनका मुख फूल की नाईं खिल जाता था। कहते थे, 'इसके बिना मैं न रह सकूँगा।' इसकी रखवाली में वे कई रात सोये नहीं। भजन-भक्ति न कर, रखवाली करते रहे। परन्तु आज उनके मुख पर दु:ख की रेखा तक न दिखायी पड़ती थी। उन्हें केवल यह ख्याल था कि कहीं लोग गरीबों पर विश्वास करना न छोड़ दें। ऐसा मनुष्य, मनुष्य नहीं देवता है।

रात के अन्धकार में खड्गसिंह बाबा भारती के मन्दिर में पहुँचा। चारों ओर सन्नाटा था। आकाश में तारे टिमटिमा रहे थे। थोड़ी दूर पर गाँवों के कुत्ते भौंक रहे थे। मन्दिर के अन्दर कोई शब्द सुनायी न देता था। खड्गसिंह सुल्तान की बाग पकड़े हुए था। वह धीरे-धीरे अस्तबल के फाटक पर पहुँचा। फाटक खुला पड़ा था। किसी समय वहाँ बाबा भारती स्वयं लाठी लेकर पहरा देते थे, परन्तु आज उन्हें किसी चोरी, किसी डाके का भय न था। खड्गसिंह ने आगे बढ़कर सुल्तान को उसके स्थान पर

बाँध दिया और बाहर निकल कर सावधानी से फाटक बन्द कर दिया। इस समय उसकी आँखों में नेकी के आँसू थे।

रात्रि का तीसरा पहर बीत चुका था। चैथा पहर आरम्भ होते ही बाबा भारती ने अपनी कुटिया से बाहर निकल ठंडे जल से स्नान किया। उसके पश्चात इस प्रकार जैसे कोई स्वप्न में चल रहा हो, उनके पाँव अस्तबल की ओर बढ़े। परन्तु फाटक पर पहुँचकर उनको अपनी भूल प्रतीत हुई साथ ही घोर निराशा ने पाँवों को मन-मन भर का भारी बना दिया। वे वहीं रुक गये।

घोड़े ने अपने स्वामी के पाँवों की चाप को पहचान लिया और जोर से हिनहिनाया।

अब बाबा भारती आश्चर्य और प्रसन्नता से दौड़ते हुए अन्दर घुसे और अपने प्यारे घोड़े के गले से लिपट कर इस प्रकार रोने लगे मानो कोई पिता बहुत दिन के बिछुड़े हुएपुत्र से मिल रहा हो। बार-बार उसकी पीठ पर हाथ फेरते, बार-बार उसके मुँह पर थपकियाँ देते।

फिर वे सन्तोश से बोले, ‘अब कोई गरीबों की सहायता से मुँह न मोड़ेगा।’

- सुदर्शन

सुदर्शन का वास्तविक नाम बद्रीनाथ भट्ट था। इनका जन्म सन् 1896 ई0 में पंजाब स्थित सियालकोट में हुआ था। कक्ष छह में ही उन्होंने अपनी पहली कहानी लिखी थी। कहानी के अतिरिक्त उन्होंने उपन्यास, नाटक, जीवनी, बालसाहित्य, धार्मिक साहित्य, गीत आदि भी लिखे हैं। इनके प्रमुख कहानी-संग्रह ‘पुश्पलता’, ‘सुप्रभात’, ‘परिवर्तन’, ‘पनघट’, ‘नगीना’ आदि हैं। आपका उपन्यास ‘भागवन्ती’ है। आपने अपनी कहानियों में आदर्श की प्रतिश्ठा की है। सन् 2008 में इनका देहावसान हो गया।

शब्दार्थ-

अर्पण=देना, प्रदान करना, भेंट करना। असबाब=सामान। कीर्ति=यश। अभिलाशा=इच्छा। अस्तबल=घुड़साल, तबेला। सहस्रों=हजारों। बाँका=सुन्दर और बना-ठना।

बाहुबल=भुजाओं की शक्ति। नाईं= तरह, समान। मिथ्या=झूठ। कंगले=गरीब, कंगाल। प्रयोजन=उद्देष्य। दु:ख की रेखा=थोड़ा-सा दु:ख। नेकी के आँसू=उपकार के भाव, दया का भाव। प्रतीत=मालूम होना, विदित। पाँवों की चापत्रपैरों की आवाज।

प्रश्न-अभ्यास

कहानी से

1. बाबा भारती ने खड्गसिंह से उस घटना को किसी के सामने प्रकट न करने के लिए क्यों कहा ?

2. बाबा भारती द्वारा की गयी प्रार्थना का डाकू खड्गसिंह पर क्या प्रभाव पड़ा ?

3.कहानी के आधार पर नीचे दी गयी घटनाओं को क्रम दीजिए-

⇒बाबा भारती घोड़े के गले से लिपटकर रोने लगे।

⇒खड्गसिंह ने बाबा भारती की आवाज सुनकर घोड़ा रोक लिया और कहा- बाबाजी यह घोड़ा अब न दूँगा।

⇒बाबा भारती की सारी रात अस्तबल की रखवाली में कटने लगी।

⇒अपाहिज वेश में खड्गसिंह घोड़े को दौड़ाकर जाने लगा।

⇒घोड़े की चाल देखकर खड्गसिंह के हृदय पर साँप लोट गया।

⇒माँ को अपने बेटे और किसान को लहलहाते खेत को देखकर जो आनन्द आता है वही आनन्द बाबा भारती को अपना घोड़ा देखकर आता था।

⇒बाबा भारती और खड्‌गसिंह अस्तबल में पहुँचे।

⇒खड्‌गसिंह जाते-जाते कह गया- ‘बाबाजी यह घोड़ा मैं आपके पास न रहने दूँगा।’

⇒बाबा ने कहा ‘इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना, नहीं तो वे किसी गरीब पर विश्वास न करेंगे’।

⇒खड्‌गसिंह ने सुल्तान को उसके स्थान पर बाँध दिया।

4.इस कहानी के अन्त में किसकी जीत और किसकी हार हुई ?

5.इस कहानी द्वारा लेखक हमें क्या बताना चाहता है ?

विचार और कल्पना

1.बाबा भारती को जैसा आनन्द अपने घोड़े सुल्तान को देखकर आता था, वैसा आनन्द अन्य

को भी आता है। नीचे दिये गये स्तम्भ ‘ख’ में से उचित शब्द चुनकर स्तम्भ ‘क’ में दिये गये शब्दों के सम्मुख लिखंे-

स्तम्भ ‘क’स्तम्भ ‘ख’

किसान   घटा

माँ   पुस्तक

मोर   बेटा

विद्यार्थी लहलहाते खेत

2. चित्र को देखकर अपने विचार दस पंक्तियों में लिखिए-

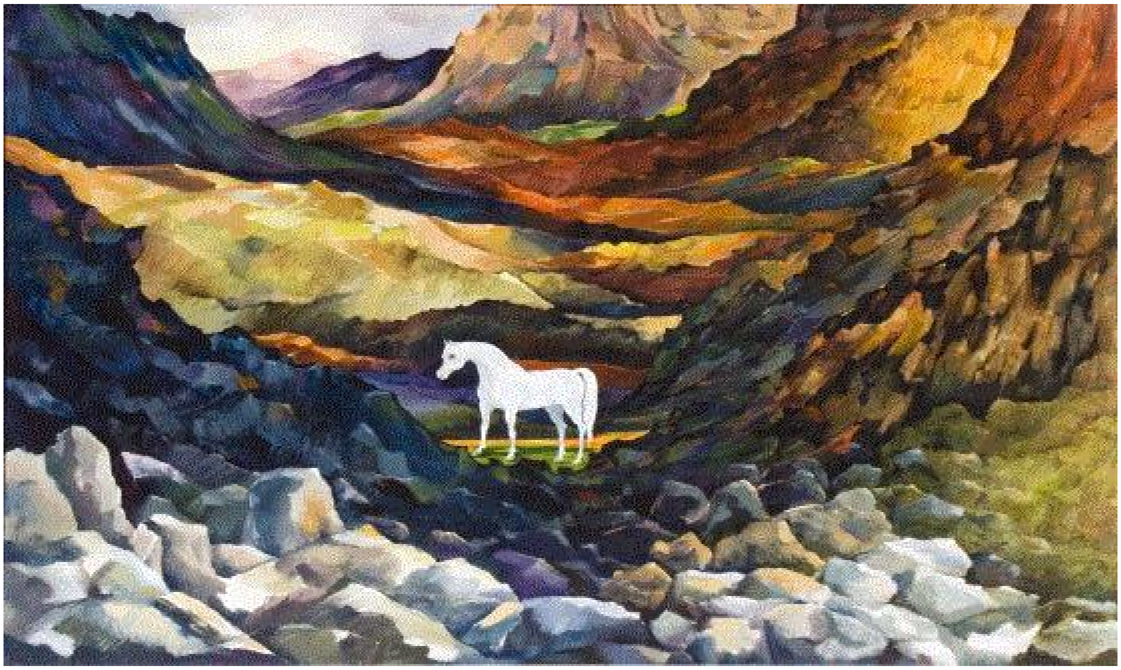

कुछ करने को

1. कक्ष के दो छात्र बाबा भारती और खड्गसिंह के रूप में कहानी के संवादों को उतार-चढ़ाव के साथ बोलने का अभिनय करें।

2. बाबा भारती ने अपने घोड़े सुल्तान की बचपन से सेवा की और उसकी तारीफ करते नहीं थकते थे। इस प्रकार का कोई पालतू जानवर आपके घर में हो तो उसका वर्णन कीजिए।

भाषा की बात

1.नीचे लिखे मुहावरों का प्रयोग करके वाक्य बनाइए-

वायु वेग से उड़ना, आँखों में चमक होना, दिल टूट जाना, मुँह न मोड़ना, सिर मारना, लट्टूहोना, मन भारी होना।

2.नीचे बायीं ओर कुछ विशेशण दिये गये हैं और दायीं ओर कुछ विशेष्य। प्रत्येक विशेशण के साथ उपयुक्त विशेष्य मिलानकर लिखिए-

विशेशणविशेष्य

लहलहातेविचार

बाँकाखेत

अधीरजल

ऊँचेहृदय

ठंडाघोड़ा

3.‘कहो, इधर कैसे आ गये’, ‘सुल्तान की चाह खींच लायी।’

इनमें से पहला वाक्य बाबा भारती और दूसरा वाक्य डाकू खड्गसिंह का है। बातचीत के वाक्यों को अलग रखने के लिए उन्हें ‘उद्धरण चिह्न’(इनवर्टेड कॉमा) में रखा जाता है। कहानी को पढ़कर नीचे दिये गये अनुच्छेद में उपयुक्त स्थान पर उद्धरण चिह्न तथा अन्य विराम चिह्न लगाइए-

अपाहिज ने हाथ जोड़ कर कहा बाबा मैं दुखिया हूँ मुझ पर दया करो रामावाला यहाँ से तीन मील दूर है मुझे वहाँ जाना है घोड़े पर चढ़ा लो परमात्मा भला करेगा वहाँ तुम्हारा कौन

है दुर्गादत्त वैद्य का नाम आपने सुना होगा मैं उनका सौतेला भाई हूँ।

4.‘अ’ उपसर्ग लगाने से कुछ शब्दों के अर्थ विपरीत हो जाते हैं, जैसे- धीर से अधीर, स्वीकार से अस्वीकार। ‘अ’ उपसर्ग लगाकर इसी तरह से अन्य पाँच शब्द लिखिए।

इसे भी जानें

भारत रत्न पुरस्कार- यह पुरस्कार भारत सरकार द्वारा कला, साहित्य, विज्ञान एवं सार्वजनिक सेवा या जीवन के असाधारण एवं अति उत्तम कोटि के कार्य के लिए दिया जाता है। यह पुरस्कार सर्वप्रथम सन् 1954 ई0 में सी0 राजगोपालाचारी, डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृश्णन तथा डॉ0 सी0वी0 रमन को मिला।

(प्रस्तुत कहानी ‘हार की जीत’ में एक डाकू के हृदय परिवर्तन की घटना को बड़े ही भावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया गया है।)

9. हिन्द महासागर में छोटा-सा हिन्दुस्तान

(प्रस्तुत यात्रा वृत्तान्त में लेखक ने मॉरीशस के सौन्दर्य और यहाँ फैली भारतीय संस्कृति का वर्णन किया है।)

मॉरीशस वह देश है, जिसका कोई भी हिस्सा समुद्र से पन्द्रह मील से ज्यादा दूर नहीं है। मॉरीशस वह देश है, जहाँ की जनसंख्या के 67 प्रतिशत लोग भारतीय मूल के हैं। मॉरीशस वह देश है, जिसकी राजधानी पोर्टलुई की गलियों के नाम कलकत्ता (कोलकाता), मद्रास (चेन्नई), हैदराबाद और बम्बई (मुम्बई) हैं तथा जिसके एक पूरे मोहल्ले का नाम काशी है। मॉरीशस वह देश है, जहाँ बनारस भी है, गोकुल भी है और ब्रह्मस्थान भी।

यात्रा पर मैं दिल्ली से 15 जुलाई को, बम्बई (मुम्बई) से 16 जुलाई को और नैरोबी से 17 जुलाई को मॉरीशस के लिए रवाना हुआ।

इधर से जाते समय नैरोबी (की दुनिया) में मुझे एक रात और दो दिन ठहरने का मौका मिल गया। अतएव मन में यह लोभ जग गया कि मॉरीशस के भारतीयों और अफ्रीकियों से मिलने के पूर्व हमें अफ्रीका के शेरों से मुलाकात कर लेनी चाहिए। विमान दूसरे दिन शाम को मिलने वाला था। अतएव हम जिस दिन नैरोबी पहुँचे, उसी दिन उच्चायुक्त श्री भाटिया के साथ नेशनल पार्क में घूमने को निकल गये। नैरोबी का नेशनल पार्क चिड़ियाघर नहीं है। शहर से बाहर बहुत बड़ा जंगल है, जिसमें घास अधिक, पेड़ बहुत कम हैं। लेकिन, जंगल में सर्वत्र अच्छी सड़कंे बिछी हुई हैं और पर्यटकों की गाड़ियाँ उन पर दौड़ती ही रहती हंै। हमारी गाड़ी को भी काफी देर तक दौड़ना पड़ा, मगर सिंह कहीं दिखायी नहीं पड़े।

दूरी तय करने के बाद या यों कहिए कि दस-बीस मील के भीतर हर सड़क छान लेने के बाद, हम उस जगह जा पहुँचे, जहाँ सिंह उस दिन आराम कर रहे थे।

वहाँ जो कुछ देखा, वह जन्मभर कभी नहीं भूलेगा। कोई सात-आठ सिंह लेटे या सोये हुए थे और उन्हें घेर कर आठ-दस मोटरें खड़ी थीं। तुर्रा यह कि सिंहांे को यह जानने की कोई इच्छा ही नहीं थी कि हमें देखने को आने वाले लोग कौन हैं। मोटरों में शीशे चढ़ाकर उनके भीतर बैठे लोगों की ओर सिंहों ने कभी द्रष्टिपात नहीं किया, मानो हमलोग तुच्छातितुच्छ हों और उनकी नजर में आने के योग्य बिल्कुल नहीं हों। हमलोग वहाँ आधा घंटा ठहरे होंगे। इस बीच एक सिंह ने उठकर जँभाई ली, दूसरे ने देह को ताना, तीसरे ने सोयी हुई सिंहनियों की देह चाटी, मगर हमारी ओर किसी भी सिंह ने नजर नहीं उठायी। हम लोग पेड़-पौधे और खरपात से भी बदतर समझे गये।

इतने में कोई मील भर की दूरी पर हिरनों का एक झुण्ड दिखायी पड़ा, जिनके बीच एक जिराफ खड़ा था। अब दो जवान सिंह उठे और दो ओर चल दिये। एक तो थोड़ा-सा आगे बढ़कर एक जगह बैठ गया, लेकिन दूसरा घास के बीच छिपता हुआ मोर्चे पर आगे बढ़ने लगा।

हिरनों के झुण्ड ने ताड़ लिया कि उन पर सिंहों की नजर पड़ रही है। अतएव वे चरना भूलकर चैकन्ने हो उठे। फिर ऐसा हुआ कि झुण्ड से छूटकर कुछ हिरन एक तरफ को भाग निकले, मगर बाकी जहाँ के तहाँ खड़े रहे। इच्छा तो यह थी कि हम लोग देर तक रुकें और देखें क्या होता है। किन्तु समय छह से ऊपर हो रहा था और सात बजे तक नेशनल पार्क का फाटक बन्द हो जाता है। फिर यह भी बात थी कि शिकार तो सिंह सूर्यास्त के बाद किया करते हैंऔर शिकार वे झुण्ड का नहीं करते, बल्कि उस जानवर का करते हैं, जो

भागते हुए झुण्ड से पिछड़ जाता है। अब यह बात समझ में आयी कि हिरन भागने को निरापद नहीं समझ कर एक गोल में क्यों खड़े थे।

नैरोबी से मॉरीशस तक हम बी0ओ0ए0सी0 के विमान मंे उड़े। यह विमान नैरोबी से चार बजे शाम को उड़ा और पाँच घण्टे की निरन्तर उड़ान के बाद जब वह मॉरीशस पहुँचा, तब वहाँ रात के लगभग दस बज रहे थे। रात थी, अँधेरा था, पानी बरस रहा था। मगर तब भी हमारे स्वागत में बहुत काफी लोग खड़े थे। हवाई अड्डे के स्वागत का समां देखकर यह भाव जगे बिना नहीं रहा कि हम जहाँ आये हैं, वह छोटे पैमाने पर भारत ही है।

चूँकि मॉरीशस के भारतीयों में से अधिकांश बिहार और उत्तर प्रदेश के लोग हैं, इसलिए हिन्दी का मॉरीशस में व्यापक प्रचार है। मॉरीशस की हिन्दी प्रचारिणी सभा जीवित जागृत संस्था है।

मॉरीशस की राजभाषा अंग्रेजी, किन्तु बोलचाल की भाषा क्े्रयोल है। क्रेयोल के बाद मॉरीशस की दूसरी जनभाषा भोजपुरी को ही मानना पड़ेगा। प्राय: सभी भारतीय भोजपुरी बोलते अथवा उसे समझ लेते हैं। यहाँ तक कि भारतीयों के पड़ोस में रहने वाले चीनी भी भोजपुरी बखूबी बोल लेते हैं। किन्तु मॉरीशस की भोजपुरी शाहाबाद या सारन की भोजपुरी नहीं है, उसमें फ्रेंच के इतने संज्ञापद घुस गये हैं कि आपको बाज-बाज शब्दों के अर्थ पूछने पड़ेंगे। हिन्दी और भोजपुरी मॉरीशस निवासी भारतीयों को एक सू= में बाँधे हैं और मॉरीशस को भारत के साथ बाँधने का काम भी हिन्दी ही कर रही है। मॉरीशस में हिन्दू संस्कृति की रक्ष का काम तुलसी दास जी की ‘रामायण’ ने किया है।

मॉरीशस में ईख की खेती और उसके व्यवसाय को जो सफलता मिली है, वह भारतीय वंश के लोगों के कारण मिली है। सारा मॉरीशस कृशि प्रधान द्वीप है, क्योंकि चीनी वहाँ का

प्रमुख अथवा एकमात्र उद्योग है।

भारत में बैठे-बैठे हम यह समझ नहीं पाते कि भारतीय संस्कृति कितनी प्राणवती और चिरायु है। मॉरीशस जाकर हम अपनी संस्कृति की प्राणवत्ता का ज्ञान आसानी से प्राप्त कर लेते हैं। मालिकों की इच्छा तो यही थी कि भारतीय लोग भी क्रिस्तान हो जायें किन्तु भारतीयों ने अत्याचार तो सहे, लेकिन प्रलोभनों को ठुकरा दिया। वे अपने धर्म पर डटे रहे और जिस द्वीप में परिस्थितियों ने उन्हें भेज दिया था, उस द्वीप को उन्हांेने छोटा-सा हिन्दुस्तान बना डाला। यह ऐसी सफलता की बात है, जिस पर सभी भारतीयों को गर्व होना चाहिए।

मॉरीशस के प्रत्येक प्रमुख ग्राम में शिवालय होता है। मॉरीशस के प्रत्येक प्रमुख ग्राम में हिन्दू तुलसीकृत रामायण का पाठ करते हैं अथवा ढोलक और झाँझ पर उसका गायन करते हैं। मॉरीशस के मन्दिरों और शिवालयों को मैंने अत्यन्त स्वच्छ और सुरम्य पाया। कितना अच्छा हो यदि हम भारत में भी अपने मन्दिरों और तीर्थस्थलों को उतना ही स्वच्छ और सुरम्य बनायें जितना स्वच्छ वे मॉरीशस में दिखाई देते हैं।

वहाँ का परी तालाब भी हिन्दुओं की ऐकान्तिक भक्ति के कारण पुण्यधाम हो उठा है। परी-तालाब केवल तीर्थ ही नहीं, दृष्य से भी पिकनिक का स्थान है। शिवरात्रि के समय सारे मॉरीशस के हिन्दू श्वेत वस्त्र धारण करके कन्धों पर काँवर लिए जुलूस बाँधकर परी तालाब पर आते हैं और परी तालाब का जल लेकर अपने- अपने गाँव के शिवालय को लौट जाते हैं तथा शिवजी को जल चढ़ाकर अपने घरों में प्रवेश करते हैं। ये सारे काम वे बड़ी ही भक्ति-भावना और पवित्रता से करते हैं। सभी वयस्क लोग उस दिन उजली धोती, उजली कमीज, उजली गाँधी टोपी पहनते हैं। हाँ बच्चे हाफ पैन्ट पहन सकते हैं, लेकिन गाँधी टोपी उस दिन

उन्हें भी पहननी पड़ती है। परी तालाब पर चलने वाला यह मेला मॉरीशस के प्रमुख आकर्शणों में से एक है और उसे देखने को अन्य धर्मों के लोग भी काफी संख्या में आते हैं।

-रामधारी सिंह ‘दिनकर’

रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म सन् 1908 ई0 में सिमरिया, जिला मुंगेर, बिहार में हुआ था। हिन्दी की राष्ट्रीय धारा के कवियों में दिनकर का महत्त्वपूर्ण स्थान है। प्रगतिशीलता और विचारों की गहराई भी आप की विशेषता है। कविता के साथ गद्य लेखन में भी आप को यश प्राप्त है। **'रेणुका'**, **'हुंकार'**, **'रसवन्ती'**, **'सामधेनी'**, **'कुरुक्षेत्र'**, **'रश्मिरथी'** और **'उर्वशी'** आपकी कविता की पुस्तकें हैं। **संस्कृति के चार अध्याय**, **मिट्टी की ओर**, **काव्य की भूमिका** आदि आपकी गद्य रचनाएँ हैं। 24 अप्रैल 1974 में इनका निधन हो गया।

शब्दार्थ -

द्रष्टिपात=देखना। तुच्छातितुच्छ=छोटे से छोटा। निरापद=आपत्ति से रहित, सुरक्षित। क्रेयोल=भोजपुरी और फ्रेंच भाषा के मिश्रण से बनी एक प्रकार की बोली जो मॉरीशस में बोली जाती है। बाज-बाज=कोई-कोई। प्राणवत्ता=जीवित होने का भाव, शक्ति सम्पन्न। क्रिस्तान=ईसाई धर्म मानने वाले। ऐकान्तिक=एक निश्ठ। पुण्यधाम=पवित्र स्थान, पुण्य का स्थान। काँवर=बहँगी। सुरम्य=अत्यन्त मनोहर। वयस्क=बालिग।

प्रश्न-अभ्यास

यात्रा वृत्तान्त से

1.दिये गये विकल्पों में से विकल्प छाँटकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(क) मॉरीशस की जनसंख्या के .... प्रतिशत लोग भारतीय मूल के हैं।

(76, 67, 17, 68)

(ख) मॉरीशस में भारतीय संस्कृति की रक्ष का काम तुलसीदास जी की .... ने किया है।(विनयपत्रिका, रत्नावली, रामायण, गीता)

(ग) मॉरीशस की दूसरी जनभाषा .... को ही मानना पड़ेगा।(भोजपुरी, अंग्रेजी, क्रेयोल, फ्रेंच)

2.पाठ में आये मॉरीशस के उन सभी गलियों और मोहल्लों के नाम लिखिए, जो अपने देश में भी हैं ?

3.लेखक ने मॉरीशस को 'छोटे पैमाने पर भारत' ही कहा है, क्यों ?

विचार और कल्पना

1. आप अपने माता-पिता के साथ किसी स्थान की यात्रा अवष्य किये होंगे। उस स्थान की विशेशताओं के साथ अपने अनुभव के बारे में लिखिए।

2. लेखक ने मॉरीशस की यात्रा की, जहाँ भारतीय मूल के लोग बड़ी संख्या में हैं। आपको यदि अवसर मिले तो आप किन देशों की यात्रा करना चाहेंगे, जहाँ भारतीय मूल के लोग अधिक संख्या में रहते हैं।

कुछ करने को

1.पुस्तकालय से विश्व का मानचित्र लेकर हिन्दमहासागर एवं मॉरीशस की स्थिति को रेखांकित कीजिए।

2. द्वीप शब्द से कई शब्द बनाये जा सकते हैं, जैसे- महाद्वीप, प्रायद्वीप, लघुद्वीप। पता कीजिए इनमें क्या अंतर है।

भाषा की बात

1.निम्नलिखित वाक्य में आयी हुई क्रियाओं और संज्ञापदों को रेखंाकित कीजिए-

मॉरीशस में ईख की खेती और उसके व्यवसाय को जो सफलता मिली है वह भारतीय वंश के लोगों के कारण मिली है। सारा मॉरीशस कृशि प्रधान द्वीप है, क्योंकि चीनी वहाँ का प्रमुख अथवा एक मात्रउद्योग है।

2.कुछ वाक्य मिश्रित वाक्य होते हैं, जिसमें एक प्रधान वाक्य होता है और उसके सहायक एक अथवा एक से अधिक उपवाक्य होते हैं। जिसका, जहाँ, और आदि लगाकर उपवाक्यों को जोड़ा जाता है।

निम्नलिखित में से कौन-सा अंश प्रधान वाक्य है और कौन-सा सहायक उपवाक्य है- मॉरीशस वह देश है, जिसका कोई भी हिस्सा समुद्र से पन्द्रह मील से ज्यादा दूर नहीं है। मॉरीशस वह देश है जहाँ की जनसंख्या के 67 प्रतिशत लोग भारतीय मूल के हैं।

3.निम्नलिखित मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

लोभ का जगना, सड़क छानना, मोर्चे पर आगे बढ़ना।

4.पाठ में निम्नलिखित शब्द हिन्दी भाषा में प्रचलित दूसरी भाषा अंग्रेजी, अरबी तथा फारसी के आये हुए हैं। इन शब्दों में से अंग्रेजी, अरबी तथा फारसी के शब्दों को अलग-अलग छाँटकर लिखिए-

इजाजत, सर्विस, एयर इण्डिया, पैमाना, नेशनल पार्क, नजर, रकबा, क्रिस्तान, मोटरों, बाकी, बखूबी, पिकनिक।

5.तुच्छ+ अति+ तुच्छ से 'तुच्छातितुच्छ' शब्द बनता है जिसका अर्थ है तुच्छ से भी तुच्छ। इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों से नये शब्द बनाइए- दीर्घ, न्यून, उच्च, सूक्ष्म।

इसे भी जानें

विश्व की सभी भाषाओं में 'चीनी भाषा' बोलने वालों की संख्या सर्वाधिक है।

10. ईदगाह

(प्रस्तुत कहानी 'ईदगाह' में लेखक ने बाल-मनोविज्ञान का सुन्दर चित्रण करते हुए बालक हामिद के प्रति दादी के वात्सल्य को और दादी के प्रति हामिद के प्रगाढ़ प्रेम को दिखाया है।)

(1)

रमजान के पूरे तीस रोजों के बाद आज ईद आयी है। कितना मनोहर, कितना सुहावना प्रभात है। वृक्षों पर कुछ अजीब हरियाली है, खेतों में कुछ अजीब रौनक है, आसमान पर कुछ अजीब लालिमा है। आज का सूर्य देखो, कितना प्यारा, कितना शीतल है, मानो संसार को ईद की बधाई दे रहा है। गाँव में कितनी हलचल है। ईदगाह जाने की तैयारियाँ हो रही हैं। किसी के कुरते में बटन नहीं है। पड़ोस के घर से सूई-धागा लेने दौड़ा जा रहा है। किसी के जूते कड़े हो गये हैं। उनमें तेल डालने के लिए तेली के घर भागा जाता है। जल्दी-जल्दी बैलों को सानी-पानी दे दें। ईदगाह से लौटते-लौटते दोपहर हो जायेगी। तीन कोस का पैदल रास्ता, फिर सैकड़ों आदमियों से मिलना-भेंटना। दोपहर के पहले लौटना असम्भव है। लड़के सबसे ज्यादा प्रसन्न हैं। किसी ने एक रोजा रखा है, वह भी दोपहर तक, किसी ने वह भी नहीं, लेकिन ईदगाह जाने की खुशी उनके हिस्से की चीज है। रोजे बड़े-बूढ़ों के लिए होंगे। इनके लिए तो ईद है। रोज ईद का नाम रटते थे। आज वह आ गयी। अब जल्दी पड़ी है कि लोग ईदगाह क्यों नहीं चलते। इन्हें गृहस्थी की चिन्ताओं से क्या प्रयोजन? सेवँइयों के लिए दूध और शक्कर घर में है या नहीं, इनकी बला से ये तो सेवँइयाँ खायेंगे। वह क्या जाने कि अब्बाजान क्यों बदहवास चैधरी कायमअली के घर दौड़े जा रहे हैं। उन्हें क्या खबर कि

चैधरी आज आँखे बदल लें तो यह सारी ईद मुहर्रम हो जाय ? उनकी अपनी जेबों में तो कुबेर का धन भरा हुआ है। बार-बार जेब से अपना खजाना निकाल कर गिनते हैं और खुश होकर फिर रख लेते हैं। महमूद गिनता है, एक-दो, दस-बारह। उसके पास बारह पैसे हैं। मोहसिन के पास एक, दो, तीन, आठ, नौ, पन्द्रह पैसे हैं। इन्हीं अनगिनती पैसों में अनगिनती चीजें लायेंगे- खिलौने, मिठाइयाँ, बिगुल, गेंद और न जाने क्या-क्या ? और सबसे ज्यादा प्रसन्न है हामिद। वह चार-पाँच साल का गरीब सूरत, दुबला-पतला लड़का, जिसका बाप गत-वर्ष हैजे की भेंट हो गया और माँ न जाने क्यों पीली होती-होती एक दिन मर गयी। किसी को पता न चला, क्या बीमारी है। कहती भी तो कौन सुनने वाला था। दिल पर जो कुछ बीतती थी, वह दिल में ही सहती थी और जब न सहा गया तो संसार से विदा हो गयी। अब हामिद अपनी बूढ़ी दादी अमीना की गोद में सोता है और उतना ही प्रसन्न है। उसके अब्बाजान रुपये कमाने गये हैं। बहुत-सी थैलियाँ लेकर आयेंगे। अम्मीजान अल्लाह मियाँ के घर से उसके लिए बड़ी-बड़ी चीजें लाने गयी है, इसलिए हामिद प्रसन्न है और फिर बच्चों की आशा। उनकी कल्पना तो राई का पर्वत बना लेती है। हामिद के पाँव में जूते नहीं हैं, सिर पर एक पुरानी-धुरानी टोपी है, जिसका गोट काला पड़ गया है, फिर भी वह प्रसन्न है। अब उसके अब्बाजान थैलियाँ और अम्मीजान नियामतें लेकर आयेंगी, तो वह दिल के अरमान निकाल लेगा। तब देखेगा महमूद, मोहसिन, नूरे और सम्मी कहाँ से उतने पैसे निकालेंगे। अभागिन अमीना अपनी कोठरी में बैठी रो रही है। आज ईद का दिन और उसके घर में दाना नहीं। आज आबिद होता तो क्या इसी तरह ईद आती और चली जाती। इस अन्धकार और निराशा में वह डूबी जा रही थी। किसने बुलाया था इस निगोड़ी ईद को। इस घर में उसका काम नहीं है, लेकिन हामिद। उसे किसी के मरने-जीने से क्या मतलब ?

उसके अन्दर प्रकाश है, बाहर आशा। विपत्ति अपना सारा दल-बल लेकर आये, हामिद की आनन्द-भरी चितवन उसका विध्वंस कर देगी।

हामिद भीतर जाकर दादी से कहता है-- तुम डरना नहीं अम्मा मैं सबसे पहले आऊँगा। बिलकुल न डरना।

अमीना का दिल कचोट रहा है। गाँव के बच्चे अपने-अपने बाप के साथ जा रहे हैं। हामिद के बाप अमीना के सिवा और कौन है। उसे कैसे अकेले मेले जाने दे। उसी भीड़-भाड़ में बच्चा कहीं खो जाय तो क्या हो ? नहीं, अमीना उसे यों न जाने देगी। नन्हीं-सी जान। तीन कोस चलेगा कैसे। पैर में छाले पड़ जायेंगे। जूते भी तो नहीं है। वह थोड़ी-थोड़ी दूर पर उसे गोद ले लेगी, लेकिन यहाँ सेवँइयाँ कौन पकायेगा। पैसे होते तो लौटते-लौटते सब सामग्री जमा करके चटपट बना लेती। यहाँ तो घंटों चीजें जमा करते लगेंगे। माँगे ही का तो भरोसा ठहरा। उस दिन फहीमन के कपड़े सिये थे। आठ आने पैसे मिले थे। उस अठन्नी को ईमान की तरह बचाती चली आती थी इसी ईद के लिए, लेकिन कल ग्वालन सिर पर सवार हो गयी तो क्या करती ? हामिद के लिए कुछ नहीं है, तो दो पैसे का दूध तो चाहिए ही। अब तो कुल दो आने पैसे बच रहे हैं। तीन पैसे हामिद की जेब में, पाँच अमीना के बटुवे में।

गाँव से मेला चला और बच्चांे के साथ हामिद भी जा रहा था। कभी सबके सब दौड़ कर आगे निकल जाते। फिर किसी पेड़ के नीचे खड़े होकर साथ वालों का इन्तजार करते। ये लोग क्यों इतना धीरे-धीरे चल रहे हैं। हामिद के पैरों में तो जैसे पर लग गये हैं। वह कभी थक सकता है? शहर का दामन आ गया।

बड़ी-बड़ी इमारतें आने लगीं, यह अदालत है, यह कालेज है, यह क्लब-घर है। इतने बड़े कालेज में कितने लड़के पढ़ते होंगे। सब लड़के नहीं हैं जी। बड़े-बड़े आदमी हैं, सच उनकी

बड़ी-बड़ी मूँछे हैं। इतने बड़े हो गये, अभी पढ़ने जाते हैं। न जाने कब तक पढ़ेंगे और क्या करेंगे इतना पढ़ कर। हामिद के मदरसे में दो-तीन बड़े-बड़े लड़के हैं, बिलकुल तीन कौड़ी के रोज मार खाते हैं, काम से जी चुराने वाले। इस जगह भी उसी तरह के लोग होंगे और क्या ? क्लब-घर में जादू होता है। सुना है यहाँ मुरदे की खोपड़ियाँ दौड़ती हैं और बड़े-बड़े तमाशे होते हैं, पर किसी को अन्दर नहीं जाने देते।

सहसा ईदगाह नजर आया। ऊपर इमली के घने वृक्षों की छाया। नीचे पक्का फर्श है, जिस पर जाजिम बिछा हुआ है और रोजेदारों की पंक्तियाँ एक के पीछे एक न जाने कहाँ तक चली गयी हैं। पक्के जगत के नीचे तक, जहाँ जाजिम भी नहीं है। नये आने वाले आकर पीछे की कतार में खड़े हो जाते हैं। आगे जगह नहीं है। यहाँ कोई धन और पद नहीं देखता। इस्लाम की नजर में सब बराबर हैं। इन ग्रामीणों ने भी वजू किया और पिछली पंक्ति में खड़े हो गये। कितना सुन्दर संचालन है, कितनी सुन्दर व्यवस्था ? लाखों सिर एक साथ सिजदे में झुक जाते हैं, फिर सब-के-सब एक साथ खड़े हो जाते हैं, एक साथ झुकते हैं और एक साथ घुटनों के बल बैठ जाते हैं। कई बार यही क्रिया होती है, जैसे बिजली की लाखों बत्तियाँ एक साथ प्रदीप्त हों और एक साथ बुझ जायँ, और यही क्रम चलता रहे। कितना अपूर्व दृष्य था, जिसकी सामूहिक क्रियाएँ, विस्तार और अन्ततः हृदय को श्रद्धा, गर्व और आत्मानन्द से भर देती थीं, मानों भ्रातृत्व का एक सू= इन समस्त आत्माओं को एक लड़ी में पिरोये हुए है।

(2)

नमाज़ खत्म हो गयी है। लोग आपस में गले मिल रहे हैं। तब मिठाई और खिलौने की दुकानों पर धावा होता है। ग्रामीणों का यह दल इस विषय में बालकों से कम उत्साही नहीं

हैं। यह देखो, हिंडोला है। एक पैसा देकर चढ़ जाओ। कभी आसमान पर जाते हुए मालूम होंगे, कभी जमीन पर गिरते हुए। यह चर्खी है, लकड़ी के हाथी, घोड़े, ऊँट छड़ों से लटके हुए हैं। एक पैसा देकर बैठ जाओ और पच्चीस चक्करों का मजा लो। महमूद और मोहसिन और नूरे और सम्मी इन घोड़ों और ऊँटों पर बैठते हैं। हामिद दूर खड़ा है। तीन ही पैसे तो उसके पास हैं। अपने कोश का तिहाई जरा-सा-चक्कर खाने के लिए नहीं दे सकता।

सब चर्खियों से उतरते हैं। अब खिलौने लेंगे। इधर दुकानों की कतार लगी हुई है। तरह-तरह के खिलौने हैं-- सिपाही और गुजरिया, राजा और वकील, भिश्ती और धोबिन और साधू। वाह! कितने सुन्दर खिलौने हैं ? अब बोलना ही चाहते हैं। महमूद सिपाही लेता है, खाकी वर्दी और लाल पगड़ी वाला, कन्धे पर बन्दूक रखे हुए। मालूम होता है, अभी कवायद किये चला आ रहा है। मोहसिन को भिश्ती पसन्द आया। कमर झुकी है, ऊपर मशक रखे हुए है। मशक का मुँह एक हाथ से पकड़े हुए है। कितना प्रसन्न है? शायद कोई गीत गा रहा है। बस, मशक से पानी उड़ेला ही चाहता है। नूरे को वकील से प्रेम है। कैसी विद्वत्ता है उसके मुख पर? काला चोंगा, नीचे सफेद अचकन, अचकन के सामने की जेब में घड़ी, सुनहरी जंजीर, एक हाथ में कानून का पोथा लिए हुए। मालूम होता है, अभी किसी अदालत से जिरह या बहस किये चले आ रहे हैं। यह सब दो-दो पैसे के खिलौने हैं। हामिद के पास कुल तीन पैसे हैं, इतने महँगे खिलौने वह कैसे ले? खिलौना कहीं हाथ से छूट पड़े तो चूर-चूर हो जाय। जरा पानी पड़े तो सारा रंग धुल जाय। ऐसे खिलौने लेकर वह क्या करेगा, किस काम के?

हामिद खिलौने की निन्दा करता है-- मिट्टी ही के तो हैं, गिरे तो चकनाचूर हो जायँ, लेकिन

ललचायी हुई

आँखों से खिलौने को देख रहा है और चाहता है कि जरा देर के लिए उन्हें हाथ में ले सकता। उसके हाथ अनायास ही लपकते हैं, लेकिन लड़के इतने त्यागी नहीं होते, विशेशकर जब अभी नया शौक है। हामिद ललचाता रह जाता

खिलौने के बाद मिठाइयाँ आती हैं। किसी ने रेवड़ियाँ ली हैं, किसी ने गुलाबजामुन, किसी ने सोहनहलुआ। मजे से खा रहे हैं। हामिद उनकी बिरादरी से पृथक है। अभागे के पास तीन पैसे हैं। क्यों नहीं कुछ लेकर खाता? ललचायी आँखों से सबकी ओर देखता है।

मोहसिन कहता है -- हामिद रेवड़ी ले जा, कितनी खुशबूदार है।

हामिद को सन्देह हुआ, यह केवल क्रूर विनोद है, मोहसिन इतना उदार नहीं है, लेकिन यह जानकर भी वह उसके पास जाता है। मोहसिन दोने से एक रेवड़ी निकाल कर हामिद की ओर बढ़ाता है। हामिद हाथ फैलाता है। मोहसिन रेवड़ी अपने मुँह में रख लेता है। महमूद, नूरे और सम्मी खूब तालियाँ बजा-बजाकर हँसते हैं। हामिद खिसिया जाता है।

मोहसिन -- अच्छा, अबकी जरूर देंगे हामिद, अल्ला कसम, ले जाओ।

हामिद -- रखे रहो। क्या मेरे पास पैसे नहीं हैं।

सम्मी -- तीन ही पैसे तो हैं। तीन पैसे में क्या-क्या लोगे ?

महमूद -- हमसे गुलाब जामुन ले जाओ हामिद, मोहसिन बदमाश है।

हामिद -- मिठाई कौन बड़ी नेमत है। किताब में इसकी कितनी बुराइयाँ लिखी हैं।

मोहसिन -- लेकिन दिल में कह रहे होंगे कि मिले तो खा लें। अपने पैसे क्यों नहीं निकालते?

महमूद -- हम समझते हैं इसकी चालाकी। जब हमारे सारे पैसे खर्च हो जायेंगे, तो हमें ललचा-ललचाकर खायेगा।

मिठाइयों के बाद कुछ दुकानें लोहे की चीजों की हैं। कुछ गिलट और कुछ नकली गहनों की। लड़कों के लिए यहाँ कोई आकर्शण नहीं था। वह सब आगे बढ़ जाते हैं। हामिद लोहे की दुकान पर रुक जाता है। कई चिमटे रखे हुए थे। उसे ख्याल आया, दादी के पास चिमटा नहीं है। तवे से रोटियाँ उतारती हैं, तो हाथ जल जाता है, अगर वह चिमटा ले जाकर दादी को दे दे, तो वह कितनी प्रसन्न होंगी। फिर उनकी उँगलियाँ कभी न जलेंगी। घर में एक काम की चीज हो जायेगी। खिलौने से क्या फायदा? हामिद के साथी आगे बढ़ गये हैं। सबील पर सब-के-सब शर्बत पी रहे हैं। देखो, सब कितने लालची हैं? इतनी मिठाइयाँ लीं, मुझे किसी ने एक भी न दी। उस पर कहते हैं, मेरे साथ खेलो। मेरा यह काम करो। अब अगर किसी ने कोई काम करने को कहा, तो पूछूँगा। खायें मिठाइयाँ आप मुँह सड़ेगा, फोड़े-फुन्सियाँ निकलंेगी, आप ही जबान चटोरी हो जायेगी। सब-के-सब खूब हँसेंगे कि

हामिद ने चिमटा लिया है। हँसें। मेरी बला से। उसने दुकानदार से पूछा-- यह चिमटा कितने का है?

दुकानदार ने उसकी ओर देखा और कोई आदमी साथ न देख कर कहा-- यह तुम्हारे काम का नहीं है जी!

-बिकाऊ क्यों नहीं है? और यहाँ क्यों लाद लाये हैं ?

-बिकाऊ है क्यों नहीं ?

-तो बताते क्यों नहीं, कै पैसे का है ?

-छह पैसे लगेंगे।

हामिद का दिल बैठ गया।

-ठीक-ठीक पाँच पैसे लगेंगे, लेना हो तो लो, नहीं चलते बनो। हामिद ने कलेजा मजबूत करके कहा--तीन पैसे लोगे।

यह कहता हुआ वह आगे बढ़ गया कि दुकानदार की घुड़कियाँ न सुने। लेकिन दुकानदार ने घुड़कियाँ नहीं दीं। बुलाकर चिमटा दे दिया। हामिद ने उसे इस तरह कन्धे पर रखा, मानो बन्दूक है और शान से अकड़ता हुआ संगियों के पास आया। जरा सुनें, सब-के-सब क्या-क्या आलोचनाएँ करते हैं।

मोहसिन ने हँसकर कहा-- यह चिमटा क्यों लाया पगले ? इसे क्या करेगा? हामिद ने चिमटे को जमीन पर पटक कर कहा-- जरा अपना भिश्ती जमीन पर गिरा दो। सारी पसलियाँ चूर-चूर हो जायँ बच्चा की।

महमूद बोला-- तो यह चिमटा कोई खिलौना है।

हामिद-- खिलौना क्यों नहीं। अभी कन्धे पर रखा बन्दूक हो गयी। हाथ में लिया, फकीरों का चिमटा हो गया। चाहूँ तो इससे मजीरे का काम ले सकता हूँ। एक चिमटा जमा दूँ तो तुम लोगों के सारे खिलौनों की जान निकल जाय। तुम्हारे खिलौने कितना ही जोर लगावें, वे मेरे चिमटे का बाल भी बाँका नहीं कर सकते। मेरा बहादुर शेर है-- चिमटा।

सम्मी ने खँजरी ली थी। प्रभावित होकर बोला- मेरी खँजरी से बदलोगे। दो आने की है।

हामिद ने खँजरी की ओर उपेक्ष से देखा-मेरा चिमटा चाहे तो तुम्हारी खँजरी का पेट फाड़ डाले। बस, एक चमड़े की झिल्ली लगा दी, ढब-ढब बोलने लगी। जरा-सा पानी लग जाय तो खतम हो जाय। मेरा बहादुर चिमटा, आग में, पानी में, तूफान में बराबर डटा खड़ा रहेगा।

चिमटे ने सभी को मोहित कर लिया, लेकिन अब पैसे किसके पास धरे हैं। फिर मेले से दूर निकल आये हैं, नौ कब के बज गये, धूप तेज हो रही है। घर पहुँचने की जल्दी हो रही है। बाप से जिद भी करें, तो चिमटा नहीं मिल सकता है। हामिद है बड़ा चालाक। इसीलिए बदमाश ने अपने पैसे बचा रखे थे।

अब बालकों के दो दल हो गये हैं। मोहसिन, महमूद, सम्मी और नूरे एक तरफ हैं, हामिद अकेला दूसरी तरफ शास्त्रार्थ हो रहा है।

मोहसिन ने एड़ी-चोटी का जोर लगा कर कहा-- अच्छा पानी तो नहीं भर सकता।

हामिद ने चिमटे को सीधा खड़ा करके कहा-- भिश्ती को एक डाँट बतायेगा, तो दौड़ा हुआ पानी लाकर द्वार में छिड़कने लगेगा।

मोहसिन परास्त हो गया पर महमूद ने कुमुक पहुँचायी अगर बच्चा पकड़ जायें तो अदालत में बँधे-बँधे फिरेंगे। तब तो वकील साहब के ही पैरों पड़ेंगे।

हामिद इस प्रबल तर्क का जबाब न दे सका। उसने पूछा--हमें पकड़ने कौन आयेगा?

नूरे ने अकड़ कर कहा-- यह सिपाही बन्दूक वाला।

हामिद ने मुँह चिढ़ाकर कहा, यह बेचारे हम बहादुर रुस्तमे-हिन्द को पकड़ेंगे। अच्छा लाओ अभी जरा कुश्ती हो जाय। इसकी सूरत देखकर दूर से भागेंगे। पकड़ेंगे क्या बेचारे ?

मोहसिन को एक नयी चोट सूझ गयी- तुम्हारे चिमटे का मुँह रोज आग में जलेगा।

उसने समझा था कि हामिद लाजवाब हो जायेगा: लेकिन यह बात न हुई। हामिद ने तुरन्त जवाब दिया-- आग में बहादुर ही कूदते हैं जनाब, आग में कूदना वह काम है, जो यह रुस्तमें-हिन्द ही कर सकता है।

महमूद ने एक जोर लगाया-- वकील साहब कुर्सी-मेज पर बैठेंगे, तुम्हारा चिमटा तो बावरचीखाने में जमीन पर पड़ा रहेगा।

इस तर्क ने सम्मी और नूरे को भी सजीव कर दिया। कितने ठिकाने की बात कही है पट्ठे ने? चिमटा बावरचीखाने में पड़े रहने के सिवा और क्या कर सकता है।

हामिद को कोई फड़कता हुआ जवाब न सूझा तो उसने धाँधली षुरू की -- मेरा चिमटा बावरचीखाने में नहीं रहेगा। वकील साहब कुर्सी पर बैठेंगे तो जाकर उन्हें जमीन पर पटक देगा और उनका कानून उनके पेट में डाल देगा।

बात कुछ बनी नहीं। खासी गाली-गलौज थी। कानून को पेट में डालने वाली बात छा गयी। ऐसी छा गयी कि तीनों शूरमा मुँह ताकते रह गये, मानो कोई धेलचा कनकौआ किसी

गंडेवाले कनकौए को काट गया हो। कानून मुँह से बाहर निकलने वाली चीज है। उसको पेट के अन्दर डाल दिया जावे, बेतुकी-सी बात होने पर भी कुछ नयापन रखती है। हामिद ने मैदान मार लिया। उसका चिमटा रुस्तमे-हिन्द है। अब इसमें मोहसिन, महमूद, नूरे, सम्मी किसी को भी आपत्ति नहीं हो सकती।

विजेता को हारने वालों से जो सत्कार मिलना स्वाभाविक है, वह हामिद को भी मिला। औरों ने तीन-तीन, चार-चार आने पैसे खर्च किये: पर कोई काम की चीज न ले सके। हामिद ने तीन पैसे मंे रंग जमा लिया। सच ही तो है, खिलौनों का क्या भरोसा ? टूट-फूट जायँगे। हामिद का चिमटा बना रहेगा बरसों।

सन्धि की शर्त तय होने लगी। मोहसिन ने कहा-- जरा अपना चिमटा दो, हम भी देखें, तुम हमारा भिश्ती लेकर देखो।

महमूद और नूरे ने भी अपने-अपने खिलौने पेश किये।

हामिद को इन शर्तों के मानने में कोई आपत्ति न थी। चिमटा बारी-बारी से सबके हाथ में गया और उनके खिलौने बारी-बारी से हामिद के हाथ में आये। कितने खूबसूरत खिलौने हैं।

हामिद ने हारने वाले के आँसू पोंछे-- मैं तुम्हें चिढ़ा रहा था, सच! यह लोहे का चिमटा भला इन खिलौनों की क्या बराबरी करेगा? मालूम होता है अब बोले, अब बोले।

लेकिन मोहसिन की पार्टी को इस दिलासे से सन्तोश नहीं होता। चिमटे का सिक्का खूब बैठ गया है। चिपका हुआ टिकट पानी से नहीं छूट रहा है।

मोहसिन-- लेकिन इन खिलौनों के लिए कोई हमें दुआ तो न देगा।

महमूद -- दुआ के लिए फिरते हैं। उल्टे मार न पड़े। अम्मँा जरूर कहेंगी कि मेले में मिट्टी के खिलौने तुम्हें मिले।

हामिद को स्वीकार करना पड़ा कि खिलौनों को देखकर किसी की मँा इतनी खुश न होंगी, जितनी दादी चिमटे को देखकर होंगी। तीन पैसों ही में तो उसे सब कुछ करना था, और उन पैसों के इस उपयोग पर पछतावे की बिल्कुल जरूरत न थी। फिर अब तो चिमटा रुस्तमे-हिन्द है और सभी खिलौनों का बादशाह।

रास्ते में महमूद को भूख लगी। उसके बाप ने केले खाने को दिये। महमूद ने केवल हामिद को साझी बनाया। उसके अन्य मित्र मुँह ताकते रह गये। यह उस चिमटे का प्रसाद था।

3

ग्यारह बजे सारे गाँव में हलचल मच गयी। मेले वाले आ गये। मोहसिन की छोटी बहन ने दौड़कर भिश्ती उसके हाथ से छीन लिया और मारे खुशी के जो उछली, तो मियँा भिश्ती नीचे आ रहे और सुरलोक सिधारे। इस पर भाई-बहिन में मार-पीट हुई। दोनों खूब रोये। उनकी अम्मा यह शोर सुनकर बिगड़ीं और दोनों को ऊपर से दो-दो चँाटे और लगाये।

मियाँ नूरे के वकील का अन्त उसके प्रतिश्ठानुकूल इससे ज्यादा गौरवमय हुआ। वकील जमीन पर या ताक पर तो नहीं बैठ सकता। उसकी मर्यादा का विचार तो करना ही होगा। दीवार में दो खूटियाँ गाड़ी गयीं। उन पर एक लकड़ी का पटरा रखा गया। पटरे पर कागज का कालीन बिछाया गया। वकील साहब राजा भोज की भाँति सिंहासन पर विराजे। नूरे ने उन्हें पंखा झलना षुरू किया। अदालतों में खस की टट्टियाँ और बिजली के पंखे रहते हैं। क्या यहाँ मामूली पंखा भी न हो। कानून की गर्मी दिमाग पर चढ़ जायगी कि नहीं। बाँस का पंखा आया और नूरे हवा करने लगे। मालूम नहीं, पंखे की हवा से या पंखे की चोट से

वकील साहब स्वर्गलोक से म=्यलोक में आ रहे और उनका माटी का चोला माटी में मिल गया। फिर बड़े जोर-शोर से मातम हुआ और वकील साहब की अस्थि घूरे पर डाल दी गयी।

अब रहा महमूद का सिपाही। उसे चटपट गाँव का पहरा देने का चार्ज मिल गया, लेकिन पुलिस का सिपाही कोई साधारण व्यक्ति तो था नहीं, जो अपने पैरों चले। वह पालकी पर चलेगा। एक टोकरी आयी, उसमें कुछ लाल रंग के फटे-पुराने चिथड़े बिछाये गये, जिसमें सिपाही साहब आराम से लेटें। नूरे ने यह टोकरी उठायी और अपने द्वार का चक्कर लगाने लगे। उनके दोनों छोटे भाई सिपाही की तरफ से 'छोनेवाले, जागते लहो' पुकारते चलते हैं। मगर रात तो अँधेरी ही होनी चाहिए। महमूद को ठोकर लग जाती है। टोकरी उसके हाथ से छूटकर गिर पड़ती है और मियाँ सिपाही अपनी बन्दूक लिये जमीन पर आ जाते हैं और उनकी एक टाँग में विकार आ जाता है। महमूद को आज ज्ञात हुआ कि वह अच्छा डॉक्टर है। उसको ऐसा मरहम मिल गया है, जिससे वह टूटी टाँग को आनन-फानन जोड़ सकता है। गूलर का दूध आता है। टाँग जोड़ दी जाती है; लेकिन सिपाही को ज्यों ही खड़ा किया जाता है, टाँग जवाब दे जाती है। शल्य क्रिया असफल हुई, तब उसकी दूसरी टाँग भी तोड़ दी जाती है। अब कम से कम एक जगह आराम से बैठ तो सकता है।

अब मियाँ हामिद का हाल सुनिए। अमीना उसकी आवाज सुनते ही दौड़ी और उसे गोद में उठाकर प्यार करने लगी। सहसा उसके हाथ में चिमटा देखकर वह चैंकी।

-यह चिमटा कहाँ था ?

-मैंने मोल लिया है।

-कै पैसे में ?

-तीन पैसे में

अमीना ने छाती पीट ली। यह कैसा बेसमझ लड़का है कि दो पहर हुआ, कुछ खाया न पिया। लाया क्या यह चिमटा। सारे मेले में तुझे और कोई चीज न मिली, जो यह लोहे का चिमटा उठा लाया।

हामिद ने अपराधी भाव से कहा-- तुम्हारी उँगलियाँ तवे से जल जाती थीं, इसलिए मैंने इसे ले लिया।

बुढिया का क्रोध तुरन्त स्नेह में बदल गया, और स्नेह भी वह नहीं, जो प्रगल्भ होता है और अपनी सारी कसक शब्दों मंे बिखेर देता है। यह मूक स्नेह था, खूब ठोस, रस और स्वाद से भरा हुआ । बच्चे मंे कितना त्याग, कितना सद्भाव और कितना विवेक है! दूसरों को खिलौने लेते और मिठाई खाते देखकर इसका मन कितना ललचाया होगा! इतना जब्त इससे हुआ कैसे। वहँा भी इसे अपनी बुढिया दादी की याद बनी रही। अमीना का मन गद्गद हो गया।

और अब एक बड़ी विचित्र बात हुई। हामिद के इस चिमटे से भी विचित्र। बच्चे हामिद ने बूढ़े हामिद का पार्ट खेला था। बुढिया अमीना बालिका अमीना बन गयी। वह रोने लगी। दामन फैलाकर हामिद को दुआएँ देती जाती थी और आँसू की बड़ी-बड़ी बूँदंे गिराती जाती थी। हामिद इसका रहस्य क्या समझता।

- प्रेमचन्द

प्रेमचन्द का जन्म सन् 1880 ई0 में लमही, वाराणसी में हुआ था। ये कहानी और उपन्यास सम्राट के रूप में प्रसिद्ध हैं। इनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं– **'सेवासदन'**, **'निर्मला'**, **'रंगभूमि'**, **'कर्मभूमि'**, **'गबन'**, **'गोदान'** आदि। इनकी कहानियों का संग्रह **'मानसरोवर'** नाम से आठ भागों में प्रकाशित है। इनका साहित्य समाज सुधार, राष्ट्रीय भावना और सामान्य जनजीवन से परिपूर्ण है। इनका निधन सन् 1936 ई0 में हुआ।

शब्दार्थ -

रोजा=उपवास, अनाहार। नियामत=ईश्वर का दिया हुआ धन, अच्छी वस्तुएँ। विध्वंस=विनाश, नश्ट। जाजिम=बड़ी दरी के ऊपर बिछाने की बड़ी चादर। वजू=नमाज से पहले यथाविधि हाथ-पँाव और मुँह धोना। सिजदा=जमीन पर सिर रखकर ईश्वर को प्रणाम करना। प्रदीप्त=प्रकाशित होना। आत्मानन्द=आन्तरिक सुख। कवायद=युद्ध कला का अभ्यास, परेड। मशक=चमड़े का बना थैला जिसमें भिश्ती पानी रखता है। सबील=वह स्थान जहँा पर लोगों को पानी, शर्बत आदि पिलाया जाये, प्याऊ। कुमुक=सहायता, मदद। बावरचीखाना=रसोईघर। अस्थि=हड्डी। आनन-फानन=तुरन्त,

शीघ्र, तत्काल। प्रगल्भ=वाक्पटु (वाणी की चतुराई)। जब्त=सहन, बर्दाश्त। ईद का मुहर्रम होना=सारी खुशी का शोक में बदल जाना।

प्रश्न-अभ्यास

कहानी से

1. नीचे लिखे शब्दों में से शब्द छाँटकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

(क)हामिद के अब्बाजान का नाम .... था।

(कायमअली, आबिद, महमूद, मोहसिन)

(ख)दुकानदार ने चिमटे का दाम ठीक-ठीक .... पैसे बताया।

(तीन, चार, पाँच, छह)

(ग)हामिद के पास कुल .... पैसे थे।

(तीन, चार, पाँच, छह)

2.किसने क्या खरीदा, तीर (®) के निशान द्वारा जोड़ी बनाइए-

महमूदसिपाही

मोहसिनचिमटा

हामिदखँजरी

सम्मीभिश्ती

3.जब सभी बच्चे घोड़ों और ऊँटों पर बैठकर पच्चीस चक्करों का मजा ले रहे थे, तब हामिद दूर खड़ा क्या सोच रहा था ?

4.हामिद महँगे खिलौने न खरीद सकने पर अपने-आप को कैसे समझा रहा था ?

5.हामिद ने चिमटा क्यों खरीदा ?

6.हामिद के क्या कहने पर बुढिया अमीना का क्रोध तुरन्त स्नेह में बदल गया ?

7.नीचे लिखे गये वाक्यों को कहानी के क्रम में लिखिए-

-सहसा ईदगाह नजर आया।

-हामिद ने चिमटा खरीदा।

-अमीना परेशान थी, हामिद को अकेले मेले कैसे जाने दें।

-बुढिया का क्रोध स्नेह में बदल गया।

-नमाज़ खत्म होने पर लोग गले मिले।

-चिमटे ने सबको मोहित कर लिया।

-अमीना दामन फैलाकर दुआएँ दे रही थी।

विचार और कल्पना

1.आप अपने आस-पास लगने वाले मेले में अवष्य गये होंगे। मेले में आपने क्या-क्या देखा। मेले में आपको कौन-सी चीज अच्छी लगी, जिसे अपने बड़ों को देने की इच्छा जगी ? मेले के दृष्य का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

2.मेले में भीड़-भाड़ अधिक होती है। सोचिए कि किसी मेले में आपके साथ चलने वाला आपका छोटा भाई यदि खो जाय तो आप अपने भाई के खोने की सूचना किसे और कैसे देंगे ?

कुछ करने को

पृथ्वी के चारों ओर परिभ्रमण करते हुए चंद्रमा भी पृथ्वी के साथ-साथ सूर्य का परिभ्रमण करता है। इन्हीं दोनों परिभ्रमणों से वर्ष और मास की गणनाएँ होती हैं। सामान्यत: तीस दिनों के महीने होते हैं जिन्हें चंद्रमा की वार्शिक गति को बारह महीनों में विभाजित करके निर्धारित किया जाता है। तीस दिनों में पंद्रह-पंद्रह दिनों के दो पक्ष होते हैं। जिन पंद्रह दिनों में चंद्रमा बढ़ते-बढ़ते पूर्णिमा तक पहुँचता है, उसे ‘षुक्लपक्ष’ और जिन पंद्रह दिनों में चन्द्रमा घटते-घटते अमावस्या तक जाता है, उसे ‘कृश्णपक्ष’ कहते हैं। इस तरह एक वर्ष के बारह महीनों में छह-छह माह के दो अयन होते हैं। जिन छह महीनों में मौसम का तापमान बढ़ता है, उसे उत्तरायण और जिन छह महीनों में मौसम का तापमान घटता है, उसे दक्षिणायन कहते हंै। संवत् के बारह महीनों के नाम इस प्रकार है- चैत्र, वैशाख, ज्येश्ठ, आशाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्श, पौश, माघ, फाल्गुन। अंग्रेजी कैलेण्डर की वार्शिक गणना सूर्य के चारांे ओर पृथ्वी के परिभ्रमण की अवधि के अनुसार तीन सौ पंैसठ दिनों की होती है। इसके महीनों की गणना पृथ्वी के चारों ओर चंद्रमा के परिभ्रमण पर आधारित नहीं है। इसमें वर्ष के तीन सौ पैंसठ दिनों को ही बारह महीने में विभाजित किया गया है। इस कैलेण्डर के सभी महीने तीस-तीस दिन के नहीं होते। अप्रैल,जून, सितम्बर, नवम्बर- इनके हैं दिन तीस। फरवरी है अट्ठाईस या उनतीस दिन की, बाकी सब इकतीस। नीचे दो प्रकार के कैलेण्डर दिये गये हैं। इन्हें देखकर प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

माघ कृष्ण पक्ष, माघ शुक्ल पक्ष						
[illegible]						
रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
			कृष्ण [illegible] 1	कृष्ण [illegible] 2	कृष्ण [illegible] 3	कृष्ण [illegible] 4
कृष्ण [illegible] 5	कृष्ण [illegible] 6	कृष्ण [illegible] 7	कृष्ण [illegible] 8	कृष्ण [illegible] 9	कृष्ण [illegible] 10	कृष्ण [illegible] 11
कृष्ण [illegible] 12	कृष्ण [illegible] 12	कृष्ण [illegible] 13	कृष्ण [illegible] 14	[illegible] 15	[illegible] 1	[illegible] 2
[illegible]	[illegible] 5	[illegible] 6	[illegible] 7	[illegible] 8	[illegible] 9	[illegible] 10
[illegible] 11	[illegible] 12	[illegible] 13	[illegible] 14	[illegible] 15		

जनवरी फरवरी ईस्वी सन् 2008						
[illegible] जनवरी से [illegible] फरवरी तक						
रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
			23	24	25	26
27	28	29	30	31	1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21		

(क)ऊपर दिये गये कैलेण्डरों में से किस कैलेण्डर में चंद्रमा के अनुसार महीने के दिन दिये गये हैं ?

(ख)दिये गये दोनों कैलेण्डरों में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

(ग)कृशणपक्ष और षुक्लपक्ष का क्या अर्थ होता है ?

भाषा की बात

1.इस पाठ के आधार पर निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखिए -

(क)जिसका जवाब न हो।

(ख)जिसे सहा न जा सके ।

(ग)मन को हरने या आकर्शित करने वाला।

(घ)जिसकी गिनती न की जा सके।

(ङ)जिसको जीता न जा सके।

2.निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

आँखें बन्द करना, पैरों में पर लग जाना, राई का पर्वत करना, एड़ी चोटी का जोर लगाना, बाल बाँका न होना।

3.नीचे दिये गये उदाहरणों के अनुसार दिये गये शब्दों का सन्धि-विच्छेद कीजिए-

आत्मानन्द = आत्मा+आनन्द (आ+आ = आ), शास्=ार्थ = शास्=+अर्थ (अ+अ = आ), प्रतिश्ठानुकूल = प्रतिश्ठा+अनुकूल (आ+अ = आ)।

इच्छानुकूल, धर्मानुकूल, यथावसर, देवाशीश।

4.सूई-धागा और सानी-पानी जैसे पाठ में आये योजक चिह्न (-) वाले शब्द-जोड़ांे को छाँटकर लिखिए। ध्यान रहे कि दोनों शब्द एक जैसे न हों, जैसे- धीरे-धीरे में दोनों शब्द एक ही हैं।

5.‘छोने वाले, जागते लहो’ तोतली बोली में है, इसे शुद्ध भाषा में लिखिए।

6.निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए-

(क) वृक्षों पर कुछ अजीब हरियाली है।

(ख) खेतों में कुछ अजीब रौनक है।

(ग)आसमपरकुछअजीबलालिमाहै।

इसी प्रकार ‘कुछ अजीब’ से पाँच वाक्य और बनाइए।

इसे भी जानें

1.महाकुम्भ का मेला भारत में चार स्थानों पर लगता है-

इलाहाबाद (उत्तरप्रदेश)

नासिक (महाराश्ट्र)

उज्जैन (मध्यप्रदेश)

हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

2. भारत में पषुओं का सबसे बड़ा मेला सोनपुर (बिहार) में लगता है।

11. समर्पण

(प्रस्तुत कविता में देश के प्रति सर्वस्व समर्पण की भावना व्यक्त की गयी है।)

मन समर्पित, तन समर्पित,

और यह जीवन समर्पित।

चाहता हँू देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।

माँ तुम्हारा ऋण बहुत है मैं अकिंचन,

किन्तु इतना कर रहा फिर भी निवेदन,

थाल मंें लाऊँ सजा कर भाल जब भी,

कर दया स्वीकार लेना यह समर्पण।

गान अर्पित, प्राण अर्पित,

रक्त का कण-कण समर्पित।

चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।

माँज दो तलवार को लाओ न देरी,

बाँध दो अब पीठ पर वह ढाल मेरी,

भाल पर मल दो चरण की धूल थोड़ी,

शीश पर आशीश की छाया घनेरी।

स्वप्न अर्पित, प्रश्न अर्पित,

आयु का क्षण-क्षण समर्पित,

चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।

- रामावतार त्यागी

रामावतार त्यागी जी का जन्म सन् 1925 ई0 में मुरादाबाद में हुआ था। 'नया खून' और 'आठवाँ स्वर' इनकी प्रसिद्ध काव्य रचनाएँ हैं। सन् 1985 ई0 में इनका देहावसान हो गया। इनकी कविताओं में देश-भक्ति और मानव जीवन के प्रति गहरी संवेदनाएँ हैं।

शब्दार्थ -

समर्पित = पूरी तरह भेंट किया हुआ। अकिंचन = अत्यन्त निर्धन, दीन-हीन (जिसके पास कुछ न हो)। निवेदन = प्रार्थना, विनती। भाल = मस्तक,ललाट। माँज दो तलवार = तलवार की धार तेज कर दो। ढाल = गैंडे के चमड़े से बना कछुए की पीठ जैसा एक

उपकरण जिसे पीठ पर बाँध कर लोग युद्ध करते थे। यह भाले और तलवार के आघात से रक्ष करती थी। घनेरी = घनी।

प्रश्न-अभ्यास

कविता से

1.सब कुछ समर्पण के बाद भी कवि क्यों सन्तुश्ट नहीं है ?

2.'थाल में भाल सजाने' से कवि का क्या तात्पर्य है ?

3.निम्नलिखित भाव कविता की किन पंक्तियों में व्यक्त हुए हैं -

(क)जननी जन्मभूमि की देन के समक्ष कवि अपने को बहुत दीन-हीन समझ रहा है।

(ख)कवि अपना हर्श-उल्लास और प्राण न्योछावर कर देना चाहता है।

(ग)कवि अपने जीवन की कल्पनाओं, जिज्ञासाओं और आयु को हर क्षण समर्पित करना चाहता है।

(घ)कवि अपने हाथों में तलवार लेकर रणक्षेत्र में कूदना चाहता है।

4.निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए-

(क)भाल पर मल दो चरण की धूल थोड़ी,

शीश पर आशीश की छाया घनेरी।

(ख)गान अर्पित, प्राण अर्पित,

रक्त का कण-कण समर्पित।

विचार और कल्पना

1.हम सभी अपने-अपने ढंग से अपने देश की सेवा कर सकते हैं। आप देश की सेवा कैसे करना चाहेंगे।

2.सैनिक अनेक कठिनाइयाँ सहकर देश की सीमाओं की रक्ष करते हैं। आप अपने विद्यालय की सम्पत्ति और उसकी सीमा की रक्ष किस प्रकार करेंगे, लिखिए।

कुछ करने को

1.नीचे कुछ महान देश-भक्तों के चित्र दिये गये हैं। उन्हें पहचानिए तथा उनके बारे मंे दो-दो वाक्य लिखिए-

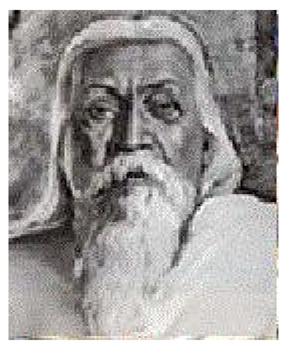

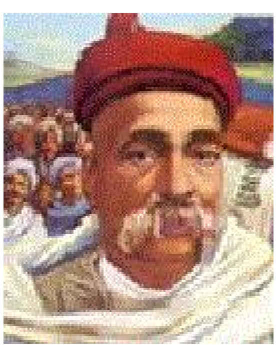

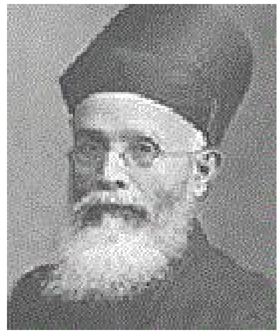 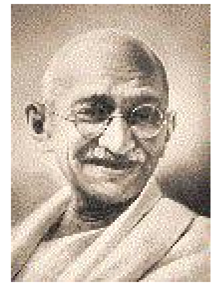

2.निम्नलिखित पंक्तियों को ध्यान से पढ़िए और साथियों से पूछने के लिए पाँच प्रश्न बनाइए-

‘माँज दो तलवार को लाओ न देरी,

बाँध दो अब पीठ पर वह ढाल मेरी,

भाल पर मल दो चरण की धूल थोड़ी,

शीश पर आशीश की छाया घनेरी।’

3.नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं, इनकी मदद से आप भी कविता बनाइए -

सूरज, सवेरे, धूप, पत्ती, खिलाता, महकाता, फूल, पौधे, कली, मुस्काना, गाना, खिली, गन्ध, फल, लाल, पंछी, चहकना, आँख।

भाषा की बात

नीचे कविताओं की तीन पंक्तियाँ दी गयी हैं, इनमें रेखांकित शब्द दो बार आये हैं, इन्हें पुनरुक्त (पुनः+उक्त) शब्द-युग्म कहते हंै।

रक्त का कण-कण समर्पित,

आयु का क्षण-क्षण समर्पित,

नीड़ का तृण-तृण समर्पित।

इस प्रकार के शब्दों के चार जोड़े दिये जा रहे हैं, उन्हंे अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

(क)घर-घर(ख)मीठे-मीठे

(ग)डाली-डाली(घ)चलते-चलते

इसे भी जानें

अशोक चक्र - वीरता या साहस दिखाने या बलिदान के लिए दिया जाने वाला देश का सर्वोच्च वीरता सम्मान है।

12. साप्ताहिक धमाका

(इस पाठ में बाल अखबार के महत्त्व और उपयोगिता का रोमांचकारी वर्णन बड़े ही रोचक ढंग से किया गया है।)

इतवार की सुबह पूरे मुहल्ले में 'साप्ताहिक धमाका' की ही चर्चा थी। फुलस्केप कागजों पर कार्बन लगाकर हाथ से लिखा गया 'साप्ताहिक धमाका' का पहला अंक सभी ने सुबह-सुबह अपने घर के दरवाजे पर पड़ा पाया था। उस अंक की मुख्य खबर बड़े-बड़े अक्षरों में थी: 'लाला धनीराम के मसालों में मिलावट।' फिर छोटे अक्षरों में पूरा विवरण दिया गया था। मसाले, चीनी, अनाज आदि में लाला ने जो मिलावट की थी, उसके प्रति सबको आगाह किया गया था। लाला के घिसे हुए पुराने बाटों की चर्चा थी। कम तौलने की कला में माहिर लाला को पुरस्कृत करने का प्रस्ताव भी था।

'साप्ताहिक धमाका' में कुछ खबरें चटपटी थीं, कुछ तिलमिलाने वाली। कुछ खबरों के शीर्शक थे: 'गुटकू भटनागर बैगन की सब्जी से चिढ़ते हैं', 'ठेकेदार हजारासिंह ने लड़की की शादी में पचास हजार नकद दहेज दिया', 'हेडमास्टर चोपड़ा के घर स्कूल के चपरासी काम करते हैं', 'क्लासटीचर सोहनलाल ने तीन महीने की फीस अब तक स्कूल में जमा नहीं की।' साप्ताहिक के दूसरे पृश्ठ पर कुछ शैतान बच्चों के बारे में खबरें दी गयीं थीं: वीरू ने पिता की घड़ी चुराकर पचास रुपयों में बेची', 'राजेश का सफेद कुत्ता चोरी गया', 'दीनू और रमेश ने स्कूल से भागकर पिक्चर देखी।'

अखबार के अंत में अगले अंक के मुख्य आकर्शण दिये गये थे: ‘रिश्वतखोर मुंशी शादीलाल के काले कारनामे’, ‘सनातन धर्म मंदिर ट्रस्ट के हिसाब में घोटाला’, ‘सीक्रेट एजेन्ट डेविड की विशेश रिपोर्ट’, ‘मुहल्ले के शराबियों का भंडा-फोड़ !’

‘साप्ताहिक धमाका’ की ऐसी सनसनीखेज खबरें पढ़कर सभी हैरान थे। खबरें न केवल सच्ची थीं, बल्कि कान खड़े करने वाली थीं। संपादक के नाम के आगे ‘हम बच्चे’ लिखा देखकर यह समझने में मुश्किल नहीं हुई कि यह काम कुछ बच्चों का है। कुछ लोग बच्चों के इस साहस भरे काम से खुश थे। कुछ अपनी पोल खुलने से बेहद खिसियाए हुए थे।

लाला धनीराम की दुकान में तो सुबह-सुबह ही हंगामा हो गया था। टंडन साहब ने एक किलो चीनी तुलवाई। फिर किलो का बाट उठाकर देखा तो नीचे से खोखला पाया। हर तौल में कम से कम सौ ग्राम का घोटाला ! लोग इकट्ठे हो गये। खूब चखचख हुई। गुटकू भटनागर निकले तो बच्चे उन्हें ‘बैंगन की सब्जी’ कहकर चिढ़ाने लगे। बस यों समझिए कि हर तरफ ‘धमाका’ हो रहा था। सब यही पूछते: ‘यह किसने किया है ? कौन हैं ये बच्चे ?’ लेकिन जवाब कोई न दे पाता। देता भी कैसे ? ‘साप्ताहिक धमाका’ की योजना बहुत ही गुप्त ढंग से बनी थी।

अगले इतवार को जब ‘साप्ताहिक धमाका’ का दूसरा अंक बँटा तो लगा जैसे किसी ने मिर्चांे के पैकेट खोलकर हवा में उछाल दिये हों। मुहल्ले के कई सम्मानित कहे जाने वाले लोगों की पोल खुल गयी थी। मंदिर का चंदा खाने वाले, बच्चों को ऊधमी और पापी कह रहे थे। चोरी-छिपे शराब पीने वाले अपनी सफाई दे रहे थे। मुंशी शादीलाल चिल्लाकर कह रहे थे: ‘ मैं एक-एक की खबर लूँगा। जेल की हवा खिलवा दँूगा। मैं भी मुंशी हूँ मुंशी !’

कई दिनों तक यही कोशिश चलती रही कि ‘साप्ताहिक धमाका’ के बच्चों का पता लगाया जाय।

कौन लिखता है इसे ? कौन खबरें इकट्ठी करता है ? कब बाँटा जाता है ? मुहल्ले के लगभग सभी बच्चों की लिखावट के नमूने इकट्ठे किये गये। कुछ शैतान बच्चों की हरकतों पर निगाह रखी गयी। लेकिन सफलता न मिलनी थी, न मिली।

हारकर मुहल्ले के सभी बड़े लोगों की एक मीटिंग बुलायी गयी। मुंशी शादी-लाल ने कहा: ‘ऐसे सनसनीखेज काम आजादी की लड़ाई के जमाने में क्रांतिकारी किया करते थे। उनका भी पता अंग्रेजों को लग ही जाता था। हैरानी है कि हम अपने ही दुश्मनों को नहीं पहचान पा रहे हंै।’

इस पर प्रोफेसर माथुर ने कहा: 'यह काम भी आजादी की लड़ाई के दिनों जैसा ही है। आज इस बात की बहुत जरूरत है कि जो लोग समाज और देशवासियों के दुश्मन हैं उनका भंडाफोड़ किया जाए। यह काम हमें करना चाहिए था, लेकिन बच्चे कर रहे हैं। मैं उन बच्चों को बधाई देता हूँ।'

फिर तो मीटिंग में बहुत हंगामा हुआ। बिना किसी निर्णय के मीटिंग खत्म हुई । इतवार की सुबह 'साप्ताहिक धमाका' में अन्य खबरों के साथ मीटिंग की रिपोर्ट भी थी। सबसे मजेदार खबर थी: ''लाला धनीराम द्वारा 'साप्ताहिक धमाका' बाँटनेवाले को पकड़ने की कोशिश नाकाम।'' दरअसल लाला धनीराम सुबह चार बजे उठकर घर के बाहर अँधेरे में बैठ गये थे। लेकिन जब उजाला हुआ तो देखा कि 'साप्ताहिक धमाका' तो पहले ही बँट चुका था।

'साप्ताहिक धमाका' के ताजा अंक में उन घरों के नंबर दिये गये थे जहाँ, रेडियो बहुत जोर से बजता है। अपील की गयी थी कि इससे मुहल्ले के बच्चों की पढ़ाई में बाधा पड़ती है। कृपया रेडियो धीमा बजाइए। मंदिर में रोज होने वाले कीर्तन को लाउडस्पीकर पर न बजाने की अपील भी की गयी थी। अगले अंक के दो प्रमुख आकर्शण थे: 'नकली दवाएँ देने वाले डाक्टरों से सावधान !' और 'ब्रिगेडियर कपूर की मुर्गियों का चोर कौन ?'

अगर 'साप्ताहिक धमाका' कुछ लोगों पर चोट करता तो दूसरी ओर वह लोकप्रिय भी हो रहा था। नगर के एक दैनिकपत्र में बच्चों द्वारा गुप्त रूप से किए जाने वाले इस काम पर संपादकीय भी छपा। 'साप्ताहिक धमाका' का महत्त्व तब और बढ़ गया, जब कई डाक्टरों के यहाँ नकली दवाइयाँ पकड़ी गयीं। इसके साथ ही ब्रिगेडियर कपूर ने अब्दुल्ला होटल के

मालिक की पुलिस में रिपोर्ट की। पुलिस की मार ने अब्दुल्ला से मुर्गियों की चोरी उगलवा ली।

धीरे-धीरे मुहल्ले में काफी सफाई हो गयी। एक दिन अचानक ही घोशणा हुई कि ‘साप्ताहिक धमाका’ के संपादक बच्चों को पुरस्कार देने के लिए शाम को सभा होगी। सभी लोग उन बच्चों को देखने के लिए उत्सुक थे। मुहल्ले के पार्क में दोपहर में ही शामियाना लग गया। लाउडस्पीकर पर फिल्मी गाने बजने लगे।

शाम को पंडाल खचाखच भर गया। सनातन धर्म मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष चिरंजीलाल, मुंशी शादीलाल, लाला धनीराम, डाक्टर चेलाराम आदि मंच पर बैठे थे। सभा की कार्यवाही षुरू करते हुए अध्यक्ष चिरंजीलाल ने अपने भाषण में कहा: हम ‘साप्ताहिक धमाका’ के संपादक बच्चों की मुक्त कंठ से प्रशंसा करते हैं। उन्होंने हमारी गलतियाँ बताकर हमें राह दिखाई है। हमने तय किया है कि हर बच्चे को इस काम के लिए पाँच-पाँच सौ रुपये का इनाम दिया जाय। लेकिन हम नहीं जानते कि वे बहादुर बच्चे कौन हैं ? इसलिए हम उनसे निवेदन करते हैं कि वे सब मंच पर आये, अपना परिचय दें और पुरस्कार लें।”

भाषण समाप्त हो गया। मंच पर बैठे लोग सामने बैठी भीड़ की ओर देखने लगे। भीड़ में बैठे सब लोग अपने पीछे मुड़-मुड़कर देखने लगे कि वे कौन से बच्चे हैं? किन्तु एक भी बालक मंच की ओर नहीं बढ़ा। दो मिनट, पाँच मिनट और फिर दस मिनट बीत गए। धीरे-धीरे शोर होने लगा। लोग मंच पर बैठे ‘नेताओं’ की खिल्ली उड़ाने लगे। सभा समाप्त हो गयी।

‘साप्ताहिक धमाका’ के अगले अंक में मुख्य खबर छपी: ‘संपादक बच्चों को ब्लैकमेल करने की चाल नाकाम।’ फिर खुलासा किया गया कि ‘साप्ताहिक धमाका’ के संपादक

बच्चों को पहचानने के लिए यह कितना बड़ा संशय था। इसके बाद से 'साप्ताहिक धमाका' और भी जोर से धमाका करने लगा। परिणाम यह हुआ कि लोग अपने को धीरे-धीरे बदलने लगे। रेडियो और भजन-कीर्तन वाले लाउडस्पीकरों का स्वर धीमा हो गया। मुंशी शादीलाल भी कहने लगे: 'अरे भाई ! इस वानरसेना से कौन दुश्मनी ले ? जो भगवान दे उसी में खुश हूँ।' डाक्टरों के यहाँ भी ठीक दवाएँ मिलने लगीं।

'साप्ताहिक धमाका' अभी बंद नहीं हुआ। हर इतवार की सुबह उसके अंक बँट जाते हैं। अब एक राज की बात सुनो। पिछले दिनों मैंने 'साप्ताहिक धमाका' के संपादक बच्चों से मुलाकात की। उन्हें इस साहसिक और जोखिम भरे काम के लिए बधाई दी। सबसे अधिक प्रशंसा इस बात के लिए की कि उन्होंने अपनी गोपनीयता बनाये रखी।

तुम्हें यह जानकर आश्चर्य होगा कि ये संपादक बच्चे उसी मुहल्ले के हैं। इनकी संख्या चार है। चारों बिल्कुल सहज होकर रहते हैं। लेकिन उनकी तेज निगाह से कोई बात छिप नहीं पाती। पहले अखबार की एक प्रति तैयार की जाती हंै, फिर चार प्रतियाँ। इसके बाद चारों बच्चे मिलकर उसकी ढेर सारी प्रतियाँ बनाते हैं। जानते हो इनकी लिखावट क्यों नहीं पकड़ में आती ? इसलिए कि चारों ने बाएँ हाथ से लिखने का भी अच्छा अभ्यास किया है।

उन्होंने यह नहीं बताया कि वे अपना काम कब और कहाँ करते हैं ? उन्हें अपनी सफलता पर खुशी है। उनका कहना है कि जैसे ही उनके मुहल्ले की समस्याएँ हल हो जायेंगी, 'धमाका' बंद हो जाएगा। लेकिन जरूरत पड़ने पर वे उसे दुबारा षुरू कर देंगे। इसीलिए उन्होंने अपनी सभी बातों को गुप्त रखा है।

अगर कहीं 'साप्ताहिक धमाका' का अंक मिले तो जरूर पढ़ना। वह समाज के नाम बच्चों की चुनौती है। सुना है, 'साप्ताहिक धमाका' का जोरदार विशेशांक भी निकलने वाला है।

-देवसर

शब्दार्थ-

सीक्रेट एजेंट = गुप्तचर, जासूस। सनसनीखेज = आश्चर्य चकित कर देने वाली। प्रोफेसर = आचार्य। ब्रिगेडियर = थल सेना का एक उच्च पद, एक ब्रिगेड का अधिकारी। ट्रस्ट = न्यास, संघ। विशेशांक = किसीपत्र-पत्रिका का वह अंक, जो किसी विशिश्ट अवसर पर, विशेश प्रकार की उपयोगी सामग्री के साथ प्रकाशित किया गया हो।

प्रश्न-अभ्यास

कहानी से

1.'साप्ताहिक धमाका' क्यों निकाला गया?

2.'साप्ताहिक धमाका' के निकालने वाले कौन थे और वे किस प्रकार अनेक प्रतियाँ तैयार करते थे ?

3.पहले अंक की खास-खास खबरें क्या-क्या थीं तथा लाला धनीराम की दुकान में सुबह-सुबह हंगामा क्यों हो गया ?

4.चिरंजीलाल ने अपने भाषण में क्या कहा और क्यों कहा ?

5.'साप्ताहिक धमाका' अखबार के दूसरे अंक की प्रमुख खबर थी-

(क) सम्मानित लोगों के अच्छे काम- कभी नहीं करते आराम।

(ख) सम्मानित लोगों की पोल खुली- चंदा खाने वाले और चोरी-छिपे शराब पीने वालेबेनकाब।

(ग) जैसा नाम वैसा काम- मुंशी शादीलाल हुए बदनाम।

(घ) मिर्ची हवा में उछली- बंद कीजिए आँखे खुली।

विचार और कल्पना

1.लोगों तक समाचार पहुँचाने के दो माध्यम होते हैं - एक प्रिंट मीडिया और दूसरा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया। प्रिंट मीडिया के अन्तर्गत समाचारपत्र एवंपत्रिकाएँ आती हैं। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के अन्तर्गत कौन-कौन से समाचार माध्यम सम्मिलित हैं, उन्हें लिखिए।

2.आप प्रतिदिन कोई न कोई दैनिक समाचारपत्र अवष्य पढ़ते होंगे, इनमें केवल स्थानीय खबरें ही नहीं होती हैं बल्कि विविध क्षेत्रों से सम्बन्धित समाचार एवं स्थायी स्तम्भ भी होते हैं, जैसे-खेल के पन्ने पर खेल से सम्बन्धित समाचार। आपके घर आने वाले अखबार में

किन-किन क्षेत्रों से सम्बन्धित सूचनाएँ और समाचार प्रकाशित होते हैं, उन्हें लिखिए।

कुछ करने को

1.अखबार से जुड़े निम्नलिखित शब्दों को देखिए और पता कीजिए कि किसी अखबार में इनकी क्या भूमिका होती है-

सम्पादक, संवाददाता, निजप्रतिनिधि, फोटोग्राफर।

2.जब केवल चार बच्चे अखबार निकाल सकते हैं तो आप लोग क्यों नहीं ? अपने शिक्षाक की सहायता से साप्ताहिक अखबार निकालें और लोगों को इसे अवष्य दिखाएँ।

3.आप अपने विद्यालय में अध्यापक की सहायता से एक बैठक का आयोजन कीजिए औरछात्र-छात्राओं का दो समूह बनाइए, जिसमें से एक समूह विद्यालय से सम्बन्धित समस्याएँ रखे तथा दूसरा समूह उसका समाधान प्रस्तुत करे।

4.अखबार (समाचारपत्र) प्राय: दैनिक, साप्ताहिक अथवा पाक्षिक होते हैं औरपत्रिकाएँ साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक अथवा वार्शिक होती हैं। निम्नलिखित शीर्शकों के आधार पर तीन-तीनपत्र-पत्रिकाओं के नाम लिखिए-

(क) दैनिक-

(ख) साप्ताहिक-

(ग) पाक्षिक-

(घ) मासिक-

(ङ) वार्शिक-

भाषा की बात

1.‘विशेश’ में ‘अंक’ जोड़कर ‘विशेशांक’ शब्द बनाया गया है। इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों में ‘अंक’ जोड़कर शब्द बनाएँ-

क्रम, प्रवेश, जन्म, गत।

2.निम्नलिखित वाक्यों को ध्यान से पढ़ें-

(क) खबरें न केवल सच्ची थीं बल्कि कान खड़े करने वाली थीं।

(ख) बात न केवल झूठी थी बल्कि शर्म से गड़ने वाली थी।

इसी प्रकार नीचे दिये गये जोड़ों से एक-एक वाक्य बनाइए-

दुखदायी-आसमान टूट पड़ना।

त्रस्त -नाक में दम करना।

दुश्ट -सिर पर सवार होना।

आप चाहें तो दुखदायी, त्रस्त और दुश्ट के स्थान पर अन्य उचित शब्दों का भी प्रयोग कर सकते हैं।

इसे भी जानें

हिन्दी भाषा का सबसे पहला अखबार 'उदन्त मार्तण्ड' कोलकाता से सन् 1826 ई0 में प्रकाशित हुआ।

13. अमर शहीद भगत सिंह के पत्र

(भगत सिंह समय-समय पर अपने हितैशियों को पत्र लिखते रहते थे। उन पत्रों से उनकी देशभक्ति, त्याग-भावना और स्वदेश के लिए सर्वस्व अर्पित करने की दृढ़ कामना का परिचय मिलता है। इस पाठ में उनके कुछ पत्र दिये गये हैं।)

(1)

सन् 1923 ई0 में भगत सिंह द्वारा जिन्दगी के मकसद को बयान करने वाला पिता के नाम लिखा गया पत्र:-

पूज्य पिताजी,

नमस्ते!

मेरी जिन्दगी मकसदे आला (उच्च उद्देष्य) यानी आजादी-ए-हिन्द (भारत की स्वतंत्रता) के असूल (सिद्धान्त) के लिए वक्फ (दान) हो चुकी है। इसलिए मेरी जिन्दगी में आराम और दुनियाबी ख्वाहिशात (सांसारिक इच्छाएँ) बायसे कशिश (आकर्शक) नहीं हैं।

आप को याद होगा कि जब मैं छोटा था, तो बापू जी ने मेरे यज्ञोपवीत के वक्त एलान किया था कि मुझे खिदमते वतन (देश सेवा) के लिए वक्फ कर दिया गया है, लिहाजा मैं उस वक्त की प्रतिज्ञा पूरी कर रहा हूँ।

उम्मीद है आप मुझे माफ फरमायेंगे।

आपका ताबेदार, भगत सिंह

(2)

जेल में माँ से भेंट न होने पर भाई कुलबीर सिंह को पत्र:-

प्रिय भाई कुलबीर सिंह जी !

सत श्री अकाल।

मुझे यह जानकर कि एक दिन तुम माँ जी को साथ लेकर आये और मुलाकात का आदेश नहीं मिलने से निराश होकर वापस लौट गये, बहुत दु:ख हुआ। तुम्हें तो पता चल चुका था कि जेल में मुलाकात की इजाजत नहीं देते। फिर माँ जी को साथ क्यों लाये ? मैं जानता हूँ कि इस समय वे बहुत घबरायी हुई हैं, लेकिन इस घबराहट और परेशानी का क्या फायदा, नुकसान जरूर है, क्योंकि जब से मुझे पता चला कि वे बहुत रो रही हैं, मैं स्वयं भी बेचैन हो रहा हूँ। घबराने की कोई बात नहीं, फिर इससे कुछ मिलता भी नहीं।

सभी साहस से हालात का मुकाबला करें। आखिरकार दुनिया में दूसरे लोग भी तो हजारों मुसीबतों में फँसे हुए हंै। और फिर अगर लगातार एक बरस तक मुलाकातें करके भी तबीयत नहीं भरी तो और दो-चार मुलाकातों से भी तसल्ली न होगी। मेरा ख्याल है कि फैसले और चालान के बाद मुलाकातों से पाबन्दी हट जायेगी, लेकिन माना कि इसके बावजूद मुलाकात की इजाजत न मिले तो........ इसलिए घबराने से क्या फायदा ?

तुम्हारा भाई,

भगत सिंह

सेंट्रल जेल, लाहौर

3 मार्च, 1931

(3)

बलिदान से एक दिन पहले कैदी साथियों को लिखा गया अन्तिम पत्र:-

साथियो !22 मार्च, 1931

स्वाभाविक है कि जीने की इच्छा मुझमंे भी होनी चाहिए, मैं इसे छिपाना नहीं चाहता, लेकिन मैं एक शर्त पर जिन्दा रह सकता हूँ कि मैं कैद होकर या पाबन्द होकर जीना नहीं चाहता।

मेरा नाम हिन्दुस्तानी क्रान्ति का प्रतीक बन चुका है और क्रान्तिकारी दल के आदर्शों और कुर्बानियों ने मुझे बहुत ऊँचा उठा दिया है- इतना ऊँचा कि जीवित रहने की स्थिति में इससे ऊँचा मैं हरगिज नहीं हो सकता,

आज मेरी कमजोरियाँ जनता के सामने नहीं हैं, अगर मैं फाँसी से बच गया तो वे जाहिर हो जायेंगी और क्रान्ति का प्रतीक-चिह्न मद्धिम पड़ जायेगा या सम्भवत: मिट ही जाय लेकिन दिलेराना ढंग से हँसते-हँसते मेरे फाँसी चढ़ने की सूरत में हिन्दुस्तानी माताएँ अपने बच्चों को भगत सिंह बनने की आरजू किया करेंगी और देश की आजादी के लिए कुर्बानी देने वालों की तादाद इतनी बढ़ जायेगी कि क्रान्ति को रोकना साम्राज्यवाद या तमाम शैतानी शक्तियों के बूते की बात नहीं रहेगी।

हाँ, एक विचार भी मेरे मन में आता है कि देश और मानवता के लिए जो कुछ करने की हसरतें मेरे दिल में थीं, उनका हजारवाँ भाग भी पूरा नहीं करा सके, अगर स्वतन्त्र जिन्दा रह सकता तब शायद इन्हें पूरा करने का अवसर मिलता और मैं अपनी हसरत पूरी कर सकता।

इसके सिवाय मेरे मन में कभी कोई लालच फाँसी से बचने का नहीं आया, मुझसे अधिक सौभाग्यशाली कौन होगा? आजकल मुझे स्वयं पर बहुत गर्व है, अब तो बड़ी बेताबी से अन्तिम परीक्ष का इन्तजार है, कामना है कि यह और नजदीक हो जाय।

आपका साथी-भगत सिंह

प्रसिद्ध क्रान्तिकारी भगत सिंह का जन्म 28 सितम्बर सन् 1907 ई0 को पंजाब के लायलपुर गाँव में हुआ। इनके पिता का नाम सरदार किशन सिंह था। सरदार भगत सिंह बचपन से ही क्रान्तिकारी विचारों वाले थे। बड़े होने पर ये ब्रिटिश साम्राज्य को जड़ से उखाड़ फेंकना चाहते थे। चन्द्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मिल, अश्फाक उल्ला खाँ जैसे क्रान्तिकारियों की तरह ही भगत सिंह का नाम भी बड़े आदर के साथ लिया जाता है। भगत सिंह हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी के सदस्य थे। साइमन कमीशन का बहिष्कार करने के सिलसिले में पंजाब केशरी लाला लाजपत राय पर पुलिस ने प्राणघातक प्रहार किया था। पुलिस अधीक्षक सांडर्स को इसके लिए जिम्मेदार मानते हुए भगत सिंह ने गोलियाँ चलाकर उसकी हत्या कर दी थी। इसी मामले में दूसरा पुलिस अफसर मिस्टफर्म भी मारा गया था। ब्रिटिश सरकार ने अन्यायपूर्ण ढंग से इन्हें 23 मार्च सन् 1931 ई0 को फाँसी दे दी ।

शब्दार्थ-

जिन्दगी=जीवन। एलान= घोशणा। ताबेदार=आज्ञाकारी। हालात=स्थिति। तसल्ली=सांत्वना, ढाढ़स। क्रान्ति=परिवर्तन के लिए आन्दोलन। हरगिज = कभी भी, कदापि। जाहिर=प्रकट। प्रतीक-चिह्न=पहचान। मद्धिम= धीमा। आरजू=कामना/इच्छा। कुर्बानी=बलिदान। तादाद=संख्या। हसरतें=इच्छाएँ। साम्राज्यवाद=अन्य देशों को अपने अधिकार में ले लेने और उन पर शासन करने की नीति। सत श्री अकाल = सिक्ख सम्प्रदाय में अभिवादन की शब्दावली। साइमन कमीशन = ब्रिटिश सरकार ने भारतीय शासन में सुधार की द्रष्टि से इस कमीशन का गठन किया था। इसके अध्यक्ष ‘साइमन’ नामक अंग्रेज थे।

प्रश्न-अभ्यास

पत्र से

1.भगत सिंह के जीवन का उद्देष्य क्या था ?

2.भगत सिंह ने अपनेपत्र में माँ के लिए क्या संदेश भेजा ?

3.भगत ंिसंह किस शर्त पर जिन्दा रह सकते थे ?

4. भगत सिंह हँसते-हँसते फाँसी क्यों चढ़ना चाहते थे ?

विचार और कल्पना

1.भगत सिंह का जन्म 28 सितम्बर सन् 1907 ई0 को हुआ तथा उन्हें फाँसी 23 मार्च सन् 1931 ई0 को दी गयी। बताइए कि वे कुल कितने समय जीवित रहे ?

2.भगत सिंह के मन में देश और मानवता के लिए कुछ करने की हसरत थी। अपने देश और समाज की अच्छाई के लिए आप क्या कर सकते हैं ?

कुछ करने को

1.मोटे तौर परपत्रों को चार वर्गांे में विभाजित किया जा सकता है- व्यक्तिगतपत्र, व्यापारिकपत्र, शासकीयपत्र और सम्पादकीयपत्र। व्यक्तिगतपत्र अपने सम्बन्धित लोगों को लिखे जाते हंै। इनपत्रों में प्रेषक को अपना पता और तिथि सबसे ऊपर दाहिनी ओर लिखना चाहिए। बांइं तरफ आदर सूचक (जैसे- पूज्य, महोदय) तथा प्रियता बोधक (जैसे- प्रिय) शब्द लिखना चाहिए। सम्बोधन के बाद तथ्य लिखे जाते हैं।पत्र के अन्त में हस्ताक्षर

के पूर्व श्रद्धासूचक या प्रेमसूचक (जैसे- आपका आज्ञाकारी, तुम्हारा शुभेच्छु) शब्द का प्रयोग किया जाता है।

उपर्युक्त संकेत के आधार पर अपने मित्रों को अपनी पढ़ाई की स्थिति के सम्बन्ध मेंपत्र लिखिए।

2.पत्रों के माध्यम से समाचार भेजने का मुख्य साधन डाकघर रहे हैं। किन्तु आज संचार की क्रान्ति का युग है। वर्तमान मेंपत्र के अलावा और कौन-कौन माध्यम हैं, जिनसे संदेश भेजा जाता है, लिखिए।

3.अपने पास के डाकघर में जाकर पता लगाइए किपत्र किस प्रकार दूर-दराज के स्थानों पर पहुँचाये जाते हैं।

4 .पं0 जवाहरलाल नेहरू ने अपनीपुत्री इन्दिरा गाँधी को कईपत्र लिखे थे। वेपत्र 'पिता केपत्रपुत्री के नाम' पुस्तक में प्रकाशित हैं। इस पुस्तक को पुस्तकालय से प्राप्त कीजिए तथा पढ़िए।

5. भगत सिंह जैसे अन्य तीन क्रान्तिकारियों के नाम लिखिए।

भाषा की बात

1.'क्रान्तिकारी दल' में 'दल' संज्ञापद है। 'दल' की विशेशता बताने वाला शब्द 'क्रान्तिकारी' विशेशण है। निम्नांकित शब्दों को पढ़िए और विशेशणपदों को चुनकर लिखिएः-

प्राणघातक प्रहार, दृढ़ कामना, अन्तिम परीक्ष, शैतानी शक्तियाँ, हिन्दुस्तानी माताएँ।

2.छोटी-छोटी में योजक चिह्न (-) का प्रयोग हुआ है। इस चिह्न का प्रयोग पाँच प्रकार से होता है-

(क)दो शब्दों के बीच ‘और’ के स्थान पर, जैसे- माता-पिता, रात-दिन।

(ख) पुनरुक्त शब्दों के बीच, जैसे- छोटी-छोटी, धीरे-धीरे।

(ग)दो शब्दों के बीच का, के, की, के स्थान पर, जैसे - देश-गान, त्याग-भाव।

(घ) तुलना के लिए प्रयोग में आने वाले ‘सा’, ‘सी’, ‘से’ के पूर्व, जैसे- गोला-सा, भोली-सी, विचित्र-से।

(ङ)दो शब्दों के बीच ‘न’ या ‘से’ आने पर, जैसे- एक-न-एक, बड़े-से-बड़े।

उपर्युक्त पाँचो प्रकार के योजक चिह्न युक्त शब्दों के एक-एक अन्य उदाहरण दीजिए।

3.‘बेचैन’ मंे ‘बे’ उपसर्ग लगा है। इसी प्रकार ‘प्र’ उपसर्ग की सहायता से ‘प्रबल’ शब्द बनाया गया है। ‘बे’ और ‘प्र’ उपसर्ग से बने दो-दो शब्द लिखिए।

4.मकसदे आला, असूल आदि उर्दू शब्द हैं। भगत सिंह ने अपनेपत्रों में अनेक उर्दू शब्दों का प्रयोग किया है।पत्र में आये ऐसे शब्दों को छाँटिए तथा उनका वाक्य-प्रयोग अपने शब्दों में कीजिए।

इसे भी जानें

‘इन्कलाब जिन्दाबाद’ - भगत सिंह

14. लोकगीत

(इस पाठ में लेखक ने लोकगीतों तथा लोकनृत्यों के सांस्कृतिक महत्त्व पर प्रकाश डाला है।)

लोकगीत अपनी लोच, ताजगी और लोकप्रियता में शास्त्रीय और देशी दोनों प्रकार के संगीत से भिन्न हंै। लोकगीत सीधे जन सामान्य के गीत हैं। घर, गाँव और नगर की जनता के गीत हैं ये। इनके लिए साधना की आवष्यकता नहीं होती। त्योहारों और विशेश अवसरों पर ये गाये जाते हैं। इनके रचने वाले भी अधिकतर अनपढ़, गाँव के लोग ही हैं। स्त्रियों ने भी इनकी रचना में विशेश भाग लिया है। ये गीत बाजों की मदद के बिना ही या साधारण ढोलक, झाँझ, करताल, बाँसुरी आदि की सहायता से गाये जाते हैं।

अनेक लोगों ने विविध बोलियों के लोक-साहित्य और लोकगीतों के संग्रह पर कमर कसी है और इस प्रकार के अनेक संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। प्रान्तों की विविध सरकारों ने भी लोक-साहित्य के पुनरुद्धार में हाथ बँटाया है और सभी राज्यों में इस सम्बन्ध का एक विभाग चालू कर दिया है या सार्वजनिक अधिवेशन, पुरस्कार आदि द्वारा इसका प्रोत्साहन, प्रचार और वृद्धि षुरु कर दी गयी है।

लोकगीतों के कई प्रकार हैं। इनका एक प्रकार तो बड़ा ही ओजस्वी और सजीव है। यह इस देश के

आदिवासियों का संगीत है। मध्यप्रदेश, दक्षिण, छोटा नागपुर में गांेड-खांड, ओराँव-मंुड, भील- सन्थाल आदि फैले हुए हैं, जिनमें आज भी जीवन, नियमों की जकड़ में बँध न सका और वह निर्द्वंद्व लहराता है। इनके गीत और नृत्य अधिकतर साथ-साथ और बड़े-बड़े दलों में गाये और नाचे जाते हैं। आदमियों और औरतों के दल एक साथ या एक दूसरे के जवाब में गाते हैं, दिशाएँ गूँज उठती हैं।

पहाड़ी प्रदेशों के अपने-अपने गीत हैं। उनके अपने-अपने भिन्न रूप होते हुए भी अशास्त्रीय होने के कारण उनमें अपनी एक समान भूमि है। गढ़वाल, किन्नौर, काँगड़ा आदि के अपने-अपने गीत और उन्हें गाने की अपनी-अपनी विधियाँ हैं। उनका अलग नाम ही पड़ गया है- ‘पहाड़ी’।

वास्तविक लोकगीत देश के गाँवों और देहात में हैं। इनका सम्बन्ध देहात की जनता से है। बड़ी जान होती है इनमंे। चैता, कजरी, बारहमासा, सावन आदि मिर्जापुर, बनारस और उत्तर प्रदेश के पूर्वी और बिहार के पश्चिमी जिलों में गाये जाते हैं। बाउल और भटियाली बंगाल के लोकगीत हैं। पंजाब में माहिया भी इसी प्रकार के हैं। हीर-राँझा, सोहनी-महीवाल सम्बन्धी गीत पंजाबी में और ढोला-मारू आदि के गीत राजस्थानी में बड़े चाव से गाये जाते हैं। इन देहाती गीतों के रचयिता कोरी कल्पना को इतना मान न देकर अपने गीतों के विषय

रोजमर्रा के जीवन से लेते हैं, जिससे वे सीधे मर्म का स्पर्श करते हैं। उनके राग भी साधारणत: पीलू, सारंग, दुर्गा, सावन, सोरठ आदि हैं। ये सभी लोकगीत गाँवों और इलाकों की बोलियों में गाये जाते हैं। लोकगीत की भाषा नित्य की बोली होने के कारण बड़ी आह्लादकर और आनन्ददायक होती है। राग तो इन गीतों के आकर्शक होते ही हैं, इनकी समझी जा सकने वाली भाषा भी इनकी सफलता का कारण है।

भोजपुरी में पिछले अनेक वर्षों से 'विदेशिया' का खूब प्रचार हुआ है। गानेवालों के अनेक दल इन्हें गाते हैं। उधर के भागों में विशेशकर बिहार में विदेशिया से बढ़कर दूसरे गाने लोकप्रिय नहीं है। इन गीतों में अधिकतर रसिकों की बात रहती है और इनसे करुणा और विरह का जो रस बरसता है, उसका वर्णन नहीं किया जा सकता है।

जंगल की जातियों के अलावा गाँव के लोगों के गीत होते हैं, जो बिरहा आदि में गाये जाते हैं। जिसमें पुरुष एक ओर और महिलाएँ दूसरी ओर एक दूसरे के जवाब में दल बाँधकर गाते हंै। और दिशाएँ गुँजा देते हैं। पर इधर कुछ काल से इस प्रकार के दलीय गायन का ह्रास हुआ है।

दूसरे प्रकार के बड़े लोकप्रिय गाने 'आल्हा' हैं। अधिकतर ये बुन्देलखंडी में गाये जाते हैं। आरम्भ तो इनका चन्देल राजाओं के राजकवि जगनिक से माना जाता है, जिसने आल्हा-ऊदल की वीरता का बखान किया। उनके छन्द और विषय को लेकर लोकबोली में उसके दूसरे देहाती कवियों ने भी समय-समय पर अपने गीतों में उतारा और ये गीत हमारे गाँवों में आज भी बहुत प्रेम से गाये जाते हैं। इनको गाने वाले गाँव-गाँव ढोलक लिये गाते फिरते हैं। इसकी सीमा पर उन गीतों का भी स्थान है, जिन्हें नट रस्सियों पर खेल करते हुए गाते हैं। अधिकतर ये गद्य-पद्यात्मक हैं और इनके अपने बोल हैं। अपने देश में स्त्रियों के गीतों की

अनन्त संख्या है। ये गीत भी लोकगीत हैं, पर अधिकतर इन्हें औरतें ही गाती हैं। इन्हें सिरजती भी अधिकतर वही हैं। वैसे इन्हें रचने वाले या गाने वाले पुरुषों की भी कमी नहीं है, पर इन गीतों का सम्बन्ध विशेशत: स्त्रियों से है। इस द्रष्टि से भारत इस दिशा में सभी देशों से भिन्न है, क्योंकि संसार के अन्य देशों में स्त्रियों के अपने गीत पुरुषों या जनगीतों से भिन्न नहीं हैं, मिले-जुले ही हैं।

त्योहारों पर नदियों में नहाते समय के, नहाने जाते हुए राह के, विवाह के, मटकोड़, ज्यौनार के, सम्बन्धियों के लिए प्रेम-युक्त गाली के, जन्म आदि सभी अवसरों के अलग-अलग गीत हैं, जो स्त्रियाँ गाती हैं। इन अवसरों पर कुछ आज से ही नहीं, बड़े प्राचीनकाल से वह गाती रही हैं। महाकवि कालिदास आदि ने भी अपने ग्रन्थों में उनके गीतों का हवाला दिया है। सोहर, बानी, सेहरा आदि उनके अनन्त गानों में से कुछ हैं। वैसे तो बारहमासे पुरुषों के साथ नारियाँ भी गाती हैं।

एक विशेश बात यह है कि नारियों के गाने साधारणत: अकेले नहीं गाये जाते, दल बाँधकर गाये जाते हैं। अनेक कंठ एक साथ फूटते हैं। यद्यपि अक्सर उनमें मेल नहीं होता, फिर भी त्योहारों और षुभ अवसरों पर वे बहुत ही भले लगते हैं। गाँवों और नगरों में गानेवालियाँ भी

होती हैं, जो विवाह, जन्म आदि के अवसरों पर गाने के लिए बुला ली जाती हैं। बिहार और पूर्वी उत्तरप्रदेश

में छठ पर्व बड़े धूम-धाम से मनाया जाता है। इसके गीत बड़े मोहक और लोचदार होते हैं।

सभी ऋतुओं में स्त्रियाँ उल्लसित होकर दल बाँधकर गाती हैं पर होली, बरसात की कजरी आदि तो उनकी अपनी चीज है,जो सुनते ही बनती है। पूरब की बोलियों में अधिकतर मैथिल-कोकिल विद्यापति के गीत गाये जाते हैं। पर सारे देश मंे-कश्मीर से कन्या कुमारी-केरल तक और काठियावाड़-गुजरात- राजस्थान से उड़ीसा-आन्ध्र तक-सभी के अपने-अपने विद्यापति हैं।

स्त्रियाँ ढोलक की मदद से गाती हैं। अधिकतर उनके गाने के साथ नाच का भी पुट होता है। गुजरात का एक प्रकार का दलीय गायन ‘गरबा’ है, जिसे विशेश विधि से औरतें घेरे में घूम-घूमकर गाती हैं। साथ ही लकड़ियाँ भी बजाती हैं। इसमें नाच-गान साथ-साथ चलते हैं। वस्तुत: यह नाच ही है। सभी प्रान्तों में यह लोकप्रिय हो चला है। इसी प्रकार होली के अवसर पर ब्रज में ‘रसिया’ चलता है, जिसे दल के दल गाते हैं, स्त्रियाँ विशेशकर।

गाँव के गीतों के वास्तव में अनन्त प्रकार हैं। जीवन जहाँ इठला-इठलाकर लहराता है, वहाँ भला आनन्द के स्रोतों की कमी हो सकती है? वहाँ के अनन्त संख्यक गाने उद्दाम ग्रामीण

जीवन के ही प्रतीक हैं। - डॉ0 भगवतशरण उपाध्याय

शब्दार्थ-

पुनरुद्धार=जिसका दोबारा उद्धार किया जाये। ओजस्वी=तेजवान। निद्र्वन्द्व= द्वन्द्व रहित, (सब तरह से स्वच्छन्द) बारहमासा=चै= से लेकर फाल्गुन तक के बारह महीनों का एक गीत। आह्लादकर=प्रसन्नता देने वाली। सिरजती=रचती, बनाती। मटकोड़=विवाह के समय मिट्टी खोदने की एक रस्म। ज्यौनार=विवाह के समय खाना खाने की रस्म। कंठ=गला। उद्दाम=उच्छृंखल, निरंकुश।

प्रश्न-अभ्यास

निबन्ध से

1.कव्वाली के अलावा कौन से गीत हैं, जिनमें टोली बनाकर प्रतिस्पर्धा आयोजित की जाती है?

2.हमारे यहाँ महिलाएँ कब-कब किस प्रकार के गीत गाती हंै, उन गीतों को कौन-सा गीत कहा जाता है ?

3.लोकगीत हमारे देश के किन-किन क्षेत्रों में अधिक लोकप्रिय हैं तथा इसकी क्या विशेशताएँ हैं?

4.लोकगीत किन-किन रागों पर आधारित होते हैं?

5.सोहर, चैता तथा कजरी कब-कब गाये जाते हैं?

विचार और कल्पना

1.लोकगीतों में लोगों की दिलचस्पी कम होने से हमें क्या क्षति हो सकती है। इन्हंे बढ़ावा देने के लिए हमें क्या करना चाहिए?

2.देश के प्रत्येक क्षेत्र के लोकगीत अलग-अलग होते हैं किन्तु सभी का मूल भाव एक ही होता है जो अनेकता में एकता को व्यक्त करता है। बताइए कि और कौन से घटक होते हैं जो देश की अनेकता में एकता को व्यक्त करते हैं।

कुछ करने को

1.निम्नांकित अनुच्छेद को ध्यान से पढ़िए और अपने साथियों से पूछने के लिए पाँच प्रश्न बनाइए -

''भारतीय आर्केस्ट्रा के योग से भी लोकगीत गाये जाते हैं। इन्हें एक या अनेक लोग मिलकरगाते हैं। अधिकतर एक लड़का और लड़की एक दूसरे के जवाब के रूप में या एक साथ मिलकर भी इन्हें गाते हैं। इस प्रकार के गीत वस्तुत: 'पश्चिम' और नये भारत के मिले-जुले प्रयास हैं। मधुर, तेज या ढीले,कृत्रिम स्वर में ये गीत गाये जाते हैं। यद्यपि ये शास्त्र की द्रष्टि से नगण्य हैं तथापि अब काफी लोकप्रिय हो गये हैं। ये देशी-विदेशी और अशास्त्रीय-गँवारू गानों के बिगड़े रूप हंै।

2.अपनी दादी/नानी तथा पास-पड़ोस की महिलाओं से पूछकर कुछ लोकगीत संकलित करें तथा उन्हीं से जानकारी करें कि ये किस अवसर पर गाये जाते हैं?

3.शिक्षक की सहायता से एक ऐसी 'बाल सभा' का आयोजन करें, जिसमें कक्ष के सभी छात्र केवल 'लोकगीत' ही प्रस्तुत करें।

भाषा की बात

1.पाठ में ‘पुनरुद्धार’ शब्द आया है, जो दो शब्दों-पुन:+उद्धार से मिलकर बना है। इसी आधार पर निम्नांकित शब्दों का सन्धि-विच्छेद कीजिए-

पुनरावृत्ति, पुनर्जन्म, पुनर्बोध, पुनरागमन, पुनरुक्ति।

2.‘सर्वजन’ शब्द में ‘इक’ प्रत्यय लगाकर ‘सार्वजनिक’ शब्द बना है। इसी प्रकार निम्नांकितशब्दों में ‘इक’ प्रत्यय लगाकर शब्द बनाइए-

सप्ताह, वर्ष, समाज, धर्म, मर्म।

आंचलिक लोकगीत

1.बुन्देलखंडी

जंगल में मंगल मनालो,

हरे-भरे बिरछा लगालो।।

जितै-जितै धरती है बिरछा बिहीनी,

जैसे सिन्दूर बिना माँग लगै सूनी,

ईखौ, सुहागन बनालो, हरे-भरे बिरछा लगालो।

जंगल में मंगल......................।

मीठे फल-फूल लगैं, झूम रई डरइयौं

भर दुपेरे इनपै, चल रई कुलइयाँ,

मिल-जुल के इन खौ, बचालो, हरे-भरे बिरछा लगालो।

जंगल में मंगल ....।

2.भोजपुरी

घेरि-घेरि बरसै कारी बदरिया, कियरिया में बूँद टपके।

हरियर भइल देखा पूरा सिवनवाँ,

खुशहाल होई गइलैं सगरा किसनवाँ,

धरती पहिन लेहलीं धानी रंग चुनरिया, कियरिया में बूँद टपके।

अमवाँ की डारी पे कुँहके कोइलिया,

मोरवा-मोरिनियाँ करैलें अठखेलियाँ,

धीरे-धीरे चलै पुरबी बयरिया, कियरिया में बूँद टपके।

15. खग, उड़ते रहना

(प्रस्तुत कविता में खग के माध्यम से मनुष्य को जीवन भर क्रियाशील रहने का संदेश दिया गया है।)

खग, उड़ते रहना जीवन भर !

भूल गया है तू अपना पथ, और नहीं पंखों

में भी गति,

किन्तु लौटना पीछे पथ पर, अरे ! मौत से

भी है बदतर।

खग, उड़ते रहना जीवन भर !

मत डर प्रलय-झकोरों से तू, बढ़

आशा-हलकोरों से तू,

क्षण में अरि-दल मिट जाएगा, तेरे

पंखों से पिसकर।

खग, उड़ते रहना जीवन भर !

यदि तू लौट पड़ेगा थककर, अंधड़ काल-बवंडर से डर,

प्यार तुझे करने वाले ही, देखेंगे तुझको हँस-हँसकर।

खग, उड़ते रहना जीवन भर !

और मिट गया चलते-चलते, मंजिल-पथ तय करते-करते,

खाक चढ़ाएगा जग, उन्नत भाल और आँखों पर।

खग, उड़ते रहना जीवन भर !

-गोपालदास 'नीरज'

शब्दार्थ-

खग=पक्षी। बदतर=खराब। प्रलय=विनाश, संहार। अरि-दल=श=ुओं का झुंड। मंजिल-पथ=गंतव्य स्थल तक पहुँचने का मार्ग। खाक=चिताभस्म, राख। भाल=मस्तक।

प्रश्न-अभ्यास

गीत से

1.मौत से भी बदतर क्या है?

2.मार्ग में कठिनाई आने पर क्या करना चाहिए?

3.जो लोग अपने लक्ष्य तक पहुँचने के प्रयास में समाप्त हो जाते हैं, उनको संसार किस तरह सम्मान देता है?

4.कार्य को बिना पूरा किये हुए छोड़कर लौट आने वाले व्यक्ति को संसार किस द्रष्टि से देखता है?

5.दी गयी कविता की पंक्तियों को पढ़िए और उनके नीचे दिये गये भावार्थ पर (झ्)

का चिह्न लगाइए-

और मिट गया चलते-चलते, मंजिल-पथ तय करते-करते,

खाक चढ़ाएगा जग, उन्नत भाल और आँखों पर।

(क) हे पक्षी ! यदि चलते-चलते और मंजिल पाने में खाक मिलती है तो तेरा ललाट ऊँचा रहेगा।

(ख) हे पक्षी ! (हे मानव !) यदि अपनी मंजिल को पाने के लिए अपने पथ पर उड़ते-उड़ते (चलते-चलते) मिट जाओगे तो भी कोई हानि नहीं होगी, क्योंकि तब यह संसार बड़े गर्व से तुम्हारे बलिदान (चिताभस्म) को अपने सिर आँखों पर चढ़ाएगा।

(ग) हे मानव ! अपनी मंजिल की खाक अपने ऊँचे मस्तक और आँखों पर चढ़ाओ।

(घ) हे खग ! यदि राह चलते-चलते और मंजिल पाने में तू मर गया तो तू मिट्टी में मिल जायेगा।

विचार और कल्पना

1.पाश्र्व में दिये गये चित्र को देखकर अपने विचार पाँच पंक्तियों में लिखिए-

2.उड़ता हुआ पक्षी हमंे आगे बढ़ने अर्थात् उन्नति करने का संदेश देता है। इसी प्रकार बताइए कि उगता सूरज, हिमालय, लहराता सागर, फलों से लदे वृक्ष, खिले फूल हमें क्या संदेश देते हैं? प्रत्येक पर अपने विचार दो-दो पंक्तियों में लिखिए।

3.कवि इस गीत के माध्यम से हमें क्या संदेश देना चाहता है?

4.यदि आप पक्षियों की तरह उड़ सकें तो सर्वप्रथम आप कहाँ जाना चाहंेगे और क्यों?

कुछ करने को

1.उड़ते हुए किसी पक्षी का चित्र बनाइए।

2.निम्नलिखित उदाहरण के आधार पर किसी एक पक्षी का विवरण तैयार करें-

उदाहरण-

संख्या-(एक साथ जितने पक्षी देखंे)।

प्रचलित नाम-कबूतर।

आकार-मध्यम।

रंग-हल्का आसमानी या सफेद।

प्रकृति-सजीव, भोली-भाली।

भोजन-शाकाहारी।

घोंसला-सूखी लकड़ियों, घास या तिनकोंसे घोंसला बनाना।

घोंसला बनाने का समय-वर्षा ऋतु के आस-पास।

अण्डे-सफेद या भूरे।

शत्रु-बाज।

देखे जाने की तिथि और समय-पूरे वर्ष दिखायी देता है।

अन्य बातें-छोटी चोंच कम ऊँचाई तक उड़ना, घरों में घोंसले बनाना।

भाषा की बात

1.दिये गये शब्दों के समानार्थक शब्द लिखिए -

पथ, आशा, अरि,   आँख।

2.निम्नलिखित के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए -

पक्षी,आकाश,   धरती,पहाड़।

3.योजक-चिह्न अलग-अलग सन्दर्भों में प्रयुक्त किये जाते हैं। पाठ में आशा-हलकोरों, अरि-दल तथा चलते-चलते शब्दों में आये योजक-शब्द भिन्न अर्थ वाले हैं। बताइए कि उक्त तीनों स्थानों पर प्रयुक्त योजक-चिह्नों के क्या अर्थ हैं ?

इसे भी जानें

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा, उ0 प्र0 में स्थित है।

16. कौन बनेगा निंगथऊ (राजा)

(यह मणिपुर की एक लोक-कथा है। इसमें पर्यावरण संरक्षण और जनता से राजा के प्रेम की भावना प्रकट की गयी है।)

बहुत, बहुत पहले की बात है। मणिपुर के कांगलइपाक राज्य में एक निंगथउ और एक लेइमा, राजा और रानी रहते थे। सब उन्हें बहुत प्यार करते थे।

निंगथउ और लेइमा अपने मीयम, प्रजा, का बड़ा ख्याल रखते थे। 'हमारे मीयम सुखी रहें,' वे कहते। 'कांगलइपाक में शान्ति हो।' वहाँ के पषु-पक्षी भी अपने राजा-रानी को बहुत चाहते थे। निंगथउ और लेइमा हमेशा कहते: ''कांगलइपाक में सभी को खुश रहना चाहिए। सिर्फ मनुष्यों को ही नहीं, पक्षियों, जानवरों और पेड़-पौधों को भी।''

निंगथउ और लेइमा के बच्चे नहीं थे। लोगों की एक ही प्रार्थना थी: 'हमारे निंगथउ और लेइमा का एकपुत्र हो। हमें अपना तंुगी निंगथउ मिल जाय, हमारा युवराज।'

फिर एक दिन, लेइमा ने एकपुत्र, एक मौचानीपा, को जन्म दिया। लोग बहुत खुश थे। सब अपने युवराज को देखने आये। बच्चे का सिर चूमकर उन्होंने कहा- ''कितना सुन्दर बेटा है, कितना सुन्दर बेटा है।'' राज्य में धूम मच गयी। लोग ढोलों की ताल पर नाच उठे, बाँसुरी पर मीठी धुनें छेड़ी।

उस वक्त उन्हें पता नहीं था कि अगले साल भी उसी तरह जश्न मनाया जायेगा। और उसके अगले साल फिर। हाँ, निंगथउ और लेइमा का एक और बेटा हुआ। फिर एक और।

अब उनके प्रिय राजा-रानी के तीन बेटे थे--- सानाजाउबा, सानायाइमा और सानातोम्बा।

बारह साल बाद, उनकी एकपुत्री हुई। उसका नाम सानातोम्बि रखा गया।

बड़ी प्यारी थी वह, कोमल दिल वाली। सभी उसे बहुत चाहते थे।

कई साल बीत गये। बच्चे जवान हुए। एक दिन निंगथउ ने मन्=ियों को बुलाकर कहा- ‘अब वक्त आ गया है। हमें घोशणा करनी होगी कि कौन तुम्हारा युवराज बनेगा, तुम्हारा तंुगी निंगथउ।’

‘इतनी जल्दी क्यों ?’ आश्चर्य से मन्=ियों ने एक दूसरे से पूछा। पर जब उन्होंने करीब से निंगथउ को देखा, उन्हें भी लगा कि हाँ, वे सचमुच बूढ़े हो चुके थे। यह देखकर वे दु:खी हो गये।

‘अब मुझे तुम्हारा युवराज चुनना ही है,’ निंगथउ ने कहा।

मन्=ी हक्के-बक्के रह गये। ‘पर हे निंगथउ, चुनाव की क्या जरूरत है? सानाजाउबा, आपका सबसे बड़ापुत्र, ही तो राजा बनेगा।’

‘हाँ’ निंगथउ ने जवाब दिया। ‘पुराने जमाने में ऐसा होता था। सबसे बड़ा बेटा ही हमेशा राजा बनता था। लेकिन अब समय बदल गया है। इसलिए हमें उसे चुनना है जो राजा बनने के लिए सबसे योग्य है।’

‘चलो, राजा चुनने के लिए एक प्रतियोगिता रखते हैं,’ लेइमा ने कहा।

और तब कांगलइपाक में एक मुकाबला रखा गया, एक घुड़दौड़। जो भी उस खांेगनंग तक, बरगद के पेड़ तक, सबसे पहले पहुँचेगा, युवराज उसे ही बनाया जायेगा।

लेकिन एक अजीब बात हुई। सानाजाउबा, सानायाइमा और सानातोम्बा--- तीनों ने दौड़ एक साथ खत्म की। कौन जीता, कौन हारा, कहना मुश्किल था।

‘देखो, देखो!’ लोगों में शोर मच गया। ’’कितने अच्छे घुड़सवार।’

मगर सवाल वहीं का वहीं रहा- तंुगी निंगथउ कौन बनेगा?

निंगथउ और लेइमा ने अपने बेटों को बुलाया। निंगथउ ने कहा-

‘सानाजाउबा, सानायाइमा, सानातोम्बा, तुमने यह साबित कर दिया कि तुम तीनों ही अच्छे घुड़सवार हो। अब अपने-अपने तरीके से कुछ करो ताकि हम तुममें से युवराज चुन सकें।’

लड़कों ने राजा, रानी व लोगों को प्रणाम किया और अपने घोड़ों के पास चले गये। एक दूसरे को देखकर वे मुस्कराये। मगर मन-ही-मन तीनों यही सोच रहे थे कि क्या खास किया जाय।

अचानक, हाथ में बरछा लिये, सानाजाउबा अपने घोड़े पर सवार हो गया। उसने चारों तरफ देखा। लोगों में सन्न्ााटा-सा छा गया। ‘सानाजाउबा, सबसे बड़ा राजकुमार, अब क्या कर दिखाएगा?’ उन्होंने सोचा।

सानाजाउबा ने दूर खड़े शानदार खोंगनंग को ध्यान से देखा। उसने घोड़े को एड़ लगायी और घोड़ा झट से दौड़ पड़ा। वह तेज, और तेज, पेड़ की ओर बढ़ा।

‘शाबाश! शाबाश!’ सब चिल्लाये। ‘थाउरो! थाउरो!’ और फिर एकदम शान्त हो गये।

सानाजाउबा धड़धड़ाता हुआ खोंगनंग के पास पहुँचा। इससे पहले कि कोई कुछ समझ पाता, वह पेड़ को भेदकर घोड़े समेत उसके अन्दर से निकल गया।

‘थाउरो! थाउरो!’ लोगों ने फिर चिल्लाया।

अब दूसरे राजकुमार, सानायाइमा, की बारी थी। वह भला क्या करेगा?

सानायाइमा ने भी खोंगनंग को गौर से देखा। फिर उसने भी घोड़ा दौड़ाया, बहुत तेज। साँस थामे सब चुपचाप देख रहे थे। पेड़ के नजदीक आकर उसने घोड़े को कूदने के लिए एड़ लगायी। दोनों ऊपर कूदे, इतने ऊँचे, कि एक अद्भुत छलांग में वे उस विशाल वृक्ष को पार कर दूसरी ओर पहुँच गये। देखने वाले दंग रह गये। ”कमाल है! कमाल है!“ वे चिल्लाये।

और अब बारी थी छोटे राजकुमार, सानातोम्बा, की। उसने भी खोंगनंग की ओर घोड़ा दौड़ाया, और पलक झपकते ही उसे जड़ से उखाड़ डाला। बड़ी शान से फिर उसने पेड़ को उठाया और निंगथउ और लेइमा के सामने जाकर रख दिया।

बाप रे, कितना हंगामा मच गया - ‘थाउरो! थाउरो! शाबाश! शाबाश!’ की आवाजें पास के पहाड़ांे से गूँज उठीं।

अब आप ही बताओ तंुगी निगंथउ किसे बनना चाहिए?

सानाजाउबा ?

सानायाइमा ?

सानातोम्बा ?

पेड़ को भेदकर कूदने वाला ?

पेड़ के ऊपर से छलाँग लगाने वाला ?

या फिर, पेड़ को उखाड़ने वाला ?

ज्यादातर लोग सानातोम्बा को चाहते थे। क्या वह सबसे बलवान नहीं था? उसी ने तो इतने बड़े खोंगनंग को आसानी से उठा लिया था।

लोग बेचैन होने लगे। निंगथउ और लेइमा अपना फैसला सुनाने में क्यों इतनी देर लगा रहे थे? वे कर क्या रहे थे ?

निंगथउ और लेइमा सानातोम्बि को देख रहे थे। पाँच साल की उनकी बेटी उदास और अकेली खड़ी थी। वह जमीन पर पड़े खोंगनंग को देख रही थी। पेड़ के आसपास पक्षी फड़फड़ा रहे थे। घबराये हुए, वे अपने घोंसले ढूँढ़ रहे थे।

सानातोम्बि खोंगनंग के पास गयी। ‘खोंगनंग मर गया,’ वह धीरे से बोली, ‘उसे बरछे से चोट लगी, और अब वह मर गया।’

सन्नाटा छा गया।

लेइमा ने सानातोम्बि के पास जाकर उसे बाँहों में भर लिया। फिर कहा ‘निंगथउ वही है जो देखे कि राज्य में सब खुश हैं। निंगथउ वही है जो राज्य में किसी को भी नुकसान न पहुँचाये।’

सब चैकन्ने होकर सुन रहे थे।

निंगथउ उठ खड़े हुए। उन्होंने अपने तीनों बेटों को देखा। फिर बेटी को देखा। उसके बाद अपनी प्रजा से कहा ‘अगर कोई शासक बनने योग्य है, तो वह है छोटी सानातोम्बि। खोंगनंग को चोट लगी तो उसे भी दर्द हुआ। उसी ने हमें याद दिलाया कि खोंगनंग में भी जान है। सानातोम्बि दूसरों का दर्द समझती है। उसे मनुष्य, पेड़-पौधे, जानवर, पक्षी -- सबकी तकलीफ महसूस होती है।’

‘मेरे बाद सानातोम्बि ही राज्य सँभालेगी। मैं उसे कांगलइपाक की अगली लेइमा घोशित करता हूँ’ निंगथउ ने एलान किया।

सभी ने मुड़कर उस छोटी लड़की, अपनी होने वाली रानी, को देखा। पाँच साल की बच्ची यूँ खड़ी थी जैसे खुद एक नन्हा-सा खोंगनंग हो। उसके चारों तरफ पक्षी फड़फड़ा रहे थे। कुछ उड़कर उसके कन्धों पर आ बैठे, कुछ सिर पर। उसने दानों से भरे अपने छोटे हाथ फैलाये, और धीरे-धीरे पास आकर पक्षी दाने चुगने लगे।

शब्दार्थ-

एलान=सार्वजनिक घोशणा, मुनादी। जश्न=उत्सव, जलसा। सिर्फ=केवल, मा=। हक्के-बक्के रह जाना=आश्चर्य मंे पड़ जाना। पलक झपकना=फौरन, तुरन्त। सिर चूमना=प्यार

करना।।

प्रश्न-अभ्यास

लोक कथा से

1.सभी बच्चों के नाम क्रमश: थे।

(क) सानाजाउबा, सानातोम्बि, सानायाइमा ओर सानातोम्बा।

(ख) सानाजाउबा, सानातोम्बि, सानायाइमा ओर सानातोम्बा।

(ग) सानाजाउबा, सानायाइमा, सानातोम्बि और सानातोम्बा।

(घ) सानाजाउबा, सानायाइमा, सानातोम्बा और सानातोम्बि।

2. जब निंगथउ और लेइमा, तुंगी का चुनाव कर रहे थे, उस समय सानातोम्बि की आयु थी ?

(क)चार वर्ष(ख)छह वर्ष

(ग)पाँच वर्ष(घ)बारह वर्ष

3.किस राजकुमार ने तुंगी निंगथउ बनने के लिए क्या काम किया। तीर () के निशान

राजकुमारों के नामकार्य

सानाजाउबापेड़ को उखाड़ना

सानायाइमापेड़ के ऊपर से छलाँग लगाना

सानातोम्बापेड़ को भेदकर उसके अन्दर से निकलना

4.सानातोम्बि को अगली लेइमा घोशित किया गया, क्योंकि-

(क)वह सबसे छोटी थी।

(ख)वह दूसरों का दर्द समझती थी।

(ग)उसे मनुष्य, पेड़-पौधे, जानवर, पक्षी सबकी तकलीफ महसूस होती थी।

(घ)उपर्युक्त ‘ख’ और ‘ग’ दोनों।

5. निंगथउ को किसने याद दिलाया कि खांेगनंग में भी जान है-

(क)लेइमा ने (ख)सानातोम्बि ने

(ग)सानातोम्बा ने(घ)मीयम ने

6.सानातोम्बि को अगली लेइमा क्यों घोशित किया गया?

विचार और कल्पना

1.एक खोंगनंग के पेड़ को चोट पहुँचाकर तीनों राजकुमार तुंगी निंगथउ बनने से रह गये। आप भी यदि किसी पेड़ को नुकसान पहुचाएँगे तो क्या हो सकता है ?

2.‘खोंगनंग में भी जान है।’ सानातोम्बि ने ऐसा क्यों कहा ?

3.पेड़ों से पर्यावरण शुद्ध होता है। पर्यावरण प्रदूशित होने से जीवों का अस्तित्व खतरे में पड़ सकता है। हम सभी का कर्तव्य है कि पर्यावरण को शुद्ध रखने में अपना योगदान दें। आप पर्यावरण संरक्षण के लिए क्या उपाय करना चाहेंगे ?

कुछ करने को

1.बरगद (खोंगनंग) के पेड़ का चित्र बनाइए और उसके कोटर में बैठी एक चि़डिया को दिखाइए।

2.आप भी सानातोम्बि की तरह पक्षियों को प्यार करें, उन्हें दाना चुगाएँ, धीरे-धीरे वे भी आपके पास आने लगेंगे। फिर देखें, कितना अच्छा लगता है।

3.बरगद (खोंगनंग) की तरह अन्य छायादार और दूध निकलने वाले वृक्षों (जैसे-पीपल, पाकड़) में से किसी एक पेड़ को अपने आस-पास के किसी स्थान पर लगाकर उसके बड़े होने तक देखभाल करें।

4.यह मणिपुर में कही जाने वाली एक लोककथा है। इस तरह की लोककथाएँ आपके यहाँ भी सुनी-कही जाती होंगी। आप भी इस प्रकार की कोई एक लोककथा कक्ष में सुनाइए।

5. नीचे दिये गये गद्यांश को पढ़िए तथा इस पर आधारित तीन प्रश्न बनाइए-

निंगथउ उठ खड़े हुए। उन्होंने अपने तीनों बेटों को देखा। फिर बेटी को देखा। उसके बाद अपनी प्रजा से कहा, 'अगर कोई शासक बनने योग्य है तो वह है छोटी सानातोम्बि। खोंगनंग को चोट लगी तो उसे भी दर्द हुआ। उसी ने हमें याद दिलाया कि खोंगनंग में भी जान है। सानातोम्बि दूसरों का दर्द समझती है। उसे मनुष्य, पेड़-पौधे, जानवर, पक्षी-सबकी तकलीफ महसूस होती है। मेरे बाद सानातोम्बि ही राज्य सम्भालेगी। मैं उसे कांगलइपाक की अगली लेइमा घोशित करता हूँ' निंगथउ ने एलान किया।

भाषा की बात

1.अनुवाद एक कला है। किसी भाषा का अनुवाद करते समय इसका ध्यान रखा जाता है कि मूल पाठ का भाव सुरक्षित रहे और जिस भाषा में इसका अनुवाद किया जा रहा है, उन

लोगों के लिए भी वह बोधगम्य हो।

इस पाठ में कई मणिपुरी शब्द आये हैं, जैसे- निंगथउ, लेइमा, मीयम आदि। अनुवाद करते समय लेखक ने इन शब्दों को देते हुए उनका हिन्दी पर्याय भी दे दिया है, जैसे-

(क)मणिपुर के कांगलइपाक राज्य में एक निंगथउ और एक लेइमा, (राजा और रानी) रहते थे।

(ख) निंगथउ और लेइमा अपने मीयम, का बड़ा ख्याल रखते थे।

इसी प्रकार से आप भी तंुगी, थाउरो, खोंगनंग, शब्दों को खोजकर इनका हिन्दी अर्थ लिखिए।

2.कभी-कभी एक ही क्रिया पद से दो-दो वाक्यों के अर्थ निकलते हैं, जैसे- कांगलइपाक में सभी को खुश रहना चाहिए। सिर्फ मनुष्यों को नहीं पक्षियों, जानवरों और पेड़ों को भी।

इसी प्रकार दो वाक्यों की रचना आप भी कीजिए, जिसमें एक ही क्रियापद से दोनों वाक्यों का अर्थ स्पष्ट हो रहा हो।

3.इस कहानी में आये हुए मुहावरों को छाँटकर इनका अपने वाक्यों में प्रयोग करें।

इसे भी जानें

तुलसी सम्मान- मध्यप्रदेश सरकार द्वारा राष्ट्रीयस्तर पर जनजातीय लोककथा के विकास में उल्लेखनीय योगदान हेतु दिया जाता है। इसकी स्थापना सन् 1983 ई0 में हुई।

17. बादल चले गये वे

(प्रस्तुत कविता में बादल के माध्यम से कवि ने सुख और दु:ख की बात कही है, जैसे बादल आते और चले जाते हैं, वैसे ही सुख-दु:ख भी जीवन में आते हैं और चले जाते हैं।)

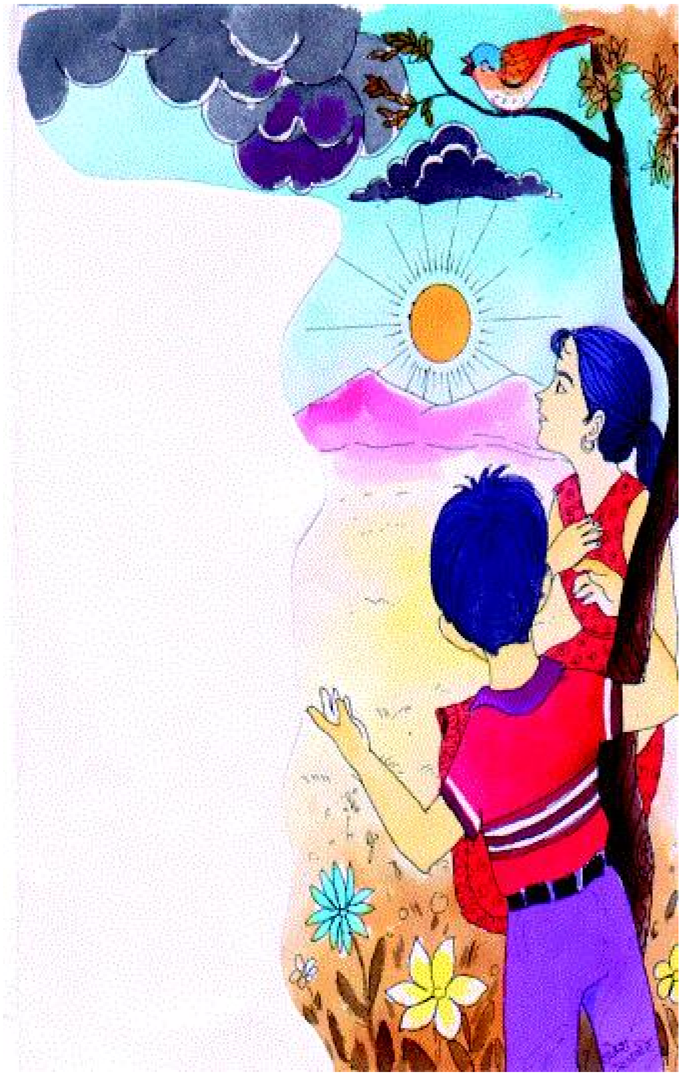

बना-बना कर

चित्र सलोने

यह सूना आकाश सजाया

राग दिखाया

रंग दिखाया

क्षण-क्षण छवि से चित्त चुराया

बादल चले गये वे ।

आसमान अब

नीला-नीला

एक रंग रस ष्याम सजीला

धरती पीली

हरी रसीली

शिशिर-प्रभात समुज्ज्वल गीला

बादल चले गये वे।

दो दिन दु:ख का

दो दिन सुख का

दु:ख-सुख दोनों संगी जग में

कभी हास है

कभी अश्रु है

जीवन नवल तरंगी जग में

बादल चले गये वे

दो दिन पाहुन जैसे रह कर ।।

-त्रिलोचन

त्रिलोचन का जन्म 20 अगस्त सन् 1917 ई0 को सुल्तानपुर, उत्तर प्रदेश में हुआ था। इनका वास्तविक नाम वासुदेव सिंह है। हिन्दी की आधुनिक प्रगतिशील कविता में त्रिलोचन का स्थान बहुत महत्त्वपूर्ण है। धरती, गुलाब और बुलबुल, दिगन्त, ताप के ताये हुए दिन, शब्द, इस जनपद का कवि हूँ, अरधान, तुम्हें सौंपता हूँ, चैती आदि आप के काव्य-संग्रह हैं। सन् 2007 में इनका देहावसान हो गया।

शब्दार्थ-

सलोने = सुन्दर। राग = प्रेम। सजीला = सजा हुआ। समुज्ज्वल =सफेद चमकीला, प्रकाशवान। नवल तरंगी =नयी लहरों से युक्त। पाहुन=अतिथि, मेहमान।

कविता से 1.निम्नलिखित पद्यांशों का भाव स्पष्ट कीजिए - (क)दु:ख-सुख............. चले गये वे। (ख)एक रंग रस.............समुज्ज्वल गीला। 2.निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए - रंग दिखाया, चित्त चुराया, ष्याम सजीला, नवल तरंगी। 3.कविता में कुल तीन पद हैं। तीनो पदों के तुकान्त शब्दों को अलग-अलग जोड़ा बनाकर लिखिए। विचार और कल्पना 1.वर्षा ऋतु में बादल अच्छे लगते हैं, परन्तु जाड़े में कैसे लगते हैं, लिखिए । 2.बादल की तुलना पाहुन से क्यों की गयी है ? 3.बताइए बादलों के कौन-कौन से रंग होते हैं ? 4.आपने इन्द्रधनुश देखा होगा सोचकर बताइए कि इन्द्रधनुश में कौन-कौन से रंग होते हैंतथा इन्द्रधनुश कैसे बनते हैं। 5.बरसात में जब पानी नहीं बरसता है तो ऐसी स्थिति को सूखा कहते हैं। नीचे लिखी स्थिति को क्या कहते हैं- जब पानी अधिक बरसता है। जब हवा बहुत तेज चलती है। गर्मी में जब बहुत गर्म हवा चलती है। सर्दी में जब तेज हवा चलती है। कुछ करने को आकाश में जब बादल छाये रहते हैं, तब उन्हें ध्यान से देखिए।

उनमें विभिन्न आकृतियाँ दिखाई पड़ती हैं, उनमें जो भी आकृति आपको सबसे अच्छी लगे उसका चित्र कॉपी पर बनाकर अपने शिक्षाक को दिखाइए। भाषा की बात 1.‘दु:ख-सुख’ में दोनों शब्द एक दूसरे के विपरीतार्थी हैं। इसी तरह के पाँच शब्द-युग्म लिखिए। 2.निम्नलिखित शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची लिखिए- आकाश,धरती, प्रभात,बादल। इसे भी जानें 1. वर्षा जल संचय-वर्षा जल भूमि जल की पुन: पूर्ति करता है और नदियों के प्रवाह को बनाये रखने में सहायक होता है। परन्तु वर्षा जल का अधिकांश भाग ऐसे ही बह जाता है और बाढ़ का कारण बनता है। भविष्य में उपयोग के लिए छतों से वर्षा जल को पाइप की सहायता से बड़ी-बड़ी टंकियों, जलाशयों, पात्रों आदि में एकत्र किया जाता है। यह वर्षा जल संचय कहलाता है। 2. भारत भारती सम्मान- उ0 प्र0 हिन्दी संस्थान द्वारा साहित्य सृजन एवं हिन्दी की अनवरत सेवा हेतु दिया जाता है, इसकी स्थापना सन् 1986 ई0 में हुई।

18. बहादुर बेटा

(प्रस्तुत एकांकी में लेखक ने एक बहादुर बालक की बहादुरी का वर्णन किया है।)

पात्र- माँ संदीप--बड़ा बेटा कुलदीप-छोटा बेटा मधुर -बेटी एक युवक डाक्टर और एक युवती-दोनांे रेडक्रास के सदस्य एक युवक-संदीप का मित्र मंच पर एक साधारण से घर का एक कमरा। मधुर बैठी पढ़ रही है। बीच-बीच में घड़ी की ओर देख लेती है। उसी समय माँ अन्दर से आती है। माँ- क्या बज गया मधुर ? अरे ! चार बजने वाले हैंऔर उन दोनों में से कोई भी नहीं आया ! मधुर- यही तो मंै भी देख रही हूँ। बड़े भैया तो बारह बजे तक आ जाते थे और दो बजे तक कुलदीप भी आ जाता था। आज दोनों न जाने कहाँ चले गये? इसी समय कुलदीप तेजी से भागता हुआ आता है। कुलदीप-माँ, माँ, तुमने सुना ? बड़े जोर का तूफान आया है। नदियों में बाढ़ आ गयी है। स्कूल में मास्टर जी कह रहे थे, गाँव के गाँव बह गये। सैकड़ांे आदमी भी बह गये। जानवरों का तो कहना ही क्या ? मकान गिर पड़े । चारों तरफ हाहाकार मचा है। मास्टर जी ने कहा है कि हम लोगों को उनकी मदद करनी चाहिए, वहाँ जाना चाहिए। उनको कपड़े और पैसे देने चाहिए। (तेजी से बोलता चला जाता है।) मधुर -चर्चा तो आज हमारे स्कूल में भी हो रही थी पर ऐसी कोई बात मैनें नहीं सुनी कि इतना नुकसान हुआ । कुलदीप- तुमको कुछ पता भी है? इतने जोरांे का तूफान आया कि नदी का सारा पानी गाँव में भर गया। इसलिए यह हुक्म हुआ है कि जो कोई जो कुछ भी कर सके, करे। जो युवक हैंऔर स्वस्थ हंै, वे वहाँ जाकर लोगों को बचाने का काम करें। जो धनी हैं वे धन दें, जिनके पास अनाज है, वे अनाज दें। कपड़े हैं, कपड़े दंे........ माँ- हाँ, हाँ, यह तो होना चाहिए। मेरे पास पैसा तो नहीं है लेकिन जो कुछ हो सकता है वह अवष्य करूँगी। कहाँ भेजना होगा पैसा ? कुलदीप- वह तो लेने वाले यहीं आ जायंेगे। लेकिन मैं

जा रहा हूँ। मधुर- माँ -(एक साथ) तू कहाँ जा रहा है? कुलदीप- लोगों को बचाने। माँ -(हँसकर) तेरे विचार बहुत अच्छे हैं। लेकिन तू इतना छोटा है कि उनको क्या बचायेगा? खुद वे लोग तुझे ही बचाने की परेशानी में पड़ जायेंगे। पहले तू रोटी खा ले और हाँ,संदीप अभी क्यों नहीं आया। कहीं वह भी..... मधुर-हाँ, माँ, वह जरूर चले गये होंगे। वह दिन-रात इसी तरह की बातें करते रहते हैं- मैं कुछ करना चाहता हूँ। मेरे पिता और मेरे चाचा ने आजादी की लड़ाई लड़ी थी। मेरे देश के हजारों लोगों ने अपने प्राण दिये थे। अपना सब कुछ लुटा दिया था। अब मुझे कुछ करना चाहिए। मुझे भी अपने देश की सेवा करनी चाहिए। (सहसा एक युवक का प्रवेश) युवक- संदीप का घर यही है? सब- (एक साथ) हाँ, हाँ यही है। क्या बात है? युवक-मैं आपको बताने आया हूँ कि संदीप बाढ़पीड़ित लोगों की सहायता करने के लिए चला गया है। माँ- (घबराकर) क्या ? मधुर- तो भैया चले ही गये। युवक- लेकिन आप कोई चिन्ता न कीजिए। (तेजी से कहकर लौटता है।) माँ-हे भगवान ! यह सब क्या हो रहा है ? कब दूर होंगी ये परेशानियाँ ? कितना बलिदान चाहता है तू ? हे भगवान ! तू मेरे बच्चे की रक्ष करना। वह खूब सेवा करे। पर.........पर........ मधुर-(माँ को झकझोरकर) माँ, माँ, तुम कहाँ खो गयी हो ? क्या सोचने लगी ? हमें कुछ करना चाहिए। चलो, हम दोनों घर-घर से अनाज और धन इकट्ठा करें। और हाँ, बाढ़पीड़ितों के लिए खाने की जरूरत भी तो होगी। कुलदीप-खाना, कपड़ा, मकान सभी चीजों की जरूरत होगी। मास्टर जी कहते थे कि सरकार प्रबंध कर रही है। कैंप लगवा दिये हैं। माँ, मैं जाता हूँ। स्कूल में वालंटियरों की जरूरत है। मैं कैंप में जाकर तो काम कर ही सकता हूँ। माँ- क्यों नहीं कर सकता ? तू भी जा। लेकिन एक बात का ध्यान रखना, नदी के पास मत जाना। कुलदीप- मैं नदी के पास क्यों जाऊँगा। वह तो खुद ही हमारे पास आ गयी है। (हँसकर) अच्छा, मैं चला। (तेजी से चला जाता है। बाहर शोर उठता है। माँ खिड़की से झाँकती है।) मधुर- देखो, देखो, माँ

कितने लोग इधर ही चले आ रहे हंै, और वह देखो ट्रक भी आ रहे हैं। ऐसा लगता है कि ये बाढ़पीड़ित गाँवों से लोगों को निकालकर ला रहे हैं। क्यों माँ, एक परिवार को तो हम भी अपने घर में रख सकते हैं ! माँ- क्या ही अच्छा हो यदि सभी ऐसा कर सकें, फिर तो बहुत सारी समस्याएँ यों ही खत्म हो जायें। पता नहीं सरकार क्या करेगी ? लेकिन मुझे खुशी है कि मेरे दोनों बेटे सेवाकार्य में लग गये। भगवान उनकी रक्ष करे। मधुर- जो दूसरों की रक्ष करते हैं, भगवान उनकी रक्ष करते हैं। माँ- हाँ, करते तो हैं। (सहसा माँ फिर ध्यानस्थ हो जाती है और वहीं बैठ जाती है। मधुर उसे फिर झकझोरना चाहती है। लेकिन सहसा रुक जाती है, जैसे दूर कहीं से संगीत का मधुर स्वर उठता है। वह चारों ओर देखती है, तभी एक युवती वहाँ आ जाती है। उसके वस्त्रों पर रेडक्रास का चिह्न लगा हुआ है।) युवती- क्या संदीप जी का मकान यही है? मधुर- जी। माँ- (आँखे खोलकर) संदीप, कहाँ है संदीप? कैसा है वह? युवती- आप शायद उनकी माँ है? चिंता मत कीजिए। कोई विशेश बात नहीं है। मधुर- लेकिन आप हैं कौन? युवती - मैं रेडक्रास की सदस्या हूँ। बाहर मेरे बहुत से साथी हैं। हम सब लोग बाढ़पीड़ितों की सहायता करने के लिए गये हुए थे। आप केपुत्र संदीप जी ने वहाँ बहुत काम किया। अपने प्राणों की चिन्ता किये बिना उन्होंने सैकड़ों लोगों को बचाया। उनका साहस देखकर हम लोग दंग रह गये। हमारे मना करने पर भी उन्हांेने आराम नहीं किया। लेकिन अचानक............ माँ और मधुर- (एक साथ) अचानक क्या हुआ? बोलतीं क्यों नहीं? उन्हें क्या हुआ? युवती - आप घबराइए नहीं, मैं बता रही हूँ। लोगों को बचाते -बचाते अचानक उनकी नाव पलट गयी। उन्हें तैरना आता था। उन्होंने वहाँ भी लोगों की मदद की। जब तक सबको दूसरी नाव में नहीं चढ़ा दिया, तब तक वह नहीं चढ़े, और जब चढ़ने लगे तब सहसा पानी का बड़े जोर का रेला आया और वह बह गये।

माँ - (चीखकर) हाय राम ! युवती - (शीघ्रता से) नहीं, नहीं दूसरे लोगों ने उन्हें शीघ्र बचा लिया। कठिन परिश्रम के कारण वह बेहोश हो गये हैं, लेकिन हमने उन्हें फर्स्ट-एड दे दी है। बहुत जल्दी ही वह ठीक हो जायेंगे। मधुर- वह हैं कहाँ ? युवती - बाहर। हमारी गाड़ी में। आप मेरे साथ आइए। उन्हें अंदर ले आयें। (सब तेजी से चले जाते हैं। मधुर एकदम लौटती है और पलंग बिछाती है। फिर बाहर की ओर भागती है, तभी वे सब संदीप को लाकर पलंग पर लिटा देते हैं।) युवती - (युवक को दिखाकर) यह हमारे डॉक्टर हैं। इन्होंने अच्छी तरह देख लिया है। डर की कोई बात नहीं है। अभी दो क्षण में ही इन्हंे होश आ जाता है। युवक - मैं अभी एक और इंजेक्षन दिये देता हूँ। चिंता की कोई बात नहीं है। आप का बेटा बहुत बहादुर है। (कुलदीप भागा हुआ आता है।) कुलदीप- माँ, माँ, मैंने सुना है........ (एकदम देखकर) अरे, यह तो भैया आ गये। क्या हुआ इन्हें, और ये कौन हैं ? मधुर - बाढ़पीड़ितों को बचाते-बचाते भैया स्वयं नदी में गिर गये। इन लोगों ने उन्हें बचाया है। थक गये हैं और कोई खास बात नहीं है। (अन्दर जाती है।) युवक - बस, इन्हें होश आ रहा है। लेकिन आप लोग इनसे ज्यादा बातें मत कीजिए। शाम तक चुपचाप पड़े रहने दीजिए। रात को मैं आकर देख जाऊँगा। माँ - हे भगवान! इस दुनिया में कितने अच्छे लोग हैं। संदीप - (आँखे खोलकर) मैं, मैं कहाँ हूँ ? युवक - अपने घर में हो। यह तुम्हारी माँ हंै, बहन है, भाई है और हम हैं तुम्हारे साथी। संदीप - ओह! तुम हो डॉक्टर। मुझे इतना ही याद है कि जैसे मैं

डूब गया हूँ और फिर कोई अन्तरिक्ष में से आकर बचा रहा है, वह तुम थे। युवती - संदीप बाबू, आप बोलिए नहीं। एक-दो दिन आराम कीजिए। संदीप - बहुत अच्छा डॉक्टर! आपकी आज्ञा का पालन होगा। (सब हँस पड़ते हैं) युवक और युवती- (एक साथ) अच्छा, अब हमें आज्ञा दीजिए। माँ - नहीं, नहीं ऐसे नहीं। बिना मुँह मीठा किये तुम नहीं जा सकते। अरे मधुर ! लो वह तो अन्दर चली भी गयी। शायद चाय बना रही होगी। युवक - माँ हमें तो आज्ञा ही दीजिए। कुलदीप- समझ लीजिए, भइया को अभी होश नहीं आया है। बस पाँच मिनट लगेंगे। (सब हँसते हैं। वह भी अन्दर चला जाता है।) माँ - आप लोग दुनिया की इतनी सेवा करते हैं। कभी-कभी हमें भी अवसर दिया कीजिए। युवती - हम भी तो आपके ही हैं और फिर आपने कम सेवा की है क्या ? (दोनों मुस्कराते हैं और अन्दर से मधुर, कुलदीप चाय का सामान लेकर आते हैं। पर्दा गिरने लगता है।)

शब्दार्थ-

सहसा=अचानक। समस्याएँ=कठिनाइयाँ। वालंटियर=स्वयंसेवक। हुक्म=आदेश। फर्स्ट एड = प्राथमिक चिकित्सा। अन्तरिक्ष = पृथ्वी और स्वर्ग के बीच का स्थान, आकाश। प्रश्न-अभ्यास एकांकी से 1. निम्नलिखित वाक्यों को पढ़कर पाठ के आधार पर उनको क्रम में लिखिए - (क)नदियों में बाढ़ आ गयी है। (ख)गाँव के गाँव बह गये। (ग)बड़े जोर का तूफान आया है। (घ)चारों तरफ हाहाकार मचा है। 2. संदीप के होश में आने पर डॉक्टर युवक ने किस क्रम में सबका परिचय कराया, क्रम चुनें - (क)भाई, बहन, साथी और माँ (ख)बहन, भाई, माँ, और साथी (ग)माँ, बहन, भाई और साथी (घ)साथी, बहन, माँ, और भाई 3. पाठ के आधार पर निम्नलिखित वाक्यों को पूरा कीजिए- (क)जो कोई जो कुछ भी कर सके,

................। (ख)जो युवक हैं और स्वस्थ हैं, ...। (ग)जो धनी हैं, ...। (घ)जिनके पास अनाज है, ...। 4. निम्नलिखित कथोपकथन किसके द्वारा कहे गये हैं- (क)मेरे पास पैसा तो नहीं हैं, लेकिन जो कुछ हो सकता है, अवष्य करूँगीं। (ख)मैं नदी के पास क्यों जाऊँगा, वह तो खुद ही हमारे पास आ गयी है। (ग)एक परिवार को तो हम भी अपने घर में रख सकते हैं। (घ)जिनके पास अनाज है, ...। 5.ट्रक को देखकर मधुर ने अपनी माँ से बाढ़पीड़ितों के बारे में क्या कहा ? 6.युवक और युवती द्वारा चलने की आज्ञा लेते समय माँ ने क्या कहा ? विचार और कल्पना 1. आप लोग दुनिया की इतनी सेवा करते हैं। कभी-कभी हमें भी अवसर दिया कीजिए। आपके विचार से माँ ने ऐसा क्यों कहा ? 2.क्या आपने कभी बाढ़ का दृष्य देखा है ? बाढ़ आने पर आप अपने घर के किन-किन सामानों को सुरक्षित स्थानों पर ले जाना चाहंेगे ? 3.नीचे दिये गये कथोपकथन को आगे बढ़ाते हुए ‘एकांकी’ की रचना कीजिए। (श्रिया नामक लड़की का घर में प्रवेश) माँ- श्रिया, तुम तो अपनी सहेली अंजू के घर गयी थी, बड़ी देर लगा दी, बेटी ! श्रिया- माँ, वहाँ टेलीविजन पर बहुत अच्छा कार्यक्रम आ रहा था, मैं उसे देखने लगी थी। (पिताजी से) पिताजी अपने घर भी एक टेलीविजन खरीद दीजिए न ! कुछ करने को 1.बाढ़, सूखा, महामारी, दुर्घटना आदि के समय संदीप की तरह आप भी दूसरों की सहायता करें। लोग आपको भी शाबाशी देंगे और आप भी बहादुर बच्चे कहलाएँगे। 2.आपके घर पर जब कोई आये तो मधुर और कुलदीप की तरह आप भी उसे आदर से बिठाकर जलपान कराएँ। लोग आपकी प्रशंसा करेंगे। 3.अपने शिक्षाक या बड़ों से पूछकर फस्र्ट-एड (प्राथमिक उपचार) के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए। भाषा की बात 1.‘वालंटियरों’ शब्द वालंटियर का हिन्दी में प्रयुक्त बहुवचन रूप है। अंग्रेजी शब्दों का हिन्दी में प्रयोग करने पर उनका बहुवचन हिन्दी की प्रकृति के अनुसार बनाया जाता है,

इसलिए यहाँ अंग्रेजी का बहुवचन रूप 'वालंटियर्स' न करके 'वालंटियरों' लिखा गया है। पाठ में प्रयुक्त निम्नलिखित अंग्रेजी शब्दों का हिन्दी बहुवचन रूप बनाइए- ट्रेन, कैंप, स्कूल, डॉक्टर, इंजेक्षन। 2. नीचे लिखे मुहावरों का वाक्य में प्रयोग कीजिए: हाहाकार मचना, सब कुछ लुटा देना, चैन से न बैठना। इसे भी जानें केन्द्रीय भाषा संस्थान मैसूर, कर्नाटक में स्थित है।

19. प्राणी वही प्राणी है

(‘प्राणी वही प्राणी है’ शीर्शक कविता में कवि ने मनुष्य के परोपकारी जीवन का चित्र प्रस्तुत किया है।)

तापित को स्निग्ध करे

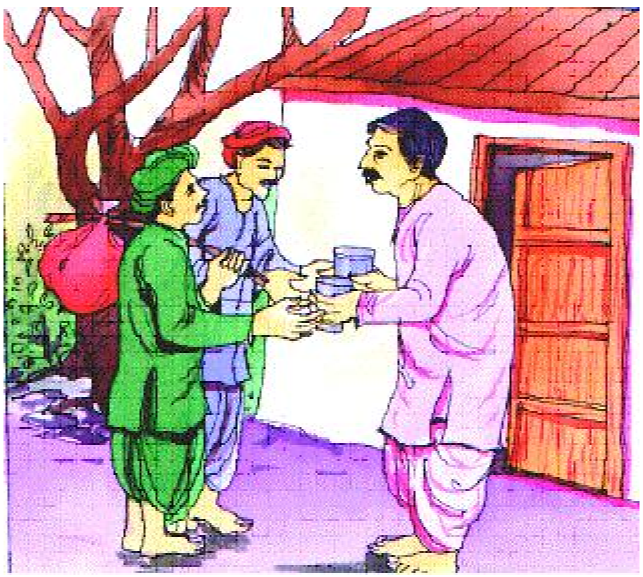

प्यासे को चैन दे

सूखे हुए अधरों को

फिर से जो बैन दे

ऐसा सभी पानी है।

लहरों के आने पर

काई-सा फटे नहीं

रोटी के लालच में

तोते-सा रटे नहीं

प्राणी वही प्राणी है।

लँगड़े को पाँव और

लूले को हाथ दे

सत की सँभार में

मरने तक साथ दे।

बोले तो हमेशा सच

सच से हटे नहीं

झूठ के डराये से

हरगिज डरे नहीं

सचमुच वही सच्चा है।

माथे को फूल जैसा

अपने चढ़ा दे जो

रुकती-सी दुनिया को

आगे बढ़ा दे जो

मरना वही

अच्छा है।

प्राणी का वैसे और

दुनिया में टोटा नहीं

कोई प्राणी बड़ा नहीं

कोई प्राणी छोटा नहीं।

-भवानीप्रसाद मिश्र

भवानीप्रसाद मिश्र का जन्म सन् 1914 ई0 में हुआ। बी0 ए0 तक की शिक्षा प्राप्त करने के बाद वह 'कल्पना'पत्रिका के सम्पादक हो गये। उन्होंने 'आकाशवाणी' में भी कार्य किया। 'गीत फरोश' कविता के कारण उन्हें विशेषख्याति मिली। उनकी

प्रसिद्ध रचनाएँ ‘कमल के फूल’, ‘सतपुड़ा के जंगल’, ‘सन्नाटा’, ‘गीत फरोश’ आदि हैंे। मिश्रजी का निधन सन् 1985 ई0 में हो गया।

शब्दार्थ-

तापित=तपा हुआ, गर्मी से बेचैन। स्निग्ध=चिकना। बैन=वाणी, बोली। सत की सँभार में=मूल्य/सत्य की रक्ष में। सँभार=देख भाल व एक= करना। टोटा=कमी।

प्रश्न-अभ्यास

कविता से

1.कौन-सा वाक्य किस पंक्ति से सम्बन्धित है, वाक्य के सामने लिखिए-

(क)गर्मी को शान्त करे और प्यासे को आराम दे।

(ख)रोटी के लालच में तोते जैसी रट न लगाएँ।

(ग)सत्य की रक्ष के लिए मृत्यु से भी न डरंे।

(घ)देश-दुनिया के लिए अपने माथे को फूल जैसा चढ़ा दंे।

2.निम्नांकित पंक्तियों के भाव स्पष्ट कीजिए -

(क)सूखे हुए अधरों को, फिर से जो बैन दे।

(ख)झूठ के डराये से, हरगिज डरे नहीं।

3.कविता की अन्तिम चार पंक्तियों में लेखक ने प्राणी को क्या माना है ?

विचार और कल्पना

इस कविता में एक अच्छे मनुष्य के कौन-कौन से गुणांे को शामिल किया गया है ? आपके विचार से उसमें कौन से गुण होने चाहिए ?

कुछ करने को

नीचे दी गयी कविता को पूरा कीजिए-

समानता से संग चले,

आँसुओं में संग रहे,

....

....

भाषा की बात

1.यहाँ अधरांे से पहले सूखे हुए शब्द प्रयुक्त हुआ है, जो विशेशण है। इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों में एक से अधिक विशेशण का प्रयोग कीजिए-

चेहरे, आँखंे, फूल, शरीर।

2.‘प्राणी वही प्राणी है’ में ‘वही’ शब्द का विन्यास है-वह+ही। इसी प्रकार तुम्हीं, हमीं, सभी, उसी का विन्यास लिखिए।

3. निम्नलिखित तद्भव शब्दों के तत्सम रूप लिखिए:-

तापित-तप्त

बैन-

माथा-

आग-

भीख-

कोयल-

पढ़ने के लिए-

प्रत्येक जन प्रत्येक जन को बन्धु अपना जान लो,

सुख-दु:ख अपने बन्धुओं का आप अपना मान लो।
सब दु:ख यों बँटकर घटेगा सौख्य पावेंगे सभी,
हाँ, शोक में भी सान्त्वना के गीत गावेंगे सभी।।

साहाय्य दे सकते मनुज को मनुज ही, खग-मृग नहीं,
वे भी न दें तो सब मनुजता व्यर्थ है उनकी वहीं।
निज बन्धुओं को ही न हम यदि पा सकें प्रियता यहाँ-
तो उस परम प्रभु की कृपा-प्रियता हमें रक्खी कहाँ।।

- मैथिलीशरण गुप्त

इसे भी जानें

मुक्त छन्द की पहली कविता निरालाकृत ‘जूही की कली’ है।

20. छिपा रहस्य

(प्रस्तुत पाठ में जानवर की स्वामिभक्ति से सम्बन्धित मार्मिक कहानी वर्णित है।)

कनाडा में मौंट्रियल नाम का बड़ा शहर है। वहाँ कई छोटी-छोटी सड़कें भी हैं। उनमंे से एक है एडवर्ड

स्ट्रीट। उस सड़क को पियरे जितनी अच्छी तरह जानता था उतनी अच्छी तरह और कोई भी नहीं जानता था। उसका एक कारण था। पिछले तीस सालों से पियरे उस सड़क पर बसे सभी परिवारों को दूध बाँटता था।

पिछले पन्द्रह सालों से पियरे की दूधगाड़ी को एक बड़ा सफेद घोड़ा खींचता था।

घोड़े का नाम जोजफ था। षुरू में जब वह घोड़ा दूध-कम्पनी के पास आया तब उसका कोई नाम नहीं था। कम्पनी ने पियरे को सफेद घोड़े के इस्तेमाल की इजाजत दे दी। पियरे ने प्यार से घोड़े की गर्दन को सहलाया और उसकी आँखों में झाँक कर देखा।

'यह एक समझदार, भला और वफादार घोड़ा है,' पियरे ने कहा। 'मैं इनका नाम सन्त जोजफ के नाम पर रखूँगा, क्योंकि वह एक नेक और दयालु इन्सान थे।'

साल भर के अन्दर ही घोड़े ने सड़क का पूरा रास्ता रट लिया। पियरे अक्सर शेखी बघारता, 'मैं तो लगाम छूता तक नहीं हूँ। मेरे घोड़े को तो लगाम की जरूरत ही नहीं है।'

तड़के सुबह पाँच बजे ही पियरे दूध की कम्पनी में रोजाना पहुँच जाता। तब गाड़ी में दूध लादा जाता और फिर जोजफ उसे खींचता। पियरे अपनी सीट पर बैठते ही जोजफ को पुचकारता और घोड़ा अपना मुँह उसकी ओर घुमा देता। आस-पास खड़े अन्य ड्राइवर

कहते, 'सब कुछ ठीक-ठाक है पियरे जाओ।' इसके बाद पियरे और जोजफ इत्मीनान के साथ सड़क पर निकल पड़ते।

पियरे के इशारे के बिना ही गाड़ी अपने आप एडवर्ड स्ट्रीट पहुँच जाती। फिर घोड़ा पहले घर पर रुकता और पियरे को नीचे उतार कर दरवाजे के सामने एक बोतल दूध रखने के लिए करीब तीस सेकेंड की मोहलत देता। घोड़ा फिर दूसरे घर पर रुकता।

इस तरह पियरे और घोड़ा पूरी एडवर्ड स्ट्रीट की लम्बाई पार करते। फिर गाड़ी को घुमाकर दोनों वापस आते। सचमुच जोजफ बहुत होशियार घोड़ा था।

अस्तबल में पियरे, जोजफ की तारीफ करते न थकता। 'मैं कभी उसकी लगाम छूता तक नहीं हूँ। कहाँ-कहाँ रुकना है यह उसे अच्छी तरह मालूम है। अगर जोजफ घोड़ागाड़ी खींच रहा है, तो मेरी जगह अगर कोई अन्धा आदमी भी हो, तो काम चल जायेगा।'

बरसों तक यही सिलसिला चलता रहा। पियरे और जोजफ धीरे-धीरे बूढ़े होने लगे। पियरे की मूँछे अब पक कर सफेद हो गयीं थीं। जोजफ भी अब अपने घुटनों को उतना ऊँचा नहीं उठा पाता था। अस्तबल के सुपरवाइजर जैक को उनके बुढ़ापे का पता तब चला जब एक दिन पियरे लाठी के सहारे चलता हुआ आया।

‘क्या बात है पियरे,’ जैक ने हँस कर पूछा। ‘क्या तुम्हारी

टाँगों में दर्द है?’ ‘हाँ जैक,’ पियरे ने जवाब दिया। ‘मैं अब बूढ़ा हो रहा हूँ और पैर भी दर्द करने लग गये हैं।’

‘बस! तुम अपने घोड़े को दरवाजे पर दूध की बोतलें रखना सिखा दो,’ जैक ने कहा। ‘बाकी सारा काम तो वह करता ही है।’

एडवर्ड स्ट्रीट पर बसे सभी चालीस परिवारों को पियरे अच्छी तरह जानता था। घर के नौकरों को मालूम था कि पियरे लिख-पढ़ नहीं सकता, इसलिए वह उसके लिए कोई चिट्ठी नहीं छोड़ते थे। अगर कभी दूध की और बोतलों की जरूरत होती, तो वे घोड़ागाड़ी की आवाज सुनकर दूर से ही चिल्लाते, ‘पियरे, आज एक और बोतल देना।’

पियरे की याददाश्त बहुत अच्छी थी। वापस अस्तबल पहुँच कर बिना गलती किये वह जैक को दूध का सारा हिसाब बता देता। जैक अपनी डायरी में तुरन्त हिसाब नोट कर लेता था।

एक दिन दूध कम्पनी का मैनेजर सुबह-सुबह अस्तबल का मुआयना करने पहुँचा। जैक ने पियरे की ओर इशारा करते हुए मैनेजर से कहा, ‘जरा देखिए तो! पियरे किस तरह अपने

घोड़े से बात करता है और घोड़ा भी कितने प्यार से अपना मुँह घुमा कर पियरे की बात सुनता है। पियरे और घोड़े में बड़ी गहरी दोस्ती है। इस रहस्य को बस यही दोनों जानते हैं।'

कभी-कभी तो ऐसा लगता है जैसे दोनों हम पर हँस रहे हों। पियरे भला आदमी है, पर बेचारा अब बूढ़ा हो रहा है। क्या मैं आपसे अर्ज करूँ कि अब आप उसे रिटायर कर दें और उसकी पेंशन बाँध दें? उसने उत्सुकता से पूछा।

'बात तो तुम्हारी ठीक है,' मैनेजर ने कहा। 'पियरे अपना काम तीस साल से कर रहा है और कभी कहीं से कोई शिकायत नहीं आयी है। उससे कहो कि अब वह घर पर बैठकर आराम करे। उसे हर महीने पूरी तनख्वाह मिलती रहा करेगी।'

परन्तु पियरे ने रिटायर होने से इनकार कर दिया। उसे इस बात से गहरा

धक्का लगा कि वह अपने प्यारे घोड़े जोजफ से रोज नहीं मिल पायेगा। 'हम दोनों ही अब बूढ़े हो रहे हैं,' उसने जैक से कहा। 'हम दोनों अगर इकट्ठे ही रिटायर हों तो अच्छा होगा। मैं आपसे यह वादा करता हूँ कि जब मेरा घोड़ा रिटायर होगा तब मैं भी काम छोड़ दूँगा।'

जैक एक भला आदमी था। वह पियरे की बात समझ गया। पियरे और जोजफ के बीच रिश्ता ही कुछ ऐसा था जिसे देख दुनिया मुस्कराने लगे। ऐसा लगता था मानो दोनों एक दूसरे का सहारा हों। जब पियरे गाड़ी की सीट पर बैठा हो, जोजफ गाड़ी खींच रहा हो, तब दोनों में से कोई भी बूढ़ा नहीं लगता था। लेकिन काम खत्म होने के बाद पियरे लँगड़ाते हुए सड़क पर इस तरह धीरे-धीरे चलता, जैसे वह बहुत बूढ़ा आदमी हो। उधर घोड़े का भी मुँह लटक जाता। वह हारा-थका सा अस्तबल वापस जाता।

सुबह-सुबह एक दिन जब पियरे आया तो जैक ने उसे एक बेहद बुरी खबर सुनायी। 'पियरे, आज सुबह जोजफ सोकर ही नहीं उठा। वह बहुत बूढ़ा हो गया था। 25 साल की उम्र में घोड़े की वैसी ही हालत हो जाती है जैसी 75 साल के बूढ़े आदमी की होती है।'

'हाँ,' पियरे ने धीरे से कहा। 'अब जोजफ को कभी नहीं देख पाऊँगा।'

'नहीं, तुम उसे देख सकते हो,' जैक ने दिलासा देते हुए कहा 'वह अभी अस्तबल में है और उसके चेहरे पर बड़ी शान्ति है। तुम जाकर उसे देख तो लो।'

पियरे घर लौटने के लिए वापस मुड़ा, 'तुम समझोगे नहीं, जैक।' जैक ने उसका कन्धा थपथपाया, 'फिक्र न करो। हम तुम्हारे लिए जोजफ जैसा ही एक और घोड़ा ढूँढ़ देंगे और महीने भर में तुम जोजफ की तरह उसे भी पूरा रास्ता सिखा देना ... है न ... ।'

पियरे बरसों से एक मोटी टोपी पहनता था। टोपी के हुड से उसकी आँखें लगभग ढँक जाती थीं। उसे उन आँखों में एक निर्जीव भाव दिखायी दिया। पियरे की आँखों से उसके दिल का दर्द झलक रहा था। ऐसा लगता था जैसे उसका दिल रो रहा हो।

'आज छुट्टी ले लो पियरे,' जैक ने कहा। परन्तु पियरे उससे पहले ही घर वापस चल पड़ा था। अगर कोई उसके पास होता तो वह अवष्य पियरे की आँखों से लुढ़कते आँसू देखता और उसका सुबकना सुनता। पियरे एक कोना पार कर सीधा सड़क पर आ गया। उधर

तेजी से आते ट्रक के ड्राइवर ने जोर से हार्न बजाया और दबा कर ब्रेक लगाया, लेकिन पियरे को कुछ सुनायी नहीं दिया।

पाँच मिनट बाद एम्बुलेंस आयी। उसके ड्राइवर ने कहा, 'यह आदमी मर चुका है।'

तब तक जैक और दूध-कम्पनी के कई लोग वहाँ आ पहुँचे और पियरे के मृत शरीर को देखने लगे।

ट्रक ड्राइवर ने गुस्से में कहा, 'यह आदमी खुद-ब-खुद ट्रक के सामने आ गया। शायद ट्रक दिखा ही नहीं। वह ट्रक के सामने इस तरह आया जैसे उसे कुछ दिखायी ही नहीं दे रहा हो- जैसे वह एकदम अन्धा हो।'

एम्बुलेंस का डॉक्टर अब लाश की ओर झुका, 'अन्धा! वह आदमी तो सचमुच अन्धा था। जरा उसकी आँखों का मोतियाबिन्द तो देखो? यह कम से कम पाँच साल से अन्धा होगा।' फिर उसने जैक की तरफ मुड़ कर कहा, 'तुम कहते हो कि यह आदमी तुम्हारे लिए काम करता था? तुम्हें नहीं मालूम कि वह अन्धा था?'

'नहीं...नहीं,' जैक ने हल्के से कहा। 'यह रहस्य हम में से किसी को नहीं पता था। सिर्फ उसके दोस्त जोजफ को पता था...। यह उन दोनों के बीच की आपसी बात थी। सिर्फ .... उन दोनों के बीच की।'

- क्वेन्टीन रेनाल्ड

शब्दार्थ-

वादा= प्रतिज्ञा। वफादार= स्वामिभक्त, मित्रता का निर्वाह करने वाला। शेखी बघारना=बढ़-चढ़ कर बातें करना। इत्मीनान=भरोसा, विश्वास। मोहलत=समय देना, फुरसत । याददाश्त=स्मरणशक्ति। मुआयना=अवलोकन, निरीक्षण, जाँच-पड़ताल। अर्ज करना=निवेदन, प्रार्थना। दिलासा=आश्वासन, सान्त्वना, धीरज।

कहानी से

नीचे दिए गये प्रश्नों में विकल्प चुनकर (झ्) का निशान लगाइए-

1.पियरे जिस छोटी सड़क पर दूध बाँटता था, उसका नाम था -

(क)मौंट्रियल स्ट्रीट(ख)जैक स्ट्रीट

(ग)कनाडा स्ट्रीट(घ)एडवर्ड स्ट्रीट

2.जैक को पियरे के बुढ़ापे का पता तब चला जब एक दिन पियरे-

(क)लंगड़ाता हुआ आया।

(ख)धीरे-धीरे आया।

(ग)एक आदमी का सहारा लेकर आया।

(घ)लाठी के सहारे चलता हुआ आया।

3.पियरे ने रिटायर होने से इनकार कर दिया, क्योंकि-

(क)रिटायर होने की बात सुनकर उसे धक्का लगा था।

(ख)वह अपने प्यारे घोड़े जोजफ से रोज नहीं मिल सकता था।

(ग)वह अभी बूढ़ा नहीं हुआ था।

(घ)उसे दूध बाँटने का काम अच्छा लगता था।

4.पियरे अपने घोड़े का नाम सन्त जोजफ के नाम पर क्यों रखना चाहता था ?

5.पियरे और जोजफ के बीच वह कौन-सी बात थी जिसका रहस्य किसी को पता नहीं था।

6.पाठ के आधार पर बताइए कि ‘समूह 2’ का कौन-सा शब्द ‘समूह 1’ के शब्द से

सम्बंधित है। उन शब्दांे को चुनकर समूह 1 के सामने लिखिए -

समूह- 1समूह- 2

सुपरवाइजरडॉक्टर

पियरेघोड़ा

25 सालजैक

आँखटोपी

घोड़ाअस्तबल

एम्बुलेंसमोतियाबिन्द

विचार और कल्पना

1.किसी रास्ते में या कहीं भी आपको यदि कोई घायल अवस्था में मिले, तो आप क्या करेंगे ?

2.कुछ स्वामिभक्त जानवरों के नाम प्रसिद्ध हैं आप बताइए कि निम्नलिखित जानवरों का नाम किन विशेषलोगों से सम्बन्धित है-

चेतक ,नंदिनी,ऐरावत, नंदी ।

कुछ करने को

1.पाठ में दिये गये तीसरे चित्र को देखकर घोड़े का सुन्दर चित्र बनाइए।

2.निम्नलिखित मर्मस्पर्शी कहानी को पूरा कीजिए-

एक चिड़िया के दो बच्चे थे। दोनों बच्चे अभी मात्र दो दिन के थे और बहुत ही भूखे थे। बाहर घनघोर बारिश हो रही थी और तेज आँधी चल रही थी। ठंड के मारे बुरा हाल था। तभी, एक बच्चे का भूख और तीव्र ठंड के कारण प्राणान्त हो गया। चिड़िया...

....

भाषा की बात

1.निम्नलिखित शब्दों की वर्तनी शुद्ध कीजिए-

अतिथी, तनखाह, मूँह, दुसरे, कमपनी, सुपरवाईजर, नोकरों,

2.समान अर्थ देने वाले शब्द समानार्थी या पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं, उदाहरणार्थ- नीरज, पंकज, पद्म। इन तीनों शब्दों का एक ही अर्थ है- कमल। ये शब्द कमल के

पर्यायवाची शब्द हैं।

नीचे लिखे शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए-

दूध, दुनिया, आँख, घोड़ा।

3.जिन शब्दों के अर्थ एक दूसरे के विपरीत होते हैं, उन्हंे विपरीतार्थी अथवा विलोम शब्द कहते हैं, जैसे - अन्धकार का विपरीतार्थी शब्द है ‘प्रकाश’।

नीचे लिखे वर्गं-क तथा वर्ग-ख के शब्दों में से एक-एक शब्द लेकर साथ-साथ प्रयोग में आने वाले विपरीतार्थी शब्दों के जोड़े बनाइए। उदाहरण= अपना- पराया

वर्ग-कवर्ग-ख

हर्ष निरर्थक

जय विशाद

जड़ अवनति

सार्थक पराजय

उन्नति चेतन

4.निम्नलिखित शब्द-युग्मों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

छोटी-छोटी, जीव-जन्तु, आस-पास, कुछ न कुछ।

5.निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखिए-

(क)जिसे दिखायी न देता हो।(ख)रोगियों को ले जाने वाली गाड़ी।

(ग)जहाँ घोड़े रखे जाते हैं।(घ)जिसकी कोई हद न हो।

इसे भी जानें

विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली चीनी भाषा के बाद क्रमश: स्पेनिश, इंग्लिश, अरेबिक और खड़ी भाषा हिन्दी है।

अनिवार्य-संस्कृत

वन्दना

(1)

प्रभो! त्वं पिता⇒सि, त्वमेवासि माता

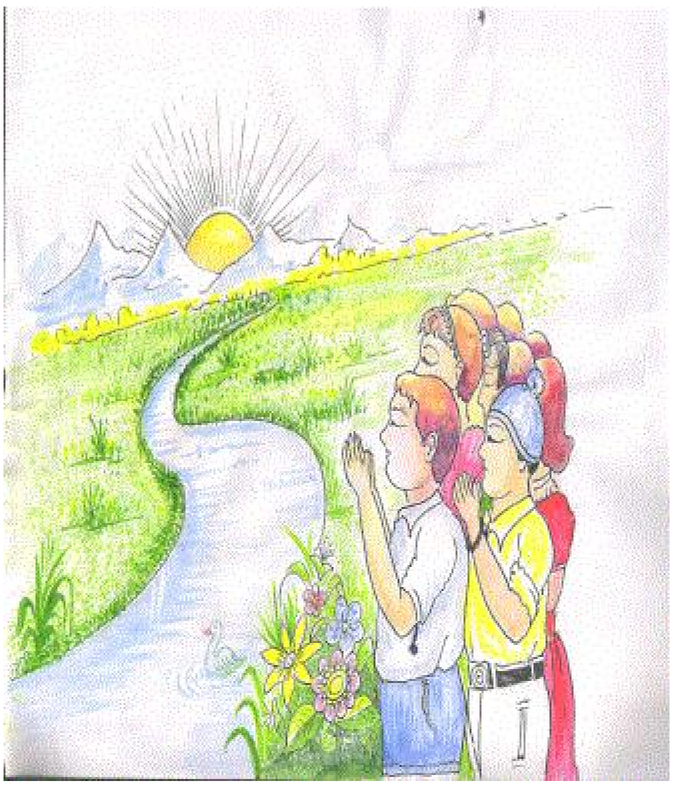

वयं बालका: बालिकास्त्वां नमाम:। त्वमेवासि विश्वस्य कर्ता विधाता त्वमेवासि बन्धु:, त्वमेवासि भर्ता।। (2) प्रभो! देहि विद्यां सुबुद्धिं प्रदेहि बलं देहि देहे सुकर्माणि कर्तुम्। प्रभो! देशभक्तिं सुविद्यां च देहि सदा सद्गुणानेव देव! प्रदेहि।। (3) प्रभो! ज्ञानगङ्गा-तरङ्गैः नवीनै:, समस्तं विभेदं हर त्वं जनानाम्। सुधासार-सिक्ता: सदा प्रेमयुक्ता:, वयं शक्तिमन्त: सदा त्वां नमाम:।। शब्दार्थः प्रभो!=हे स्वामी। त्वम्=तुम। असि=हो। वयम्=हम सभी। नमाम:=नमस्कार करते हैं। कर्ता=करने वाला। विधाता=निर्माता। बन्धु:=सम्बन्धी।

भर्ता=पालक। देहि=दो। प्रदेहि=प्रदान करो। सुकर्माणि=अच्छे कार्य। सद्गुणानेव=(सद्गुणान्+एव)=अच्छे गुणों को ही। विभेदम्=भेद-भाव। हर=दूर करो। सुधासार=अमृत-रस से। सिक्ताः=भीगे हुए। शक्तिमन्तः=शक्तिशाली। अन्वय- हे प्रभो ! त्वं पिता असि, त्वमेव माता असि, त्वमेव विश्वस्य कर्ता असि, विधाता (असि), त्वमेव बन्धुः असि, त्वमेव (विश्वस्य) भर्ता असि। (अत एव) वयं बालकाः बालिकाश्च त्वाम् नमामः ।। 1 ।। हे प्रभो (अस्मभ्यं) विद्यां देहि, सुबुद्धिं प्रदेहि, सुकर्माणि कर्तुं देहे बलं देहि, देशभक्तिं देहि, सुविद्यां देहि। हे देव ! सदा सद्गुणानेव प्रदेहि ।। 2 ।। हे प्रभो ! नवीनैः ज्ञानगङ्गातरङ्गैः जनानां समस्तं विभेदं त्वं हर। (येन) सुधासार सिक्ताः सदा प्रेमयुक्ताः शक्तिमन्तः वयं सदा त्वां नमामः ।। 3।। भावार्थ तुम हमारे पिता हो, तुम्हीं हमारी माता हो, इस विश्व का निर्माण करने वाले हो, विधाता तुम्हीं हो, तुम ही हमारे बन्धु हो तथा तुम्हीं हमारे पालन-पोशण करने वाले हो, हे प्रभु ! हम सब बालक-बालिकाएँ तुम्हें नमस्कार करते हैं। ।। 1 ।। हे प्रभु ! (हमें) विद्या और सुबुद्धि प्रदान करो, अच्छे कार्यों को करने के लिए हमारे शरीर में बल प्रदान करो, हे प्रभु ! हमें देशभक्ति का भाव तथा सुविद्या प्रदान करो। हे देव ! हमेशा हम में सद्गुणों का ही विकास करो। ।। 2 ।। हे प्रभु ! अपने ज्ञान-गंगा के नवीन तरंगों से मनुष्यों के समस्त भेद-भाव को हर लो। हम सब में अमृत रस एवं प्रेम-भाव का संचार करने वाले, शक्ति प्रदान करने वाले प्रभु ! तुम्हें हम सब प्रणाम करते हैं। ।। 3 ।। शिक्षाण-संकेत - श्लोकों का सस्वर गायन कराएँ।

1. क्रीडा-महोत्सवः

(अकारान्ताः पुंल्लिङ्गशब्दाः वर्तमानकालः च)

अद्य विद्यालयस्य वार्शिक-क्रीडा-महोत्सवः अस्ति। विद्यालयस्य परिसरे एव क्रीडाक्षेत्रम् अस्ति। अवनीशः, उमेशः, गोकुलः, साधना, गीता इत्यादयः बालकाः बालिकाः च हस्तकन्दुके निपुणाः सन्ति। इदानीं शश्ठकक्षयाः सप्तमकक्षयाः च छात्राणाम् परस्परं क्रीडाप्रतियोगिता प्रचलति।

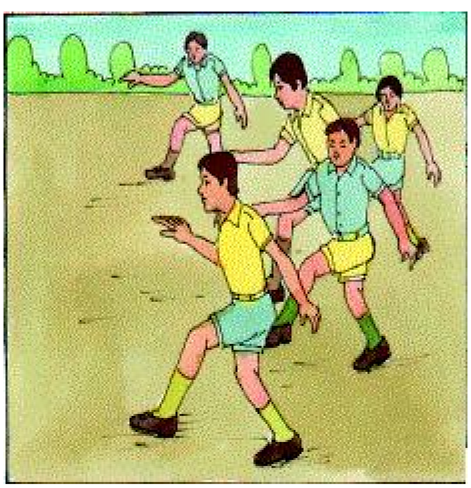

अस्माकं क्रीडाध्यापका: निर्णायका: भवन्ति। अवनीशस्य नेतृत्वे छात्रा: आगच्छन्ति। क्रीडादर्शनाय विद्यालयस्य सर्वे छात्रा: उपस्थिता: सन्ति। ते करतलवादनेन कोलाहलेन च क्रीडकानां छात्राणाम् उत्साहवर्धनं कुर्वन्ति। क्रीडाया: पश्चात् प्रधानाध्यापक: पुरस्काररूपेण कन्दुकं वितरति। अध्यापका: छात्रेभ्य: मिश्टान्नं वितरन्ति। स्वास्थ्यलाभाय क्रीडा भवति।

शब्दार्थ:

अद्यत्=आज। परिसरे=मैदान में। क्रीडाक्ष्ेात्रम्=खेल का मैदान। हस्तकन्दुके=बालीबाल में। क्रीडाध्यापका:=खेल के अध्यापक। करतलवादनेन=ताली बजाने से। कोलाहलेन=हल्ला करने से। क्रीडकानां छात्राणाम्=खेलने वाले छात्रों के। वितरन्ति=बाँटते हैं।

1. उच्चारण करें-

वार्शिकम् क्रीडाक्षेत्रम्स्वास्थ्यम्उत्साहवर्धनम्

मिश्टान्नम्पश्चात्क्रीडाया:स्वास्थ्यलाभाय

2.एक पद में उत्तर दें-

(क)विद्यालये अद्य किम् अस्ति?

(ख)उमेश: कस्मिन् खेले निपुण: अस्ति?

(ग)कस्य नेतृत्वे छात्रा: आगच्छन्ति?

(घ)छात्रा: किं कुर्वन्ति?

(ङ)अध्यापका: किं वितरन्ति?

3.मजूशा से उचित पदों का चयन कर रिक्त स्थानों को भरें-

निर्णायका: अस्ति कन्दुकं नेतृत्वे छात्रेभ्य:

(क)विद्यालयस्य परिसरे एव क्रीडाक्षेत्रम् ....।

(ख)अस्माकं क्रीडाध्यापका: .... भवन्ति।

(ग)अवनीशस्य .... छात्रा: आगच्छन्ति।

(घ)प्रधानाध्यापक: पुरस्काररूपेण .... वितरति।

(ङ)अध्यापका: .... मिश्टान्नं वितरन्ति।

4.रेखांकित पदों के आधार पर प्रश्न निर्माण करें-

(क)अद्य विद्यालयस्य वार्शिक-क्रीडामहोत्सव: अस्ति।

(ख)प्रधानाध्यापक: पुरस्काररूपेण कन्दुकं वितरति।

(ग)अध्यापका: छात्रेभ्य: मिश्टान्नं वितरन्ति।

5.हिन्दी में अनुवाद करें -

(क)विद्यालयस्य परिसरे एव क्रीडाक्षेत्रम् अस्ति।

(ख)छात्राणां परस्परं क्रीडाप्रतियोगिता प्रचलति।

(ग)छात्रेभ्य: मिश्टान्नं वितरन्ति।

(घ)स्वास्थ्यलाभाय क्रीडा भवति।

(ङ)प्रधानाध्यापक: कन्दुकं वितरति।

6.नीचे कर्ता, कर्म और धातु दिये गये हैं, उनमें उचित विभक्तियों को जोड़कर वाक्य रचना करें-

छात्रपुस्तकपठ्   यथा- छात्र: पुस्तकं पठति।

करीमओदनखाद्= ....।

रमेशग्रामगच्छ्= ....।

पीटरपत्रलिख्= ....।

रमाकन्दुकनी (नय्)= ....।

विशेष-

(क) जिन शब्दों के अन्तिम अक्षर में ‘अ’ स्वर होता है उन्हें अकारान्त शब्द कहते हैं, जैसे- नर,

(न्+अ+र्+अ) छात्र, अनिल, रमेश, घट, पट, अश्व, भ्रमर, मृग, गज आदि। ये

सभी शब्द पुंल्लिङ्ग हैं। इनके अतिरिक्त फल, जल, पुश्प आदि अकारान्त शब्द नपुंसकलिङ्ग

होते हैं। परिशिश्ट में दिये गये अकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्द ‘बालक’ के रूप को देखें और इसी प्रकार उपर्युक्त सभी अकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्दों के प्रथमा एवं द्वितीया विभक्ति में रूपों का अभ्यास करें।

(ख)किसी काम के करने को क्रिया कहते हैं। जो काम चल रहा हो उसे वर्तमान काल की क्रिया कहते हैं। ‘जाता है, जाती है, नहीं जाते हैं’ यह वर्तमान काल की क्रिया कहलाती है। इसी प्रकार जिसके अन्त में ‘ता है, ती है या ते हैं’ चिह्न होता है, उसे वर्तमान काल की क्रिया कहते हैं। इस क्रिया को बताने के लिए धातु के लट्लकार के रूप का प्रयोग होता है। परिशिश्ट में दिये गये ‘पठ्’ धातु के लट्लकार-रूप को देखें तथा निम्नांकित धातुओं के लट्लकार के रूप का भी अभ्यास करें-

नम्=नमस्कार करना। धाव्=दौड़ना। वद्=बोलना। दृश् (पष्य)=देखना। प्रच्छ् (पृच्छ्)=पूछना। चल्=चलना। खेल्=खेलना। उत्पत्=उड़ना।

शिक्षण-संकेत -

(क) ‘कृ’ और ‘अस’् धातुओं के लट्लकार के रूप का अभ्यास कराएँ।

(ख)पाठ में अकारान्त पंुल्लिङ्ग शब्दों के विविध रूपों का प्रयोग हुआ है। छात्रों को उनका अभ्यास कराएँ।

सत्यमेव जयते।

2. पत्र-नौका

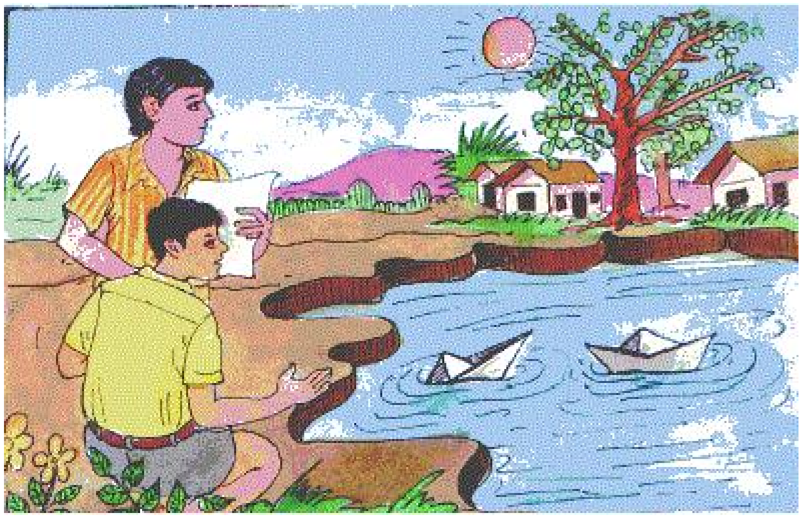

पत्रनिर्मिता तव नौका

पत्रनिर्मिता मम नौका।

तव नौका सलिले गलिता

अग्रे मम नौका चलिता।।

नहि नहि दु:खं करणीयम्

आनेयं नूतनपत्रम्।

सा गलिता यदि किं गलिता

नवा नवा नौका रचिता।।

वायु: यदा वहेद् मन्दम्

तदा तडागो गमनीय:।

पुन: नवीने ते नौके

गमिष्यत: पारं चलिते।।

शब्दार्थ:-

पम्=कागज। निर्मिता=बनायी हुई। नौका=नाव। सलिले=पानी में। गलिता=गल गयी। अग्रे=आगे। चलिता=चली। करणीयम्=करना चाहिए। आनेयम्=लाना चाहिए। नूतनपत्रम्=नया कागज। नवा=नयी (नवा नवा=नयी-नयी)। रचिता=बनायी गयी।

यदा=जब।   तदा=तब। वहेद्=चले। तडागः=तालाब। गमनीयः=जाना चाहिए। पुनः=फिर।
 ते=वे दोनांे। स्त्रीलिङ्ग)

अभ्यास

1. एक पद में उत्तर दें-

(क)नौका केन निर्मिता?

(ख) किम् आनेयम्?

(ग) नवा नवा किं रचिता?

(घ) किं न करणीयम्?

2.अधोलिखित श्लोकांशों का क्रम में मिलान करें -

‘क’‘ख’

तव नौका सलिले गलितापत्र निर्मिता मम नौका।

पत्र निर्मिता तव नौकानवा नवा नौका रचिता।

सा गलिता यदि किं गलिताअग्रे मम नौका चलिता।

3.मजूशा से क्रिया पदों को लेकर श्लोकांश की पूर्ति करें-

चलिता निर्मिता रचिता गलिता।

(क)पत्र ...... तव नौका।

(ख) मम नौका अग्रे ......।

(ग) तव नौका सलिले ......।

(घ) नवा नवा नौका ....।

4.संस्कृत में अनुवाद करें-

(क) मेरी नाव कागज की बनी है।

(ख) तुम्हारी नाव पानी में गल गयी।

(ग) मेरी नाव आगे चली गयी।

(घ) दु:ख नहीं करना चाहिए।

(ङ) नया कागज लाएँ।

(च) नयी-नयी नाव बनाएँ।

शिक्षाण-संकेत -

(क)छात्रों को कक्ष में कविता का अभ्यास तथा वाचन कराएँ।

(ख)कंठस्थ की गयी कविता की कोई चार पंक्तियाँ छात्रों से लिखवाएँ।

विद्या सर्वस्य भूषणम् ।

3. मूर्खसेवक:

(लङ्लकार:)

एकस्मिन् नगरे एक: नृप: आसीत्। तस्य भवने बहव: पशव: आसन्। ते नृपस्य सेवाम् अकुर्वन्। तेषु पषुषु एक: वानर: अपि तस्य प्रिय: अभवत् ।

एकदा नृप: सुप्त: आसीत्। तदा स: वानर: व्यजनेन तम् अवीजयत्। तस्मिन् काले एका मक्षिका नृपस्य नासिकाया: उपरि उपाविशत् । वानर: वारं वारं तां मक्षिकां व्यजनेन न्यवारयत् तथापि सा मक्षिका पुन: पुन: आगत्य तत्रैव अतिश्ठत् । तेन स: वानर: क्रुद्ध: अभवत्। तां मक्षिकां हन्तुं स: खड्गेन प्रहारम् अकरोत् । मक्षिका तु उड्डीय दूरम् अगच्छत्, किन्तु प्रहारेण नृपस्य नासिका छिन्ना अभवत् ।

अत: मूर्खसेवका: दूरत: एव त्याज्या: ।

शब्दार्थः

नृप:=राजा। एकदा = एक समय (एक बार) । व्यजनेन = पंखे से। अवीजयत् = हवा कर रहा था। मक्षिका = मक्खी। हन्तुम् = मारने के लिए। खड्गेन = खड्ग से (तलवार से)। न्यवारयत् = हटाया। उड्डीय = उड़कर। नासिका = नाक ।

अभ्यास

1.उच्चारण करें-

पषुषुव्यजनेनअवीजयत्

क्रुद्ध:खड्गेनउड्डीय

2.एक पद में उत्तर दें-

(क) कस्य भवने पशव: आसन् ?

(ख) क: पषु: राज्ञ: प्रिय: आसीत् ?

(ग) नृपस्य नासिकाया: उपरि का उपाविशत् ?

(घ) वानर: कां हन्तुं खड्गेन प्रहारम् अकरोत् ?

(ङ) कस्य नासिका छिन्ना अभवत् ?

3. पाठ के उचित शब्दों से रिक्त स्थानों की पूर्ति करें-

(क) .... नगरे एक: नृप: आसीत् ।

(ख) एकदा नृप: .... आसीत् ।

(ग) मक्षिका पुन: पुन: .... त=ैव अतिश्ठत् ।

(घ) मूर्खसेवका: .... त्याज्या: ।

(ङ) .... व्यजनेन नृपम् अवीजयत् ।

4. संस्कृत में अनुवाद करें-

(क) पषु राजा की सेवा करते थे।

(ख) एक बार राजा सोये हुए थे ।

(ग) मक्खी उड़ कर दूर चली गयी ।

(घ) उसने साँप पर लाठी से प्रहार किया ।

5.भूतकाल में लङ्लकार का प्रयोग होता है, जैसे- आसीत् (था), 'अस्' धातु, लङ्लकार, प्रथम पुरुष एकवचन। इस पाठ में प्रयुक्त लङ्लकार के रूपों को ढूँढ़कर लिखें।

शिक्षाण-संकेत -

1- भू, वद्, गम् धातुओं का लङ्लकार में रूप लिखवाएँ ।

2- इस प्रकार की कोई अन्य कहानी हिन्दी में लिखकर दिखाने को कहें ।

आज्ञा गुरूणां ह्यविचारणीया ।

4. वर्षर्तुः (वर्षा+ऋतुः)

(अकारान्त-नपुंसकलिङ्गशब्दा:,भविष्यत्काल: च)

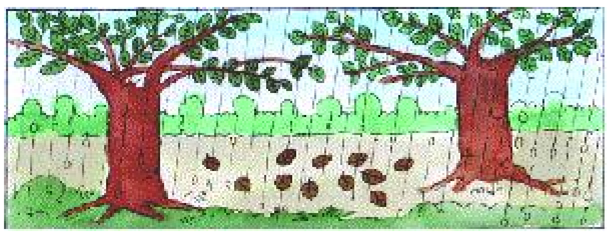

आकाशं मेघाच्छन्नं वर्तते। वर्षा निकटे अस्ति। जलवर्षणेन बालानां जनानां च महान् आनन्दो भविष्यति। वृक्षेषु नवीनानि पत्राणि उद्भविष्यन्ति। प्राचीनानि पत्राणि पतिष्यन्ति। पत्रेषु वर्षाजलं मधुरं ध्वनिं करिष्यति।

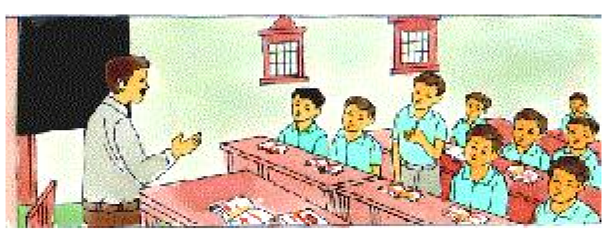

अध्यापक: -देवदत्त! त्वं कथय, वर्षाया: अनन्तरं कृषक: किं किं कार्यं करिष्यन्ति?

देवदत्त:-गुरो!वर्षाया: अनन्तरं कृषक: क्षेत्रेषु धान्यं वप्स्यन्ति। एतेन

धान्यानि भविष्यन्ति। धान्यं दृश्ट्वा कृषकणां हृदयं प्रफुल्लितं भविष्यति।

अध्यापक:-वर्षाकाले जना: कीदृशं कष्टम् अनुभविष्यन्ति?

देवदत्त:-गुरो! वर्षाकाले भूमि: पङ्किला भविष्यति, येन जना: भूमौ पतिष्यन्ति। जलस्य अधिकतया मार्गा: अवरुद्धा: भविष्यन्ति। गमनागमने बाधा आगमिष्यति। मेघा: गर्जनं करिष्यन्ति तथा विद्युत्पात: अपि भविष्यति। येन जना: भयभीता: भविष्यन्ति। एतत्सर्वं कष्टकरम् एव। तथापि अयम् ऋतु: जनानां कृते अतीव सुखकरो वर्तते।

शब्दार्थः

वर्षर्तु:=(वर्षा+ऋतु:)बरसात का मौसम। मेघाच्छन्नम्=(मेघ+आच्छन्नम्)बादलों से ढँका हुआ। वर्तते=है। वर्षणेन=वर्षा से। बालानाम्=बच्चों को। जनानाम्=मनुष्यों को, लोगों को। भविष्यति=होगा। वृक्षेषु=पेड़ों में, पेड़ों पर। उद्भविष्यन्ति=उत्पन्न होंगे। पतिष्यन्ति=गिरेंगे। पत्रेषु=पत्तों पर। वर्षाजलम्=वर्षा का जल। अनन्तरम्=बाद में। करिष्यन्ति=करेंगे। क्षेत्रेषु=खेतों में। वप्स्यन्ति=बोयेंगे। अनुभविष्यन्ति=अनुभव करें। पङ्किला=कीचड़ युक्त। येन=जिससे। आगमिष्यति=आयेगी। विद्युत्पात:=बिजली का गिरना। एतत्सर्वम्=(एतत्+सर्वम्) यह सब। कृते=लिए।

अभ्यास

1.उच्चारण करें-

मेघाच्छन्नम्जलवर्षणेनउद्भविष्यन्ति

प्रफुल्लितम्वप्स्यन्तिविद्युत्पात:

2.एक पद में उत्तर दें-

(क)आकाशं कदा मेघाच्छन्नं भवति?

(ख)वृक्षेषु कानि उद्भविष्यन्ति?

(ग)वर्षाजलं किं करिष्यति?

(घ)भूमि: कदा पङ्किला भविष्यति?

(ङ)जना: केन भयभीता: भविष्यन्ति?

3.मजूशा से उचित पदों का चयन कर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें-

करिष्यन्ति   पतिष्यन्ति   मार्गा: भविष्यन्ति   आगमिष्यति

(क)प्राचीनानि पत्राणि ----------।

(ख)वर्षाकाले मेघा: गर्जनम् -------।

(ग)जलस्य अधिकतया ------- अवरुद्धा: भविष्यन्ति।

(घ)गमनागमने बाधा --------।

(ङ)विद्युत्पातेन जना: भयभीता: ---------।

विशेष-

(क)भविष्य में होने वाली क्रिया को भविष्यत् काल की क्रिया कहते हैं। ‘जायेगा, क्यों जायेगी, नहीं जायेंगे’ आदि भविष्यत् काल की क्रिया होती है अर्थात् उसके अन्त में ‘गा, गी या गे, चिह्न होते हैं। इसके लिए संस्कृत में धातु के लृट्लकार के रूप का प्रयोग होता है। नीचे लृट्लकार के रूपों को ध्यान से पढ़ें-

भू =होना (भविष्यत् काल/लृट्लकार)

एकवचनद्विवचनबहुवचन

प्रथम पुरुष-भविष्यतिभविष्यत:भविष्यन्ति

मध्यम पुरुष-भविष्यसिभविष्यथ:भविष्यथ

उत्तम पुरुष-भविष्यामिभविष्याव:भविष्याम:

इसी प्रकार पठ्, गम्, खेल्, चल्, वद्, खाद्, कृ धातुओं का लृट्लकार में रूप चलायें। उद्+भू (उद्भव्)=उत्पन्न होना, उत्+पत् (उत्पत्)=उड़ना, नि:+सृ (नि:सर्)=निकलना, वि+तृ (वितर्)=बाँटना- धातुओं के लृट्लकार के रूपों का भी इसी प्रकार अभ्यास करें। आपने देखा कि इन सभी धातुओं के अन्त में क्रमश: योग हुआ है-

एकवचनद्विवचनबहुवचन

प्रथम पुरुषइष्यतिइष्यत:इष्यन्ति

मध्यम पुरुषइष्यसिइष्यथ:इष्यथ

उत्तम पुरुषइष्यामिइष्याव:इष्याम:

ध्यान रहे, कुछ धातुओं में ‘इ’ के बिना केवल ‘स्यति, स्यत:, स्यन्ति’ आदि चिह्न का योग होता है। जैसे- पा=पीना (भविष्यत् काल लृट्लकार), पास्यति, पास्यत:, पास्यन्ति।

(ख)नपुंसकलिङ्ग शब्दों के रूप प्रथमा और द्वितीया विभक्ति में समान होते हं, जैसे-

वन=जंगल (नपुंसकलिङ्ग)

प्रथमा विभक्तिवनम्वनेवनानि

द्वितीया विभक्तिवनम्वनेवनानि

4.रेखांकित पदों के आधार पर प्रश्न निर्माण करें-

(क)वर्षाया: अनन्तरं कृषका: क्षेत्रेषु धान्यं वपन्ति।

(ख)धान्यं दृश्टवा कृषकणां हृदयं प्रफुल्लितं भवति।

(ग)वर्षाकाले आकाशं मेघाच्छन्नं भवति।

5.संस्कृत में अनुवाद करें-

(क)आकाश में बादल घिरे हैं।

(ख)कल वर्षा होगी।

(ग)मैं कल घर जाऊँगा।

(घ)तुम दोनों कहाँ जाओगे?

(ङ)हम दोनों अपना पाठ पढ़ेंगे।

6.हिन्दी में अनुवाद करें -

(क)वृक्षेषु नवीनानि पत्राणि उद्भविष्यन्ति।

(ख)वर्षाया: अनन्तरं कृषक: धान्यंा वप्स्यन्ति।

(ग)धान्यं दृश्ट्वा कृषकणां हृदयं प्रफुल्लितं भविष्यति।

(घ)वर्षाकाले भूमि: पङ्किला भविष्यति।

(ङ)जलस्य अधिकतया मार्गा: अवरुद्धा: भविष्यन्ति।

शिक्षाण-संकेत-

भविष्यत् काल के सरल वाक्यों का निर्माण एवं मौखिक प्रयोग कराएँ।

अहिंसा परमो धर्म:।

5. नीतिश्लोकाः

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।

सर्वे भद्राणि पष्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्।।1।।

अलसस्य कुतो विद्या? अविद्यस्य कुतो धनम्?

अधनस्य कुतो मित्रम्? अमित्रस्य कुतः सुखम्?।।2।।

विद्या ददाति विनयम्, विनयाद् याति पात्रताम्।

पात्रत्वाद् धनमाप्नोति, धनाद् धर्मः ततः सुखम्।।3।।

पुस्तकस्था तु या विद्या, परहस्तगतं धनम्।

कार्यकाले समुत्पन्ने, न सा विद्या न तद् धनम्।।4।।

परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः, परोपकाराय वहन्ति नद्यः।

परोपकाराय दुहन्ति गावः, परोपकारार्थमिदं शरीरम्।।5।।

शब्दार्थः

निरामयाः=नीरोग (निर्+आमय)। दुःखभाग् = दुःखी। अलसस्य=आलसी को। अधनस्य=निर्धन को, गरीब को। पात्रताम्=योग्यता को। पात्रत्वात्=योग्यता से।

आप्नोति=प्राप्त करता है। ततः=उससे। कुतः=कहाँ। परहस्तगतम्=दूसरे हाथ में गया। कार्यकाले= आष्यकता पड़ने पर अथवा अवसर आने पर।

अन्वय-

1.सर्वे सुखिनः भवन्तु। सर्वे निरामयाः सन्तु। सर्वे भद्राणि पष्यन्तु। कश्चित् दुःखभाग् मा भवेत्।

2.अलसस्य विद्या कुतः? (भवति) अविद्यस्य धनं कुतः? (भवति) अधनस्य मित्र कुतः? (भवति) अमित्रस्य सुखं कुतः? (भवति)ं

3.विद्या विनयं ददाति। विनयात् पात्रतां याति। पात्रत्वात् धनम् आप्नोति। धनात् धर्मः (भवति)। ततः सुखं (भवति)।

4.या विद्या पुस्तकस्था (भवति), धनं तु परहस्तगतं (भवति)। कार्यकाले समुत्पन्ने सा विद्या

(उपयोगाय) न भवति। तथा तद् धनं (उपयोगाय न भवति)।

5.वृक्षः परोपकाराय फलन्ति। नद्यः परोपकाराय वहन्ति। गावः परोपकाराय दुहन्ति। (अतः) इदं शरीरं परोपकारार्थं भवति।

अभ्यास

1.उच्चारण करें-

दुःखभाग्भवेत्अविद्यस्यपा=त्वात्

धनमाप्नोतिपुस्तकस्थापरोपकारार्थमिदम्

2.एक पद में उत्तर दें-

(क) सर्वे किं पष्यन्तु ?(ख) कस्य मित्र न भवति ?

(ग) विद्या किं ददाति ?(घ) कीदृशं धनं धनं न भवति ?

3.रिक्त स्थानों की पूर्ति करें-

(क) सर्वे .... पष्यन्तु।(ख) अमित्रस्य कुत: ....।

(ग) परोपकाराय दुहन्ति ....।(घ)धनाद् धर्म: तत: ....।

4.बड़े वृत्त में दिये गये पदों के साथ छोटे वृत्त में दिये गये उचित क्रिया पदों

को जोड़ते हुए वाक्य रचना करें -

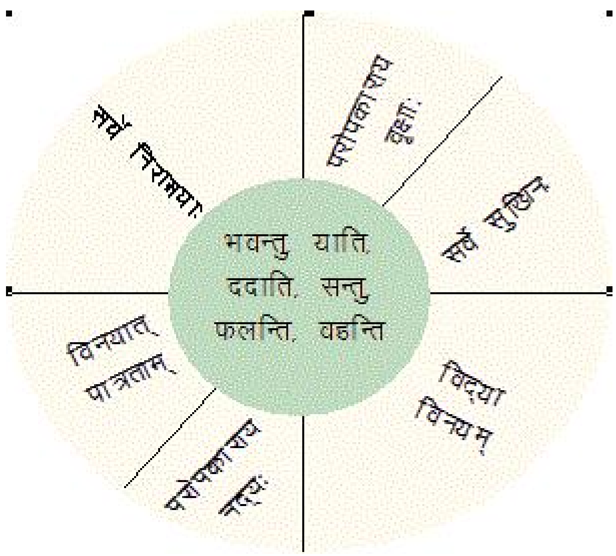

(क).........................।(घ).........................।

(ख).........................।(ङ).........................।

(ग)........................।(च)........................।

5.संस्कृत में अनुवाद करें-

(क) विद्या विनय देती है।

(ख) विनय से योग्यता आती है।

(ग) परोपकार के लिए यह शरीर है।

शिक्षण-संकेत -

नीतिश्लोकों का सस्वर पाठ कराएँ।

लोभ: पापस्य कारणम्।

6. अस्माकं दिनचर्या

(विधिलिङ्लकार:)

वयं स्वास्थ्यस्य लाभाय सावधाना: भवेम, यथा अस्माकं शरीरे सर्वाणि अङ्गानि स्वं स्वं कार्यं सम्यक् कुर्यु:। प्रतिदिनं सूर्योदयात् पूर्वम् उत्थानं कुर्यात्। भूमौ पादस्पर्शात् पूर्वं जन: ईश्वरं नमेत्। तत: जलं पिबेत्, बहि: स्वच्छपरिवेशे भ्रमेत्।

दन्तानां शोधनाय प्रतिदिनं दन्तधावनं कुर्यात्। शुद्धजलेन स्नानं कुर्यात्। स्नात्वा उष्ण भोजनं कुर्यात्। भोजनान्ते तक्रं पिबेत्। निश्चितसमये विद्यालयं गच्छेत्। विद्यालये गुरुजनं सादरं नमेत्। मित्रं च अभिवादयेत्। अध्ययनं मनोयोगेन कुर्यात्। अभ्यासपुस्तिकायां सुन्दरं लिखेत् प्रश्नं च पृच्छेत्। कदापि तत्र कोलाहलं मा कुर्यात्।

विद्यालयीय-क्रियाकलापे उत्साहेन सम्मिलितं भवेत्। क्रीडावादने मित्रै: सह क्रीडेत्। सांस्कृतिक क्रियाकलापेअपि सोत्साहेन सम्मिलितं भवेत्। वृक्षरोपणेन विद्यालयस्य शोभां वर्धयेत्।

विद्यालयात् गृहम् आगत्य जलपानं कुर्यात्। तत्पश्चात् क्रीडाक्षेत्रे क्रीडेत्। व्यायामं च कुर्यात्। सायं गृहकार्यं पाठाभ्यासं च कुर्यात्। रात्रो भोजनोपरान्तं दुग्धं पीत्वा शयनं कुर्यात्।

जीवने दुर्व्यसनं कदापि न कुर्यात्। धूम्रपानं कदापि न कुर्यात्। तमालसेवनं सदा परिहरेत्। पूगीपुटिकया तमालगुटिकया च दन्तेषु रोगा: भवन्ति, अत: ता: सदा परिहरेत्। दुर्जनानां सङ्गं त्यजेत्। सर्वदा सत्सङ्गतिं कुर्यात्। चिन्तने गम्भीरता भवेत्। आदर्शपुरुषाणां चरित्रम् अनुकुर्यात्।

शब्दार्थ:-

भवेम=होवें। सम्यक्=अच्छे प्रकार से। कुर्यु:=करें। उत्थानम्=उठना। कुर्यात्=करना चाहिए। शोधनाय=साफ करने के लिए। तक्रम्=मट्ठा। दुर्व्यसनम्=खराब आदतें। तमालसेवनम्=तम्बाकू का सेवन। परिहरेत्=छोड़ देना चाहिए। पूगीपुटिका=सुपाड़ी की पुडिया। तमालगुटिका=सुरती की पुडिया। त्यजेत्=छोड़ दें। अनुकुर्यात्=अनुकरण करें।

अभ्यास

1.उच्चारण करें-

पादस्पर्शात्स्वच्छपरिवेशेअभिवादयेत्सत्सङ्गतिम्

क्रीडाक्षेत्रेपूगीपुटिकया अभ्यासपुस्तिकायाम्अनुकुर्यात्

2.एक पद में उत्तर दें-

(क) प्रतिदिनं कदा उत्थानं कर्तव्यम् ?

(ख) प्रात:काले कीदृशे परिवेशे भ्रमेत् ?

(ग) दन्तानां शोधनाय प्रतिदिनं किं कुर्यात् ?

(घ) सर्वदा कस्य सङ्गतिं कुर्यात् ?

3.हिन्दी में अनुवाद करें-

(क)बहि: स्वच्छ-परिवेशे भ्रमेत्।

(ख)पाठं मनोयोगेन पठेत्।

(ग)विद्यालयीय-क्रियाकलापे उत्साहेन सम्मिलितं भवेत्।

(घ)भोजनोपरान्तं शयनं कुर्यात्।

4.पाठ के आधार पर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें-

(क)भोजनान्ते-............पिबेत्।

(ख)जीवने.......................कदापि न कुर्यात्।

(ग)तमालसेवनं सदा................. ।

(घ)दुर्जनानां सङ्गम्................... ।

5.स्तम्भ 'क' में नीचे कुछ दिनचर्या से सम्बन्धित वाक्यांश दिये गये हैं।

उनका क्रम में स्तम्भ 'ख' से मिलान करें।

'क' 'ख'

(क) अहं प्रात: पचवादनेगच्छामि

(ख) तत: नित्यक्रियाम् शये

(ग) भोजनान्ते विद्यालयम् गृह्णामि

(घ) मनोयोगेन शिक्षाम्आगच्छामि

(ङ)क्रीडावादने मित्रै: सहजागर्मि

(च)विद्यालयात् चतुर्वादने गृहम्करोमि

(छ)क्रीडाम्, पठनम्, भोजनं च कृत्वाखेलामि

विशेष-

भोजनान्ते तक्रं पिबेत् (भोजन के बाद मट्ठा पीना चाहिए)। इसको बताने के लिए 'पिबेत्' का प्रयोग किया गया है। 'चाहिए' के अर्थ में विधिलिङ्लकार के रूपों का प्रयोग होता है। इसी प्रकार खाना चाहिए (खादेत्), प्रणाम करना चाहिए (प्रणमेत्), जाना चाहिए (गच्छेत्), देखना चाहिए (पष्येत्) आदि क्रियाओं को, जिसमें चाहिए लगा हो, बताने के लिए धातु के विधिलिङ्लकार के रूपों का प्रयोग होता है।

पा = पिब् = पीना (विधिलिङ्लकार)

पुरुषएकवचनद्विवचनबहुवचनप्रथम पिबेत्पिबेताम्पिबेयु:मध्यम पिबे:पिबेतम्पिबेत

उत्तम पिबेयम्पिबेवपिबेम

इसी प्रकार निम्नलिखित धातुओं के रूपों का मौखिक अभ्यास करें-

धाव्=दौड़ना। गम्=गच्छ् (जाना)। लिख्=लिखना। नम्=नमस्कार करना।

भू (भव्)=होना।त्यज्=त्यागना (छोड़ना)। भ्रम्=घूमना। खाद्=खाना। पत्=गिरना।

शिक्षण-संकेत -

छात्रों को दुर्व्यसनों से होने वाले हानियों के बारे में परिचित कराएँ।

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।

वर्ण-परिचय

संस्कृत भाषा में वर्ण दो प्रकार के होते हैं- 'स्वर' और 'व्य´जन'। इन्हें क्रमश: 'अच'् और 'हल्' भी कहते हैं।

स्वर व्य´जन

अ, इ उ ऋ लृ - ह्रस्व स्वर। क ख ग घ ङ(कु = कवर्ग।)

आ, ई, ऊ ि - दीर्घ स्वर।   च छ ज झ ´(चु = चवर्ग।)ए, ऐ, ओ, औ - दीर्घ संयुक्तस्वर।

ट ठ ड ढ ण (टु = टवर्ग।) त थ द ध न (तु = तवर्ग।)

अं अनुस्वार (-̇) तथा प फ ब भ म   (पु = पवर्ग।)

अ: विसर्ग (:) अयोगवाह कहे जाते हैं।य व र ल ----(यण्) ----अन्त:स्थ वर्ण

स्वर दो प्रकार के होते हैं-अनुनासिक श श स ह ----(शल्) -----ऊश्म वर्ण(चन्द्रबिन्दु युक्त -ँ) तथा   {क्ष = क्+श, = = त्+र, ज्ञ=ज्+´ संयुक्त व्य´जन}

निरनुनासिक (बिना चन्द्रबिन्दु के)

सन्धि-विचार

सन्धि शब्द का सामान्य अर्थ है- जोड़ (मेल)। जब दो शब्द पास-पास आते हैं, तो एक दूसरे की निकटता के कारण पहले शब्द के अन्तिम वर्ण और दूसरे शब्द के प्रथम वर्ण में जो परिवर्तन, परिवर्धन होता है, उसे सन्धि कहते हैं। सन्धि के लिए दोनों वर्ण एक दूसरे के पास-पास सटे हुए होने चाहिए। दूरवर्ती शब्दों में सन्धि नहीं होती। वर्णों की अतिशय समीपता को संस्कृत में ‘संहिता‘ कहते हैं।

स्वर से स्वर का, व्यजन से व्यजन का, व्यजन से स्वर का तथा विसर्ग से स्वर या व्यंजन का जब परस्पर संयोग होता है, तब वर्णों के मिलने से उनमें जो परिवर्तन होता है उसे सन्धि कहते हैं।

इससे स्पष्ट होता है कि वर्णों के मेल के आधार पर सन्धियाँ निम्नलिखित तीन प्रकार की होती हैं-

1. स्वर-सन्धिदेव+आलय: = देवालय:रमा+ईश: = रमेश:

2. व्यंजन-सन्धि सत्+आचार: = सदाचार: सत्+जन: = सज्जन:

3. विसर्ग-सन्धिनम:+करोति = नमस्करोतिमन:+रथ: = मनोरथ:

शब्दों के रूप

अकारान्त पुंल्लिङ्ग

बालक=लड़का

विभक्तिएकवचनद्विवचनबहुवचनकारकचिह्न

प्रथमा बालक:बालकौबालका:कर्ताने

द्वितीया बालकम्बालकौबालकान्कर्मको

तृतीया बालकेनबालकाभ्याम्बालकै:करणसे, द्वारा

चतुर्थी बालकायबालकाभ्याम्बालकेभ्य:सम्प्रदानके लिए

प´चमी बालकात्बालकाभ्याम्बालकेभ्य:अपादान से(अलग होने में)

शश्ठी बालकस्यबालकयो:बालकानाम्सम्बन्ध का,की,के,रा,री,रे

सप्तमी बालकेबालकयो:बालकेषुअधिकरणमें, पै, पर

सम्बोधनहे बालक!हे बालकौ!हे बालका:!सम्बोधनहे, भो, अरे

इसी प्रकार अन्य अकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्दांे के रूप भी चलते हैं, जैसे- छात्र, राम, वृक्ष, सूर्य, चन्द्र, नट,पुत्र, सुर, देव, रथ, सुत, जन, दन्त, लोक, ईश्वर आदि।

अकारान्त नपुंसक-लिङ्ग

फल

विभक्तिएकवचनद्विवचनबहुवचन

प्रथमा फलम्फले   फलानि

द्वितीया फलम्फले   फलानि

तृतीया फलेन फलाभ्याम् फलै:

चतुर्थी फलायफलाभ्याम् फलेभ्य:

प´चमी फलात्फलाभ्याम् फलेभ्य:

शश्ठी फलस्यफलयो: फलानाम्

सप्तमी फले   फलयो: फलेषु

सम्बोधन हे फल!हे फले! हे फलानि!

इसी प्रकार अन्य अकारान्त नपुंसक-लिङ्ग शब्दों के रूप भी बनाये जाते हैं, जैसे- मित्र, कानन, धन, मूल (जड़), अपत्य(सन्तान), वन, अरण्य(जंगल), मुख, कमल, कुसुम, पुश्प, पर्ण(पत्ता), नक्ष=,पत्र(कागज या पत्ता), बीज, जल, तृण(घास), गगन, शरीर, पुस्तक, ज्ञान, सुख, दु:ख, पाप, पुण्य, रक्त(खून), स्वर्ण(सोना), रजत(चाँदी), हिम(बरफ या पाला) आदि।

आकारान्त स्त्रीलिङ्गशब्द

लता

विभक्तिएकवचनद्विवचनबहुवचन

प्रथमा लता लते लता:

द्वितीया लताम्लते लता:

तृतीया लतयालताभ्याम्लताभि:

चतुर्थी लतायैलताभ्याम्लताभ्य:

प´चमी लताया:लताभ्याम्लताभ्य:

शश्ठी लताया:लतयो:लतानाम्सप्तमी लतायाम्लतयो:लतासु

सम्बोधनहे लते!हे लते!हे लता:!

इसी प्रकार गङ्गा, विद्या, रमा (लक्ष्मी), बाला, बालिका(लड़की), निशा (रात), कन्या, ललना (स्त्री), भार्या स्त्री), वडवा (घोड़ी), शिखा, जटा, रेखा, प्रभा, शोभा, राधा, सुमित्रा, तारा, कौशल्या, कला आदि- आकारान्त स्त्रीलिङ्गशब्दों के रूप बनते हैं।

सर्वनाम शब्द

अस्मद् (मैं)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम् , मा	आवाम्, नौ	अस्मान्, नः
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम्, मे	आवाभ्याम्, नौ	अस्मभ्यम्, नः
प´चमी	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
शश्ठी	मम, मे	आवयोः, नौ	अस्माकम्, नः
सप्तमी	मयि	आवयोः	अस्मासु

युश्मद् (तुम)

विभक्तिएकवचन द्विवचन बहुवचन

प्रथमात्वम् युवाम् यूयम्

द्वितीयात्वाम्, त्वा युवाम्, वाम् युश्मान्, वः

तृतीया त्वया युवाभ्याम् युश्माभिः

चतुर्थी तुभ्यम्, ते युवाभ्याम्,वाम् युश्मभ्यम्, वः

प´चमी त्वत् युवाभ्याम् युस्मत्

शश्ठी तव, ते युवयोः, वाम् युश्माकम्, वः

सप्तमी त्वयि युवयोः युश्मासु

तद् (वह) (पुंल्लिङ्ग)

विभक्तिएकवचन द्विवचन बहुवचन

प्रथमा सः तौ ते

द्वितीयातम् तौ तान्

तृतीया तेन ताभ्याम् तैः

चतुर्थी तस्मै ताभ्याम् तेभ्यः

प´चमी तस्मात् ताभ्याम् तेभ्य:

शश्ठी तस्य   तयो: तेषाम्

सप्तमी तस्मिन् तयो: तेषु

तद् (स्त्रीलिङ्ग)

विभक्तिएकवचन द्विवचन बहुवचन

प्रथमा सा   ते   ता:

द्वितीया ताम्   ते   ता:

तृतीया तया   ताभ्याम् ताभि:

चतुर्थी तस्यै   ताभ्याम् ताभ्य:

प´चमी तस्या: ताभ्याम् ताभ्य:

शश्ठी तस्या: तयो: तासाम्

सप्तमी तस्याम् तयो: तासु

तद् (नपुंसकलिङ्ग)

विभक्तिएकवचन द्विवचन बहुवचन

प्रथमा तत्   ते   तानि

द्वितीया तत्   ते   तानि

तृतीया तेन   ताभ्याम्   तै:

चतुर्थी तस्मै   ताभ्याम्   तेभ्य:

प´चमी तस्मात् ताभ्याम्   तेभ्य:

शश्ठी तस्य   तयो:   तेशाम्

सप्तमी तस्मिन् तयो:   तेषु

विशेश:- सर्वनाम शब्दों में सम्बोधन नहीं होता है।

धातुरूप

भू धातु (होना)

लट्लकार (वर्तमानकाल)

पुरुष   एकवचनद्विवचनबहुवचन

प्रथमपुरुष भवतिभवत:भवन्ति

मध्यमपुरुष भवसिभवथ:भवथ

उत्तमपुरुष भवामिभवाव:भवाम:

लोट्लकार (आज्ञा/प्रार्थना)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	भवतु, भवतात	भवताम्	भवन्तु
मध्यमपुरुष	भव, भवतात्	भवतम्	भवत
उत्तमपुरुष	भवानि	भवाव	भवाम

लङ्लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	अभवत्	अभवताम्	अभवन्
मध्यमपुरुष	अभव:	अभवतम्	अभवत
उत्तमपुरुष	अभवम्	अभवाव	अभवाम

विधिलिङ्लकार (विधि/सम्भावना)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन

प्रथमपुरुष   भवेत्   भवेताम्   भवेयु:

मध्यमपुरुष   भवे:   भवेतम्   भवेत

उत्तमपुरुष   भवेयम्   भवेव   भवेम

लृट्लकार (भविष्यत्काल)

पुरुष   एकवचन द्विवचन   बहुवचन

प्रथमपुरुष   भविष्यतिभविष्यत: भविष्यन्ति

मध्यमपुरुष   भविष्यसिभविष्यथ: भविष्यथ

उत्तमपुरुष   भविष्यामिभविष्याव: भविष्याम:

पठ् धातु (पढ़ना)

लट्लकार (वर्तमानकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	पठति	पठत:	पठन्ति
मध्यमपुरुष	पठसि	पठथ:	पठथ
उत्तमपुरुष	पठामि	पठाव:	पठाम:

लोट्लकार (आज्ञा/प्रार्थना)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	पठतु, पठतात्	पठताम्	पठन्तु
मध्यमपुरुष	पठ, पठतात्	पठतम्	पठत
उत्तमपुरुष	पठानि	पठाव	पठाम

लङ्लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
मध्यमपुरुष	अपठ:	अपठतम्	अपठत
उत्तमपुरुष	अपठम्	अपठाव	अपठाम

विधिलिङ्लकार (विधि/सम्भावना)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	पठेत्	पठेताम्	पठेयु:

मध्यमपुरुष   पठे:   पठेतम् पठेत

उत्तमपुरुष   पठेयम्   पठेव   पठेम

लृट्लकार (भविष्यत्काल)

पुरुष   एकवचनद्विवचन   बहुवचन

प्रथमपुरुष   पठिष्यतिपठिष्यत: पठिष्यन्ति

मध्यमपुरुष   पठिष्यसिपठिष्यथ: पठिष्यथ

उत्तमपुरुष   पठिष्यामिपठिष्याव: पठिष्याम:

गम् (गच्छ) जाना

लट् (वर्तमान)

पुरुष   एकवचन   द्विवचनबहुवचन

प्रथमपुरुष   गच्छति   गच्छत:गच्छन्ति

मध्यमपुरुष   गच्छसि   गच्छथ:गच्छथ

उत्तमपुरुष   गच्छामि   गच्छाव:गच्छाम:

लोट्लकार (आज्ञा/प्रार्थना)

पुरुष   एकवचन   द्विवचन बहुवचन

प्रथमपुरुष   गच्छतु, गच्छतात्गच्छताम् गच्छन्तु

मध्यमपुरुष गच्छ, गच्छतात्गच्छतम् गच्छत

उत्तमपुरुष गच्छानि गच्छाव गच्छाम

लङ्लकार (भूतकाल)

पुरुष एकवचन द्विवचन बहुवचन

प्रथमपुरुष अगच्छत् अगच्छताम्अगच्छन्

मध्यमपुरुष अगच्छ: अगच्छतम्अगच्छत

उत्तमपुरुष अगच्छम् अगच्छावअगच्छाम

विधिलिङ्लकार (विधि/सम्भावना)

पुरुष एकवचनद्विवचन बहुवचन

प्रथमपुरुष गच्छेत् गच्छेताम् गच्छेयु:

मध्यमपुरुष गच्छे: गच्छेतम् गच्छेत

उत्तमपुरुष गच्छेयम् गच्छेव गच्छेम

लृट्लकार (भविष्यत्काल)

पुरुष एकवचनद्विवचन बहुवचन

प्रथमपुरुष गमिष्यतिगमिष्यत: गमिष्यन्ति

मध्यमपुरुष गमिष्यसिगमिष्यथ: गमिष्यथ

उत्तमपुरुष गमिष्यामिगमिष्याव: गमिष्याम:

अस् (होना)

लट्लकार (वर्तमानकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	अस्ति	स्त:	सन्ति
मध्यमपुरुष	असि	स्थ:	स्थ
उत्तमपुरुष	अस्मि	स्व:	स्म:

लोट्लकार (आज्ञा/प्रार्थना)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	अस्तु/स्तात्	स्ताम्	सन्तु
मध्यमपुरुष	एधि/स्तात्	स्तम्	स्त
उत्तमपुरुष	असानि	असाव	असाम

लङ्लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	आसीत्	आस्ताम्	आसन्
मध्यमपुरुष	आसी:	आस्तम्	आस्त
उत्तमपुरुष	आसम्	आस्व	आस्म

विधिलिङ्लकार (विधि/सम्भावना)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	स्यात्	स्याताम्	स्यु:
मध्यमपुरुष	स्या:	स्यातम्	स्यात
उत्तमपुरुष	स्याम्	स्याव	स्याम

लृट्लकार (भविष्यत्काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	भविष्यति	भविष्यत:	भविष्यन्ति
मध्यमपुरुष	भविष्यसि	भविष्यथ:	भविष्यथ
उत्तमपुरुष	भविष्यामि	भविष्याव:	भविष्याम:

Table of Contents

मंजरी- 6
1. चिर महान
2. छोटा जादूगर
3. आप भले तो जग भला
4. नीति के दोहे और भक्ति के पद
5. मेरी माँ
6. क्यों-क्यों लड़की
7. माँ कह एक कहानी
8. हार की जीत
9. हिन्द महासागर में छोटा-सा हिन्दुस्तान
10. ईदगाह
11. समर्पण
12. साप्ताहिक धमाका
13. अमर शहीद भगत सिंह के पत्र
14. लोकगीत
15. खग, उड़ते रहना
16. कौन बनेगा निंगथऊ (राजा)
17. बादल चले गये वे
18. बहादुर बेटा
19. प्राणी वही प्राणी है
20. छिपा रहस्य
अनिवार्य-संस्कृत
वन्दना
1. क्रीडा-महोत्सव:
2. पत्र-नौका
3. मूर्खसेवक:
4. वर्षर्तु: (वर्षा+ऋतु:)
5. नीतिश्लोका:
6. अस्माकं दिनचर्या
वर्ण-परिचय
सन्धि-विचार

[शब्दों के रूप]
[धातुरूप]